A Daily News Magazine
इंदौर
सोमवार, 18 मई, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 225, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

बीजेपी की जीत के बाद बंगाली फिल्मोद्योग भी रंग बदल रहा

दीप हलदर

पश्चिम बंगाल में बीजेपी की बड़ी जीत के बाद बंगालियों के बदलते चेहरे पर सबसे तीखी टिप्पणी एक लाइव शो में देखने को मिली, जहां स्टैंड-अप कॉमेडियन नसीफ़ अख्तर ने अपने दर्शकों को टोका। दर्शक उनके 'जय श्री राम' के नारे को बड़े उत्साह से दोहरा रहे थे। इस पर उन्होंने याद दिलाया कि 2026 विधानसभा चुनाव के नतीजों से ठीक पहले तक यही लोग टीएमसी के समर्थक थे। उनका वायरल क्लिप उन लोगों के मूड को दिखाता है जो अब अपना राजनीतिक रंग बदलने की कोशिश कर रहे हैं, खासकर टॉलीवुड यानी बंगाली फिल्म इंडस्ट्री में।

4 मई तक ममता बनर्जी की अगुवाई वाली टीएमसी के साथ खड़े रहने वाले ज्यादातर बंगाली फिल्म कलाकार अब खुलकर पार्टी से दूरी बना रहे हैं। राज्य में बीजेपी के बड़े और कुछ हद तक अप्रत्याशित चुनावी नतीजों के बाद वे खुद को नए माहौल के हिसाब से ढाल रहे हैं। इंडस्ट्री में बीजेपी की लहर के बीच अब 'हिंदू थीम' वाली नई फिल्मों की स्क्रिप्ट पर तेजी से चर्चा हो रही है। वहीं अब तक टीएमसी के मजबूत नियंत्रण में रहने वाले टॉलीवुड यूनियन भी तेजी से टूट रहे हैं, जिससे स्क्रिप्टिंग और प्रोडक्शन में नए समीकरण बन रहे हैं।

2021 विधानसभा चुनाव से पहले कुछ राजनीतिक और नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं ने 'नो वोट टू बीजेपी' नाम का एक मंच बनाया था। इस मंच ने बंगाल के लोगों से अपील की थी कि वे मोदी के नेतृत्व वाली बीजेपी से दूर रहें। इस अभियान के तहत कलाकारों के एक समूह ने 'आमी ओन्नो कोथाओ जाबोना, आमी एई देशेतेई थाकबो' नाम का एक म्यूजिक वीडियो जारी किया था। इसका मतलब था, 'मैं कहीं नहीं जाऊंगा, मैं इसी देश में रहूंगा।' यह उन लोगों को जवाब था जो बीजेपी की राजनीति का विरोध करने वालों से अक्सर कहते थे, 'पाकिस्तान चले जाओ।' इस अभियान में टॉलीवुड के कई बड़े नाम शामिल थे, जैसे ऋद्धि सेन, अनिर्बान भट्टाचार्य, अनुपम रॉय और परमब्रत चट्टोपाध्याय।

इस साल भी विधानसभा चुनाव से पहले टॉलीवुड का एक हिस्सा बीजेपी के खिलाफ खुलकर बोल रहा था। 2021 की तरह इस बार भी परमब्रत चट्टोपाध्याय ने बीजेपी का विरोध किया, लेकिन इस बार वह एक कदम आगे बढ़कर टीएमसी के लिए प्रचार करने लगे। लेकिन 4 मई को बीजेपी की बड़ी जीत के बाद परमब्रत चट्टोपाध्याय का सुर बदला हुआ दिखा। उन्होंने कहा कि अगर नई सरकार राज्य में कारोबार और उद्योग के विकास के लिए काम करे, खासकर टॉलीवुड के हित में काम करे, तो उन्हें सबसे ज्यादा खुशी होगी। हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि सरकार को राजनीतिक विचारों में मतभेद को भी जगह देनी चाहिए।

लेखक और कलकत्ता हाई कोर्ट के वरिष्ठ वकील जॉयदीप सेन ने कहा कि चट्टोपाध्याय का रवैया ज्यादा से ज्यादा पाखंड और कम से कम 'साफ झूठ' जैसा है। 2021 में चुनाव बाद हुई हिंसा के दौरान जब बीजेपी कार्यकर्ताओं के साथ बलात्कार और हत्याएं हो रही थीं, तब इसने एक शब्द नहीं कहा।'

परमब्रत चट्टोपाध्याय अकेले ऐसे अभिनेता नहीं हैं जो टीएमसी से दूरी बना रहे हैं। टीएमसी के पूर्व विधायक और टॉलीवुड के बड़े निर्देशकों में से एक राज चक्रवर्ती ने एक्स पर ऐलान किया कि वह राजनीति छोड़ रहे हैं।

पश्चिम बंगाल में बीजेपी की बड़ी जीत पर बधाई देते हुए बंगाली सुपरस्टार और घाटाल सीट से मौजूदा टीएमसी सांसद देव अधिकारी ने नई सरकार से अपील की कि वह बंगाली फिल्म इंडस्ट्री में एकता और रचनात्मक आजादी की भावना को बनाए रखे और 'सांस्कृतिक बैन' की राजनीति खत्म करे।

दिलचस्प बात यह है कि इन्हीं बैन और बंटवारे के लिए सबसे ज्यादा आरोप देव अधिकारी की पार्टी के नेताओं पर लगते रहे हैं।

बीजेपी की जीत के बाद आने वाले दिनों में सबसे बड़ा बदलाव शायद 'फेडरेशन ऑफ सिने टेक्नीशियंस एंड वर्कर्स ऑफ ईस्टर्न 'इंडिया' के कामकाज में देखने को मिलेगा। फिलहाल इसका संचालन टीएमसी नेता स्वरूप बिस्वास कर रहे हैं।

टॉलीवुड और बॉलीवुड दोनों में काम करने वाले एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता बंगाली फिल्म निर्देशक ने नाम न बताने की शर्त पर कहा कि बिस्वास बंगाली फिल्म इंडस्ट्री में एक 'सिंडिकेट' चला रहे हैं। बिस्वास और उनका करीबी समूह टेक्नीशियनों, शूटिंग के समय, शूटिंग यूनिट के कामकाज और यहां तक कि कलाकारों और निर्देशकों पर 'बैन' लगाने तक को कंट्रोल करता है, अगर वे उनकी बात न मानें।

सीनियर एंटरटेनमेंट पत्रकार भास्वती घोष ने कहा, 'अब जब बीजेपी सत्ता में आ गई है, तो फेडरेशन में बड़े बदलाव हो सकते हैं, जिनमें नए अध्यक्ष की मांग भी शामिल है। मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी पहले ही अभिनेता और बीजेपी नेताओं रुद्रनील घोष, पापिया अधिकारी, रूपा गांगुली और हिरण चटर्जी को टॉलीवुड की कार्य संस्कृति बदलने के तरीकों पर चर्चा के लिए बुला चुके हैं।' टॉलीवुड में सिर्फ काम करने के तरीके और बैन की संस्कृति ही नहीं बदलने वाली, बल्कि उस तरह का सिनेमा भी बदल सकता है, जिसके लिए इंडस्ट्री जानी जाती रही है। फिल्ममेकर विवेक अग्निहोत्री की फिल्म 'द बंगाल फाइल्स' को राज्य में रिलीज की मंजूरी मिल गई। अग्निहोत्री ने कहा, 'हमारे ट्रेलर लॉन्च को रोक दिया गया था। हमारे साथ मारपीट की गई। मेरे खिलाफ दर्जनों एफआईआर दर्ज की गईं। बंगाल में मुझे पूरी तरह अलग कर दिया गया। मैं राज्यपाल से अपना पुरस्कार लेने भी नहीं जा सका। लेकिन हमने हार नहीं मानी। चुनाव के दौरान हमने कोशिश की कि यह फिल्म किसी तरह बंगाल में ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचे। '

बीजेपी की जीत के बाद अब टॉलीवुड के कई फिल्ममेकर भी 'हिंदू मुद्दों' पर आधारित स्क्रिप्ट की तलाश में जुट गए हैं, जो हिंदू दक्षिणपंथी सोच से मेल खाती हों, खासकर वे जिनकी जड़ें बंगाल के इतिहास में हों। 2025 में रिलीज हुई बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित पीरियड एक्शन-एडवेंचर बंगाली फिल्म देवी चौधरानी के निर्देशक शुभ्रजीत मित्रा का कहना है कि टॉलीवुड में जो हो रहा है, वह 'शर्मनाक बौद्धिक गुलामी' है। मित्रा ने कहा कि टॉलीवुड परंपरागत रूप से उनके जैसे प्रोजेक्ट का मजाक उड़ाता रहा है। जब मैंने अत्याचार के खिलाफ संन्यासी विद्रोह के ऐतिहासिक संघर्ष पर फिल्म बनाने का फैसला किया था, तब ऐसा नहीं था कि राजनीतिक माहौल हमारे पक्ष में था। बल्कि स्थिति बिल्कुल उलटी थी। और आज जो फिल्ममेकर हिंदुत्व की सोच के मुताबिक फिल्में बनाने की कोशिश कर रहे हैं, वही लोग पहले देवी चौधरानी जैसे विषयों को पुराना, व्यावसायिक रूप से जोखिम भरा और राजनीतिक रूप से असुविधाजनक बताते थे। दर्शक स्क्रीन पर उनके झूठ को समझ जाएंगे। '

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

20 हजार टन एलपीजी लेकर गुजरात पहुंचा 'सिमी'

13 मई को पार किया था होर्मुज,अब तक 15 पहुंचे

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया में चल रहे तनाव के बीच 20 हजार टन एलपीजी लेकर सिमी कैरियर कांडला के दीनदयाल पोर्ट पर सुरक्षित रूप से पहुंच गया है। इस जहाज ने 13 मई को होर्मुज स्ट्रेट को पार किया था। इस जहाज पर 21 क्रू सदस्य सवार हैं, जिनमें आठ यूक्रेनी और 13 फिलिपीनी हैं। मौजूदा निगरानी वाले ऑपरेशन्स में होर्मुज स्ट्रेट को पार करने वाला सिमी 11वां एलपीजी टैंकर था। अधिकारियों के मुताबिक, डीजी शिपिंग और विदेश मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय और पेट्रोलियम- प्राकृतिक गैस मंत्रालय के बीच करीबी तालमेल से इतनी सुरक्षा मुमकिन हो पाई। ये जहाज ऐसे समय में आया है जब पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष के कारण वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति पर दबाव बना हुआ है। पिछले कुछ महीनों में भारत का कच्चा तेल भंडार तेजी से घटा है। भंडार में लगभग 15 फीसदी की गिरावट आई है। कमोडिटी एनालिटिक्स फर्म के आंकड़ों के अनुसार, भारत का कुल कच्चा तेल भंडार फरवरी के अंत में दर्ज 107 मिलियन बैरल से घटकर 91 मिलियन बैरल रह गया है।

यह वही समय था जब संघर्ष शुरू हुआ था। इस भंडार में पेट्रोलियम भंडार, रिफाइनरी होल्डिंग्स और वाणिज्यिक भंडारण शामिल हैं, लेकिन पाइपलाइन स्टॉक शामिल नहीं हैं।

देश में अब डर और धमकी की हो रही है राजनीति

- मौलाना अरशद मदनी बोले- मुसलमान झुकेगा नहीं
- वंदे मातरम् के खिलाफ कोर्ट जाने का किया ऐलान

सहारनपुर (एजेंसी)। जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी ने दावा किया है कि देश में इस्लाम को निशाना बनाया जा रहा है। डराया-धमकाया जा रहा है। उन्होंने कहा- केवल मुसलमान ही नहीं इस्लाम भी निशाने पर है। देश में अब नफरत की राजनीति की जगह डर और धमकी की राजनीति ने ले ली है। मुसलमानों को यह एहसास दिलाने की कोशिश की जा रही है कि उन्हें अब शर्तों के साथ जीवन बिताना होगा। वर्तमान सरकार इस्लाम को नुकसान पहुंचाना

चाहती है। दरअसल, मदनी दिल्ली में जमीयत के कार्यसमिति के दो दिवसीय अधिवेशन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने ऐलान किया कि मदरसों की समस्याओं के समाधान के लिए केंद्रीय और प्रांतीय मदरसा बोर्ड बनाएंगे।

वंदे मातरम् को जन गण मन का दर्जा देने के खिलाफ कोर्ट जाएंगे

मौलाना अरशद मदनी ने कहा- वंदे मातरम को राष्ट्रगान जन गण मन के समान दर्जा देने, सरकारी और शैक्षणिक संस्थानों में अनिवार्य किए जाना संविधान की मूल भावना और धार्मिक स्वतंत्रता के खिलाफ है। अगर सरकार यह निर्णय वापस नहीं लेती तो जमीयत अदालत का दरवाजा खटखटाएगी। साथ ही समान नागरिक संहिता (यूसीसी) के खिलाफ भी कानूनी लड़ाई जारी रखने की बात कही।

मौलाना मदनी ने कहा- पश्चिम बंगाल और असम में खुलेआम चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन हुआ। मुसलमानों को सार्वजनिक रूप से धमकियां दी गईं। चुनाव जीतने के बाद भी यह सिलसिला जारी है।

शरद की सुबह

मुझे उदास कर गए हो ख़ुश रहो
मिरे मिज़ाज पर गए हो ख़ुश रहो

मिरे लिए न रुक सके तो क्या हुआ
जहाँ कहीं ठहर गए हो ख़ुश रहो

ख़ुशी हुई है आज तुमको देखकर
बहुत निखर-सँवर गए हो ख़ुश रहो

उदास हो किसी की बेवफ़ाई पर
वफ़ा कहीं तो कर गए हो ख़ुश रहो

गली में और लोग भी थे आश्ना
हमें सलाम कर गए हो ख़ुश रहो

तुम्हें तो मेरी दोस्ती पे नाज़ था
इसी से अब मुकर गए हो ख़ुश रहो

किसी की ज़िंदगी बनो कि बंदगी
मिरे लिए तो मर गए हो ख़ुश रहो।

– फाजील जमीली

गांव हो या शहर, गर्मी से हर ओर बुरा है हाल | आसमान से बरस रही 'आग'

आठ राज्यों में पारा 40 डिग्री पार, दिन में निकलना हुआ मुश्किल

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम में राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र-विदर्भ से लेकर मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश समेत 8 राज्य भीषण गर्मी की चपेट में हैं। इन इलाकों में पारा लगातार 40 डिग्री से ऊपर चल रहा है। दिन के साथ रातें भी गर्म हो रही हैं। शनिवार को महाराष्ट्र के अमरावती और वर्धा देश के सबसे गर्म शहर रहे। दोनों शहरों का तापमान 46 डिग्री रिकॉर्ड हुआ। यूपी के बांदा, मध्य प्रदेश का नौगांव और खंडवा में भी पारा 44से ज्यादा रहा। इधर, गुजरात के एकता नगर में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के पास बनी जंगल सफारी में जानवरों और पक्षियों के लिए एसी, कूलर लगाए गए हैं।

- **महाराष्ट्र का अमरावती-वर्धा देश में सबसे गर्म तापमान 46 डिग्री**

राजस्थान के 8 जिलों में हीटवेव की चेतावनी

प्रदेश के बीकानेर, चूरू, बाड़मेर, जैसलमेर में अधिकतम तापमान 40 से 43 डिग्री के बीच दर्ज हुआ। सीकर, हनुमानगढ़, जालोर, सिरोही में तापमान 40 से नीचे रहा। मौसम विभाग ने राज्य में अगले हफ्ते से गर्मी तेज हो सकती है।

छत्तीसगढ़ में 3 दिन आंधी-बारिश का अलर्ट

पिछले 24 घंटों में उत्तर और मध्य छत्तीसगढ़ के कई इलाकों में तेज आंधी, गरज-चमक और हल्की से मध्यम बारिश हुई। शनिवार रात रायपुर में ओले भी गिरे। अगले 3 दिनों तक प्रदेश में तेज हवा के साथ बारिश की संभावना है। इस दौरान हवा की रफ्तार 40 से 50 किमी प्रति घंटा तक पहुंच सकती है। हिमाचल प्रदेश में आज से गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। राज्य में 21 मई तक मौसम साफ रहने का पूर्वानुमान है। इससे तापमान में चार से पांच डिग्री का उछाल आएगा। इस बार मई माह में सामान्य से ज्यादा बारिश-ओलावृष्टि के कारण अधिकांश शहरों का पारा सामान्य से नीचे गिरा रहा। बीते 24 घंटे के दौरान भी ज्यादातर शहरों का पारा सामान्य से नीचे दर्ज किया गया।

देश के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने प्रदेश की पहल को सराहा

प्रदेश में पेपर लैस कार्य संस्कृति को किया जा रहा प्रोत्साहित : मुख्यमंत्री

भोपाल । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर प्रदेश में पेपरलेस कार्य संस्कृति को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। नागरिकों को एमपी ई-सेवा पोर्टल एवं मोबाइल ऐप पर सरकार के 56 विभागों की 1700 सेवाएं एक ही पोर्टल पर उपलब्ध हैं। प्रदेश में साइबर तहसीलों की स्थापना हो चुकी है। इस नवाचार को प्रधानमंत्री पुरस्कार भी मिल चुका है। भोपाल में देश के पहले साइबर पंजीयन कार्यालय की शुरुआत की गई है। प्रदेश में ई-जीरो एफआईआर का भी शुभारंभ किया गया है। मंत्रि-परिषद की कार्यवाही पूर्णतः पेपरलैस हो चुकी है, जिससे न केवल समय की बचत हुई है, बल्कि प्रशासनिक पारदर्शिता भी बढ़ी है। प्रदेश में सुशासन के साथ ग्रीन गवर्नेंस को भी बढ़ावा मिल रहा है। इन नवाचारों से प्रदेश में जनकल्याणकारी योजनाओं और जन सामान्य से जुड़ी सेवाओं तक आम आदमी की पहुंच को आसान और उनके उपयोग को सरल व सुगम बनाया जा रहा है।

सर्वोच्च अदालत के मुख्य न्यायाधीश-न्यायमूर्ति श्री सूर्यकांत ने जबलपुर के एक कार्यक्रम में प्रदेश में पेपर लैस कार्य प्रणाली को प्रोत्साहित करने के लिए संचालित गतिविधियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश, पूर्णतः पेपरलैस बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। इससे पर्यावरण को भी संबल मिलेगा।

गुड गवर्नेंस के नए आयाम होंगे स्थापित- प्रधानमंत्री मोदी के सुशासन के मंत्र को आत्मसात करते हुए मिनिमम गवर्नमेंट- मैग्सिमम गवर्नेंस के मूल मंत्र के साथ मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश में गुड गवर्नेंस के नए आयाम स्थापित करने की दिशा में सक्रिय हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से कार्यालयों में फाइलों की मॉनिटरिंग, समयबद्ध निराकरण और उत्तरदायित्व सुनिश्चित हुआ है। इससे भ्रष्टाचार में कमी, पारदर्शिता में वृद्धि तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं में गति आई है। लोक सेवा केंद्रों के माध्यम से नागरिकों को समयबद्ध सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। सीएम हेल्पलाइन नागरिकों की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित कर रही है। संपदा 2.0 सॉफ्टवेयर सिस्टम के माध्यम से प्रदेश में रजिस्ट्री की सुविधा अब लोगों के लिए आसान हुई है।

मध्यप्रदेश के आमों की मिठास और विशालकाय 'नूरजहाँ' की विश्व पहचान

भोपाल (नप्र)। भारत को आमों का देश कहा जाता है और मध्यप्रदेश इसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाला प्रमुख राज्य बनकर उभरा है। प्रदेश की जलवायु, उपजाऊ मिट्टी और विविध भौगोलिक परिस्थितियां आम उत्पादन के लिए अत्यंत अनुकूल मानी जाती हैं। यही कारण है कि यहां दशहरी, लंगड़ा, चौसा, केसर, आम्रपाली, अल्फांसो और तोतापरी जैसी अनेक प्रसिद्ध किस्मों के साथ-साथ एक ऐसी अनोखी किस्म भी पैदा होती है, जिसने देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी विशेष पहचान बनाई है। यह विशेष किस्म है 'नूरजहाँ ' आम। इसे 'किंग ऑफ मैंगो' भी कहा जाता है।

मध्यप्रदेश के जनजातीय बहुल आलीराजपुर जिले के कट्ठीवाड़ा क्षेत्र में पैदा होने वाला नूरजहाँ आम अपने विशाल आकार, अद्वितीय स्वाद और आकर्षक स्वरूप के लिए प्रसिद्ध है। इसे दुनिया के सबसे बड़े आमों में गिना जाता है। सामान्यतः एक नूरजहाँ आम का वजन लगभग 2 से 5 किलोग्राम तक होता है। इसका आकार इतना बड़ा होता है कि एक ही आम पूरे परिवार के लिए पर्याप्त माना जाता है। इसका रंग, सुगंध और मिठास लोगों को पहली नजर में आकर्षित कर लेते हैं। बाजार में इसकी मांग विशेष रूप से बड़े शहरों और विदेशों में अधिक है। एक आम की कीमत 1500 से 3000 तक होती है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ सोमवार, 18 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

मोदी कैबिनेट के 'स्कूटर वाले मंत्री' की गजब सादगी

टीकमगढ़ (नप्र)। देश में पेट्रोल-डीजल बचाने की पीएम मोदी की अपील के बाद शनिवार को मोदी कैबिनेट के सबसे सीनियर मंत्रियों में शामिल डॉ. वीरेंद्र कुमार ई-रिक्शा में सफर करते नजर आए। वे ट्रेन से दिल्ली से आए थे और बगैर किसी शोर-शराबे के ई-रिक्शा में बैठकर अपने घर चले गए। उनका सादगी भरा अंदाज देकर लोग चकित रह गए।

टीकमगढ़ की सड़कों पर शाम एक ऐसा दृश्य देखने को मिला जिसने लोगों का दिल छू लिया। लालबत्ती, लंबा काफिला और सुरक्षा घेरे के बीच चलने वाले नेताओं की तस्वीरों के दौर में केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री डॉ वीरेंद्र कुमार एक साधारण ई-रिक्शा में सफर करते नजर आए।

बगैर लाव-लश्कर के चुपचाप रिक्शा में बैठ गए थे- शाम करीब 6~30 बजे जब वे खजुराहो-भोपाल महामना ट्रेन से टीकमगढ़ रेलवे स्टेशन पहुंचे, तो वहां मौजूद लोगों को लगा कि हमेशा की तरह गाड़ियों का काफिला उनका इंतजार कर रहा होगा। लेकिन लोगों की नजरें उस समय ठहर गईं, जब केंद्रीय मंत्री स्टेशन से बाहर निकले और सीधे एक ई-रिक्शा में बैठ गए। बिना किसी दिखावे के, बिना किसी शोर केज्बिल्कुल एक आम आदमी की तरह।

लोगों ने खूब तस्वीरें लीं, अब वायरल हो रहीं- ई-रिक्शा धीरे-धीरे सिविल लाइन रोड की ओर बढ़ रहा था। रास्ते में कई लोग उन्हें देखकर रुक गए। किसी ने मोबाइल निकालकर तस्वीर ली, तो कोई बस उन्हें देखकर मुस्कुरा दिया। शायद इसलिए क्योंकि बड़े पद पर बैठे लोग अक्सर जनता से दूर दिखाई देते हैं, लेकिन उस शाम एक मंत्री आम लोगों के बीच उसी सादगी से सफर कर रहा था जैसे कोई सामान्य यात्री अपने घर लौटता है।

ई-रिक्शा वाले ने जितना मांगा, खुद किराया दिया- सबसे खास बात यह रही कि बंगले पहुंचने के बाद डॉ. वीरेंद्र कुमार ने ई-रिक्शा चालक को खुद किराया दिया। यह छोटा सा दृश्य वहां खड़े लोगों के लिए बहुत बड़ा संदेश बन गया। दरअसल, हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से डीजल और पेट्रोल की खपत कम करने की अपील की थी। उन्होंने जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों से भी अपने काफिले सीमित रखने की बात कही थी। उसी अपील का असर शनिवार को टीकमगढ़ में साफ दिखाई दिया।

बगैर सुरक्षा के सब्जी खरीदते नजर आते हैं

लेकिन यह पहली बार नहीं है जब डॉ वीरेंद्र कुमार अपनी सादगी को लेकर चर्चा में आए हों। इससे पहले भी वे कई बार बिना सुरक्षा घेरे के आम लोगों के बीच दिखाई दिए हैं। कभी विकलांगों वाली ट्राइसाइकिल चलाते हुए, तो कभी सब्जी मंडी में आम नागरिक की तरह सब्जियां खरीदते हुए। यही वजह है कि लोग उन्हें केवल मंत्री नहीं, बल्कि जमीन से जुड़ा जनप्रतिनिधि मानते हैं।

आज जब राजनीति में दिखावा बढ़ता जा रहा है, तब एक केंद्रीय मंत्री का ई-रिक्शा में सफर करना केवल यात्रा नहीं, बल्कि एक संदेश है। संदेश यह कि बड़ा पद इंसान को बड़ा नहीं बनाता, बल्कि उसका व्यवहार उसे लोगों के दिलों तक पहुंचाता है। टीकमगढ़ की उस शाम ने लोगों को यह एहसास कराया कि सादगी आज भी जिंदा हैज्और शायद इसी सादगी में जनता का असली विश्वास बसता है।

संक्षिप्त समाचार

नीदरलैंड से 1000 साल पुराने तमिल दस्तावेज आएंगे भारत

- मोदी की मौजूदगी में समझौता, टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स और चिप बनाने वाली डच कंपनी में भी डील

एम्सटर्डम (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीदरलैंड यात्रा के दौरान 11वीं सदी की ऐतिहासिक चोल ताम्र पट्टिकाओं को भारत लाने पर समझौता हुआ। ये करीब 1000 साल पुराने तमिल दस्तावेज हैं, जिनमें चोल साम्राज्य से जुड़ी ऐतिहासिक जानकारी है। समझौते के तहत 11वीं सदी की चोल ताम्र पट्टिकाएं जल्द भारत लाई जाएंगी। यह 21 बड़ी और 3 छोटी तांबे की प्लेटों

का संग्रह है। इनमें ज्यादातर लेख तमिल भाषा में लिखे गए हैं। मोदी ने कहा कि इन पट्टिकाओं में राजा राजेंद्र चोल प्रथम और उनके पिता राजा राजराजा चोल प्रथम से जुड़ी जानकारी दर्ज है। ताम्र पट्टिकाएं तांबे की बनी प्लेटें होती हैं, जिन पर पुराने समय में अहम बातें लिखी जाती थीं। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, 19वीं सदी में जब यूरोपीय देश भारत और एशिया के दूसरे हिस्सों में व्यापार और रिसर्च कर रहे थे, उसी दौरान ये दस्तावेज विदेश ले जाई गई थीं।

टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स और डच कंपनी के बीच भी समझौता- द हेग में आयोजित एक कार्यक्रम में टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स और डच कंपनी के बीच भी समझौता हुआ। यह करार सेमीकंडक्टर और चिप तकनीक के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए है। यह दुनिया की प्रमुख चिप मशीन बनाने वाली कंपनियों में शामिल है, जबकि टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स भारत में सेमीकंडक्टर क्षेत्र में निवेश बढ़ा रही है।

इबोला को लेकर ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी का ऐलान

- डब्ल्यूएचओ ने कांगो और युगांडा में 88 मौतों के बाद लिया फैसला

किंसासा (एजेंसी)। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अफ्रीका के दो देशों में इबोला महामारी के चलते सैकडों मौतों के बाद ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी घोषित कर दी है। डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो और युगांडा में इबोला महामारी के चलते 88 लोगों की मौत रिपोर्ट की गई है। इसके अलावा 300 से ज्यादा संदिग्ध मामले दर्ज हुए हैं, जिसके बाद दुनिया भर में महामारी के खतरे को लेकर चिंता बढ़ गई है। डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक टेड्रोस अधानम

घेब्रेयसस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में इसे अंतराष्ट्रीय चिंता का सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किए जाने की जानकारी दी है। रविवार को सोशल मीडिया पोस्ट में अधानम ने कहा कि यह प्रकोप महामारी आपातकाल के मानदंडों को पूरा नहीं करता है, लेकिन पड़ोसी देशों में इसके और फैलने का बहुत ज्यादा जोखिम है। हालांकि, संगठन ने देशों को अंतरराष्ट्रीय सीमाएं बंद नहीं करने की सलाह भी दी। स्वास्थ्य अधिकारियों ने पुष्टि की है कि अभी जो महामारी फैल रही है, वह बुंडीबुग्यो वायरस डिसीज की वजह से है।

साधना स्थली है संघ शिक्षा वर्ग : विमल गुप्ता

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मध्यभारत प्रांत के शिक्षा वर्ग प्रारंभ

शिवपुरी में आयोजित संघ शिक्षा वर्ग में 369 कार्यकर्ता, ब्यावरा में 200 कार्यकर्ता और बैतूल में 174 कार्यकर्ता हुए हैं शामिल, 15 दिन चलेगा प्रशिक्षण

भोपाल (नप्र)। 17 मई। संघ शिक्षा वर्ग एक साधना स्थली है, जहाँ शिक्षार्थी साधक के रूप मे नित्य शारीरिक, बौद्धिक एवं व्यवस्थात्मक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। यह सभी प्रशिक्षण मन की साधना से ही संभव है। यह विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मध्यभारत के प्रांत प्रचारक श्री विमल गुप्ता ने शिवपुरी में संघ शिक्षा वर्ग के उद्घाटन प्रसंग पर व्यक्त किए। उल्लेखनीय है कि मध्यभारत प्रांत के विद्यार्थी कार्यकर्ताओं के लिए शिवपुरी में, तरुण व्यवसायी कार्यकर्ताओं के लिए ब्यावरा में और 40 से अधिक आयुवर्ग के कार्यकर्ताओं के लिए बैतूल में संघ शिक्षा वर्गों का आयोजन किया जा रहा है। तीनों ही स्थानों पर संघ शिक्षा वर्ग 16 मई से प्रारंभ हो गए हैं, जिनका औपचारिक उद्घाटन 17 मई को किया गया। संघ शिक्षा वर्ग में शामिल शिक्षार्थियों को शारीरिक, बौद्धिक, योग, सेवा, प्रबंधन और संघ कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त होगा। संघ का कार्य व्यक्ति निर्माण का कार्य है। 15 दिन के इस वर्ग में युवा कठोर अनुशासित दिनचर्या का पालन करते हुए अपने व्यक्तित्व को मजबूत करेंगे।

शिवपुरी के सरस्वती विद्यापीठ आवासीय विद्यालय फतेहपुर में चल रहे संघ शिक्षा वर्ग (विद्यार्थी) के शिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए प्रांत प्रचारक श्री विमल गुप्ता ने कहा कि संघ शताब्दी वर्ष मे कार्यविस्तार एवं कार्य के दृढ़ीकरण हेतु प्रशिक्षण प्राप्त करना सौभाग्य का विषय है। उन्होंने वर्ग के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस वर्ग में प्रशिक्षण प्राप्त करने से समूह में काम करने का स्वभाव बनता है। संघ के वैचारिक अधिष्ठान की स्पष्टता होती है। इसके साथ ही, समय प्रबंधन, आत्मविश्वास, संवेदना, स्वावलंबन और अनुशासन जैसे गुणों का विकास होता है। उन्होंने कहा कि वर्ग में 24 घंटे की व्यस्ततम दिनचर्या में स्वयं को व्यस्त रखते हुए सीखने के मानस से शिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करता है। उन्होंने कहा कि संघ शिक्षा वर्ग मे शिक्षार्थी विभिन्न प्रकार के प्रबंधन भी सीखता है, जैसे - समय प्रबंधन, मानव प्रबंधन, वित्तीय प्रबंधन, संसाधन प्रबंधन, आपदा प्रबंधन और कार्यक्रम प्रबंधन आदि।

ब्यावरा में व्यवसायी कार्यकर्ताओं के संघ शिक्षा वर्ग के उद्घाटन सत्र में प्रांत के सह-संघचालक डॉ. राजेश सेठी ने कहा कि कहा कि प्रत्येक स्वयंसेवक किसी न किसी उद्देश्य को लेकर यहां आते हैं। वास्तव में संघ शिक्षा वर्ग व्यक्ति के कौशल विकास, व्यक्तित्व निर्माण और वैचारिक स्पष्टता का केंद्र है। उन्होंने कहा कि अच्छे कार्यकर्ता बनने के लिए केवल शारीरिक क्षमता पर्याप्त नहीं, बल्कि बौद्धिक और भावनात्मक विकास भी आवश्यक है। यही कारण है कि संघ शिक्षा वर्ग में तीनों आयामों पर समान रूप से काम किया जाता है। डॉ. सेठी ने कहा कि 'राष्ट्र प्रथम' केवल नारा नहीं, बल्कि जीवन का मूल भाव होना चाहिए।

चुनाव खत्म मोदी की वसूली चालू

- सीएनजी के दाम फिर बढ़ने पर कांग्रेस का पीएम पर अटैक

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली-एनसीआर में दो दिन बाद एक बार फिर से सीएनजी के दाम बढ़ा दिए गए हैं। दो दिन पहले (15 मई) जहां सीएनजी पर 2 रुपये बढ़ाए गए थे तो वहीं आज 1 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। इस

बीच कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर चुनाव खत्म होते ही महंगाई बढ़ाने का आरोप लगाया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट शेयर करते हुए कांग्रेस ने आरोप लगाया कि पीएम मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने चुनावों के तुरंत बाद, बार-बार ईंधन की कीमतें बढ़ाकर उपभोक्ताओं पर बोझ डाल दिया है। सीएनजी की कीमतों में लगातार हो रही बढ़ोतरी पर जोर देते हुए कांग्रेस ने बताया कि 15 मई को कीमतें 2 रुपये प्रति किलो बढ़ाई गईं।

बड़ी सफलता

सी-295 एयरबस अब परीक्षण के लिए तैयार

- पहला 'मेड इन इंडिया' एयरबस अब जल्द भरेगा उड़ान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने रक्षा विमानन विनिर्माण में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। पहला स्वदेशी रूप से असेंबल किया गया एयरबस सी-295 विमान वडोदरा स्थित टाटा-एयरबस संयंत्र में बनकर तैयार हो गया है और अब यह उड़ान परीक्षण के लिए तैयार है। यह डेवलपमेंट मेक इन इंडिया पहल के तहत स्वदेशी सैन्य विमान क्षमता विकसित करने के देश के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण कदम है। वहीं, भारतीय वायु सेना के उप प्रमुख एयर मार्शल अवधेश कुमार भारती ने हाल ही में वडोदरा संयंत्र में अंतिम असेंबली लाइन का दौरा किया ताकि भारत में निर्मित पहले सी-295 विमान की प्रगति का जायजा लिया जा सके। भारत ने स्पेन के साथ समझौता किया है।

सी-295 एयरबस की खासियत

एयरबस सी-295 भारतीय वायु सेना के पुराने एवरो-748 विमानों के बेड़े की जगह लेगा। इस एयरबस का उपयोग आपदा राहत, पैराशूट जंपिंग, समुद्री निगरानी, रसद और हथियार पहुंचाने के लिए भी किया जाता है। शानदार पेलोड के साथ यह विमान एक बार में 9,000 किलोग्राम तक का वजन ले जाने में पूरी तरह सक्षम है। इस एयरबस में एक साथ 70 सैनिक या 48 पैराट्रूपर्स को ले जाया जा सकता है। मेडिकल इमरजेंसी के दौरान इसमें एक बार में 24 स्ट्रेचर और 7 चिकित्साकर्मी फिट किए जा सकते हैं।

भोपाल में स्वच्छ सर्वेक्षण का काउंटडाउन शुरू

दो-तीन दिन में आ सकती है सर्वे टीम ; सौंदर्यीकरण-कचरे पर फोकस

भोपाल (नप्र)। भोपाल में स्वच्छ सर्वेक्षण का काउंटडाउन शुरू हो गया है। अगले दो से तीन दिन में सर्वे टीम भोपाल पहुंच सकती है। अंतिम दौर में नगर निगम कई कवायदें कर रहा है। ताकि, टीम के सामने शहर बेहतर स्थिति में दिखाई दें। कई जगहों पर पेंटिंग कराई गई है। जिसमें स्वच्छता का संदेश लिखे हैं।

बता दें कि नई गाइड लाइंस में अब शहरों को केवल कागजों पर नहीं, बल्कि जमीन पर भी सफाई साबित करनी होगी। इसी वजह से सड़कों की सफाई, नालों की सफाई, सार्वजनिक शौचालयों की सफाई, बैक लेन में पेंटिंग और बाजारों में टाइल्स लगाने का काम शुरू किया है।

वहीं, शहर के बड़े बाजार जैसे- न्यू मार्केट, 10 नंबर मार्केट, पुराना शहर, करोंद, कोलार, बैरागढ़ में सौंदर्यीकरण और कचरा उठाने के काम को प्राथमिकता दी जा रही है।

हालांकि, जमीन पर अब भी कई जगह गंदगी, टूटे डस्टबिन, उखड़ी सड़कें और खुले नाले जैसी समस्याएं बनी हुई हैं। ऐसे में विजिबल क्लीनलीनेस के लिए तय 1500 अंक भोपाल के लिए बड़ी चुनौती बने हुए हैं।

इन कामों पर होगा फोकसः जानकारी के अनुसार, आवास और शहरी कार्य मंत्रालय ने स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में विजिबल क्लीनलीनेस यानी जमीन पर दिखने वाली सफाई पर विशेष फोकस किया है। नई गाइडलाइंस के तहत शहरों की रैंकिंग 10 मुख्य इंडिकेटर्स के आधार पर तय होगी।

दि बर्निंग ट्रेन बनी त्रिवेंद्रम-दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस

2 कोच में लगी भीषण आग, बड़ा हादसा होने से बचा

कोटा (एजेंसी)। कोटा मंडल में त्रिवेंद्रम-हजरत निजामुद्दीन राजधानी एक्सप्रेस (12431) के 2 कोच में आग लग गई। हादसा रविवार सुबह करीब 5.15 बजे कोटा मंडल के लूणी रीछा-विक्रमगढ़ आलोट (मध्य प्रदेश) स्टेशन के बीच हुआ। आग ट्रेन के कोच नंबर बी-1 और उसके पीछे लगे सेकेंड लगेज कम गार्ड वैन में लगी थी। हादसे की जानकारी के बाद कोटा जंक्शन पर हूटर बजने लगे। राहत और बचाव टीम मौके के लिए रवाना हुई। सीनियर डिवीजनल कॉमर्शियल मैनेजर सौरभ जैन ने बताया कि कोच में 68 यात्री सवार थे। आग लगने की खबर गार्ड ने

सबसे पहले लोको पायलट को दी थी। इसके बाद ट्रेन को रुकवाया गया। पैसेंजर्स को बाहर निकाला। करीब 15 मिनट में पूरा कोच खाली कराया गया। कुछ मिनटों में ही आग पूरे कोच में फैल गई थी। हालांकि, इस हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई है। रेलवे अधिकारियों ने बताया कि कुछ पैसेंजर्स का सामान आग में जल गया।

कोटा पहुंचने से पहले हादसा

त्रिवेंद्रम राजधानी रविवार सुबह करीब 3.45 बजे मध्य प्रदेश के रतलाम जंक्शन से रवाना हुई थी। इसका अगला स्टॉप सुबह 6.45 बजे कोटा जंक्शन था। राजस्थान में एंट्री से पहले विक्रमगढ़ आलोट स्टेशन के पास एसी कोच में आग लग गई। कुछ मिनटों बाद आगे पीछे के लगेज कोच तक पहुंच गई। यहां रखा पैसेंजर्स का सामान आग में जल गया। इस कोच में कोई यात्री नहीं था।

सीएम और जामवाल करेंगे रिव्यू, राज्यमंत्रियों के साथ काम के बंटवारे पर होगी चर्चा

मंत्री बताएंगे ढाई साल के टारगेट व अचीवमेंट

भोपाल (नप्र)। अगले महीने 13 जून को मध्य प्रदेश की मोहन सरकार को ढाई साल पूरे हो रहे हैं। इसके पहले ही सीएम डॉ मोहन यादव और क्षेत्रीय संगठन मंत्री अजय जामवाल मप्र सरकार के मंत्रियों से वन टू वन चर्चा करेंगे। भोपाल के मुख्यमंत्री निवास के समत्व कार्यालय में आज दिन भर ये बैठकें चलेंगी। दिसंबर 2023 में सरकार गठन से लेकर अब तक ढाई साल में किए गए कामों का हिसाब देंगे इसके साथ ही अगले ढाई साल के टारगेट्स की जानकारी भी देंगे। मंत्रियों से इन विषयों पर होगी चर्चा।

प्रभार के जिले में अशासकीय नामांकन और विभिन्न समितियों का गठन- मंत्री से पूछा जाएगा कि उनके प्रभार वाले जिले में विभिन्न विभागों की अशासकीय समितियों (नॉन ऑफिशियल कमेटी) का गठन कितना पूरा हो चुका है। दिशा समिति, जनभागीदारी समिति, जिला स्तरीय समन्वय समिति, मॉनिटरिंग कमेटी आदि सभी समितियों की स्थिति रिपोर्ट मांगी जाएगी। कौन-कौन सी समितियां बन चुकी हैं, कितनी बाकी हैं, और जिनका गठन हो चुका है उनकी कार्यप्रणाली कैसी चल रही है इसकी पूरी जानकारी ली जाएगी।

हारी हुई सीटों की जानकारी देंगे मंत्री- मंत्रियों से उनकी स्वयं की विधानसभा सीट, उनके गृह जिले और प्रभार वाले जिले की राजनीतिक स्थिति की गहन समीक्षा की जाएगी। खासतौर पर हारी हुई विधानसभा सीटों पर फोकस रहेगा। पार्टी संगठन इन सीटों पर वर्तमान स्थिति, कमजोर बूथों, विरोधी दलों की गतिविधियों, विकास कार्यों की स्थिति और अगले विधानसभा चुनाव को लेकर रणनीति पर चर्चा होगी।

विभाग के बारे में जानकारी देंगे मंत्री- यह पॉइंट समीक्षा नहीं बल्कि फीडबैक के लिए है। मंत्री अपने विभाग में आने वाली कोई विशेष समस्या, चुनौती, अच्छा काम या नई पहल के बारे में खुलकर बताएंगे। सीएम और जामवाल साहब कोई भी सुझाव या दिशा-निर्देश देंगे। इस विषय पर चर्चा के दौरान कुछ मंत्री अपने विभाग में अफसरों की मनमानी का मुद्दा उठा सकते हैं।

नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव पर होगी बात- आगामी नगर पालिका और ग्राम पंचायत चुनावों को लेकर मंत्री की तैयारियों की जानकारी ली जाएगी। जिले में कितनी सीटें मजबूत हैं, कमजोर हैं, प्रत्याशी चयन की प्रक्रिया, बूथ स्तर की तैयारी और चुनावी रणनीति पर उनके सुझाव मांगे जाएंगे।

संकल्प पत्र के कितने वादे पूरे हुए- प्रत्येक मंत्री को अपने विभाग के संकल्प बिंदु (मुख्यमंत्री द्वारा दिए गए लक्ष्य) दिए गए थे। इन बिंदुओं की वर्तमान स्थिति क्या है? कितने पूरे हो चुके हैं, कितने प्रगति पर हैं।

श्रीति राशिनकर को समर्पण सम्मान

इंदौर। आपले वाचनालय, साहित्य कला संस्कृति केंद्र के माध्यम से भाषा समर्पित कार्यों के लिए श्रीति राशिनकर को सम्मानित किया गया।

मराठी भाषियों की केंद्रीय संस्था बृहन्महाराष्ट्र मंडल, दिल्ली ने अपने शताब्दी वर्ष में संस्था के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले समर्पित सदस्यों को विशेष रूप से सम्मानित करने की गौरव श्रृंखला में उनके द्वारा मराठी भाषा की परीक्षाओं और निबंध स्पर्धाओं के माध्यम से भाषा उन्नयन के लिए दिए गए विशिष्ट अवदान के लिए यह सम्मान किया गया।

मंडल के मदन बोबडे, अनिल दामले एवं श्रीमती बोबडे द्वारा शॉल, सम्मानपत्र प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया गया।

परिक्रमा

मुश्किलों की ओर आगाह करते मोदी और राहुल

अरुण पटेल

लेखक सुबह सबेरे के प्रबंध संपादक हैं

प्र देश और देश के सामने आने वाले समय में कौन-कौन सी मुसीबतें और संकट आ सकते हैं उसे अपने-अपने ढंग से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी बयां कर रहे हैं। हालांकि दोनों के अपने अलग-अलग अंदाज हैं लेकिन एक केंद्रीय स्वर है कि आने वाले हालात और दिन आम जनमानस के लिए मुसीबतों से भरे होंगे और इसके लिए उन्हें अभी से मानसिक रुप से तैयार हो जाना चाहिए। इसका मतलब है कि आने वाले समय में आम जनमानस की जेब पर और कैंची चलने वाली है और इसके लिए उसे अभी से मानसिक तौर पर तैयार हो जाना चाहिए ताकि उसे जोर का झटका धीरे से महसूस हो। आम आदमी जिसमें अनेक लोग वे भी हैं जो कि रोज कमाते और रोज खाते हैं और वे भी हैं जिन्हें मानसिक वेतन मिलता है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि जो भी मार पड़ेगी वह आम उपभोक्ता पर ही पड़ने वाली है क्योंकि उसकी बंधी-बंधाई आय है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इन दिनों नीदरलैंड के प्रवास पर हैं, उन्होंने दहेग में भारतीय समुदाय को सम्बोधित करते हुए दुनिया के मौजूदा हालात पर चिन्ता जताई है और उनकी यह चिन्ता पूरी तरह से तार्किक एवं लोगों के गले उतरने वाली है। प्रधानमंत्री का कहना है कि यह आपदाओं का दशक है। पश्चिम एशिया संकट से पैदा हुए ऊर्जा संकट की ओर इशारा करते हुए उन्होंने भारतीय मूल के लोगों को याद दिलाया कि पहले कोरोना फिर युद्ध और अब ऊर्जा संकट से दुनिया जूझ रही है, यह एक प्रकार से आपदाओं का दशक बन गया है। हालात नहीं बदले तो कई दशकों के कामों पर पानी फिर सकता है। आकांक्षाएं अब सीमा तक नहीं बंधी हैं, उनका कहना था कि भारत को अब सिर्फ बदलाव नहीं बल्कि सर्वोत्तम चाहिए। मोदी ने नीदरलैंड की कंपनियों को भारत में डिजाइन और नवाचार का मौका दिया। सीईओ के साथ राउंड टेबल चर्चा में मोदी ने कहा कि 300 डच कंपनियां भारत की विकास यात्रा का हिस्सा हैं। नीदरलैंड ने 11वीं सदी के 24 आनैमंगलम् ताम्रपत्र भारत को वापस दे दिये हैं। ये पट्टिकाएं 30 वजनी हैं। राजाओं के आदेश से जुड़े ये ताम्रपत्र चोल वंष के अहम अवशेष हैं।

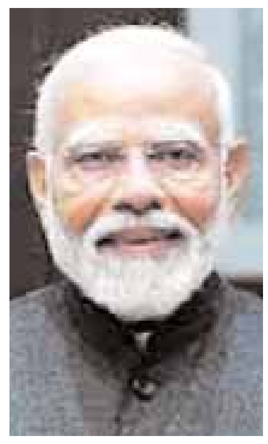

सनातनी को लेकर दिलचस्प बहस

कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य रहे पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और भाजपा नेत्री उषा ठाकुर की आपस में सनातन पर बहस का वीडियो वायरल हो रहा है और इस मुद्दे पर दिग्विजय सिंह और उषा ठाकुर एक-दूसरे पर चुटकी लेते नजर आ रहे हैं। दिग्विजय सिंह 16 मई शनिवार को इंदौर की रेसीडेंसी कोठी में थे जहां उनका सामना भाजपा नेत्री उषा ठाकुर से हो गया और दोनों की बहस का वीडियो वायरल हो रहा है। वीडियो में सनातन धर्म पर दोनों नेता एक-दूसरे पर चुटकी लेते नजर आ रहे हैं। रेसीडेंसी कोठी दिग्विजय सिंह शनिवार 16/05/2026 को थे, वही पर भाजपा नेत्री भी थीं। चूंकि इस समय धार का भोजशाला मुद्दा बहुत सरगर्म है और हाईकोर्ट में उसकी सुनवाई चल रही है, लगता है इसी संदर्भ में दिग्विजय सिंह ने कहा कि मैं घोषणा करता आया हूं कि मैं घोर सनातनी हूं, मेरे कहने के बाद आपने स्वीकार किया, पहले आप हिन्दू धर्म कहती थीं, इस पर उषा ठाकुर बोलीं कि हम अनादिकाल से सनातनी हैं, वेदों के पुजारी हैं। दिग्विजय सिंह कहां मौका चूकने वाले थे उन्होंने कहा कि हम क्या दुशमन हैं। दोनों नेताओं के बीच भोजषाला में सनातन धर्म से प्रारंभ हुई नोंकझोंक यहां तक पहुंच गयी कि दोनों ने कहा कि हाईकोर्ट के निर्णय हमको सम्मान करना चाहिए। दिग्विजय सिंह ने कहा कि आपने कैसे गलत फैसला ले लिया। दिग्विजय सिंह सनातनी होने के प्रश्न पर अपनी नर्मदा परिक्रमा यात्रा और एकादशी व्रत को करने को बताया। इस पर उषा ठाकुर ने व्यक्तिगत रुप से पक्का सनातनी तो माना लेकिन कहा कि इसे सार्वजनिक तौर पर स्वीकार नहीं करते। दिग्विजय सिंह का कहना था कि वे अपनी बात सार्वजनिक तौर पर ही कर रहे हैं।

और यह भी

दिग्विजय सिंह ने देश में बढ़ते हुए आर्थिक संकट और महंगाई को लेकर केन्द्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर तंज कसते हुए कहा है कि देश में जो कुछ आर्थिक संकट पैदा हो रहा है उसका कारण मोदी सरकार में लीडरषिप क्राइसेस और दूरदर्शी सोच का अभाव और असक्षमता है। उन्होंने केन्द्र सरकार से दो सवाल पूछे हैं पहला तो यह कि मार्च में रुसी तेज खरीदने के लिए 30 दिन का समय दिया गया था तब प्रधानमंत्री देष को ऐसी स्थिति में कैसे ले आये जहां भारत को अनुमति मांगना पड़ रही है, दूसरा उन्होंने पूछा है कि जब अंतर्राष्ट्रीय क्रूड आइल के दाम कम थे तब मोदी सरकार ने जनता को राहत देने के बजाए दस सालों में 43 लाख करोड़ रुपये कमाये, ऐसा क्यों।

भोजशाला पर हाई कोर्ट के फैसले के बाद 'एएसआई' ने आदेश जारी किया

हिंदुओं को पूजा का अधिकार, 2003 का प्रतिबंधात्मक आदेश निरस्त

इंदौर। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने धार स्थित ऐतिहासिक भोजशाला को लेकर दिए गए ऐतिहासिक फैसले के परिपेक्ष में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने एक बड़ा और महत्वपूर्ण आदेश जारी किया।

अपने आदेश में एएसआई ने स्पष्ट किया है कि हाई कोर्ट ने 15 मई 2026 को दिए अपने निर्णय में धार की भोजशाला को एक संरक्षित स्मारक माना है। यह भी स्वीकार किया है कि यह मूल रूप से देवी वाग्देवी यानी मां सरस्वती का मंदिर है। अदालत ने ऐतिहासिक साक्ष्यों को दर्ज करते हुए यह माना कि उपलब्ध साहित्य से यह पूरी तरह साबित होता है, कि भोजशाला परमार वंश के राजा भोज से जुड़ा संस्कृत अध्ययन का एक प्रमुख केंद्र था। राजा भोज के काल से संबंधित साहित्यिक और स्थापत्य संदर्भ साफ तौर पर संकेत करते हैं कि वहां देवी सरस्वती को समर्पित एक भव्य मंदिर विद्यमान था, जिसकी पुष्टि स्वयं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किए गए अनुसंधान और वैज्ञानिक सर्वेक्षण से भी होती है।

पुराना आदेश निरस्त किया

इस संदर्भ में हाई कोर्ट ने 7 अप्रैल 2003 को तत्कालीन महानिदेशक, एएसआई द्वारा जारी उस पुराने आदेश को निरस्त कर दिया है, जिसके तहत भोजशाला परिसर में हिंदुओं के पूजा-अधिकारों को सीमित या प्रतिबंधित किया गया था और मुस्लिम समुदाय को नमाज पढ़ने की अनुमति दी गई थी। हाई कोर्ट के इस फैसले के अनुपालन में एएसआई द्वारा अब नए दिशा-निर्देश और आदेश जारी किए गए हैं। इन निर्देशों के तहत चूंकि भोजशाला प्राचीन समय से संस्कृत भाषा, व्याकरण एवं साहित्य के अध्ययन और अनुसंधान का केंद्र रही है और देवी वाग्देवी की उपासना के लिए समर्पित मंदिर रही है। इसलिए अब हिंदू समुदाय को भोजशाला परिसर में शिक्षा ग्रहण करने तथा देवी सरस्वती की पूजा की अपनी प्राचीन परंपरा का निर्वहन करने के लिए निर्बाध प्रवेश प्रदान किया जाएगा।

संरक्षित स्मारक बना रहेगा

यह भी स्पष्ट किया गया कि भोजशाला परिसर प्राचीन स्मारक एवं पुरातात्विक स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1958 के अंतर्गत एक संरक्षित स्मारक के रूप में बना रहेगा। इस कानून के तहत स्मारक की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आगंतुकों और हिंदू श्रद्धालुओं के प्रवेश का समय अधीक्षण पुरातत्वविद् द्वारा जिला प्रशासन से उचित परामर्श करने के बाद तय किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, हिंदू समुदाय द्वारा परिसर के भीतर अध्ययन और पूजा से संबंधित जो भी गतिविधियां संचालित की जाएगी, इसका निर्धारण भी अधीक्षण पुरातत्वविद् जिला प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित कर करेंगे ताकि 1958 के अधिनियम के प्रावधानों के तहत इस ऐतिहासिक स्मारक का संरक्षण और इसकी सुरक्षा पूरी तरह सुनिश्चित की जा सके। एएसआई ने स्पष्ट कर दिया है कि वर्तमान में जारी यह नया आदेश इस पूरे विषय के संबंध में पूर्व में जारी किए गए सभी पुराने आदेशों का स्थान लेगा और तत्काल प्रभाव से लागू माना जाएगा।

14 अपराधियों पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई, 5 थाने में हाजिरी देंगे

अपराध पर सख्ती, पुलिस कमिश्नर का कदम, 9 बदमाश जिला बदर

इंदौर। शहर में अपराध पर नियंत्रण और कानून व्यवस्था मजबूत बनाए रखने के लिए इंदौर पुलिस कमिश्नर ने बड़ी कार्रवाई की है। जोन स्तर के पुलिस अधिकारियों की रिपोर्ट के आधार पर 14 शातिर बदमाशों के खिलाफ प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए गए हैं। इनमें से 9 कुख्यात बदमाशों को जिला बदर कर दिया गया है, जबकि 5 अन्य बदमाशों को निर्धारित शर्तों के साथ थाने में नियमित हाजिरी देने के आदेश दिए गए हैं।

पुलिस द्वारा जिला बदर किए गए बदमाशों में खिजराबाद कॉलोनी निवासी साहिल उर्फ जाहिद उर्फ बच्चा पिता रशीद शेख उर्फ जलालुद्दीन को एक वर्ष के लिए जिला बदर किया गया है। मानसब नगर निवासी अमर उर्फ अमान उर्फ टिल टिल पिता मोहम्मद आरिफ, भागीरथपुरा निवासी हर्ष पिता दिनेश मालवीय, परदेशीपुरा निवासी देवेंद्र पिता लक्ष्मी शंकर सरोज, नया बसेरा निवासी लोकेश उर्फ भांजा पिता जवान सिंह डवरे और नई जीवन की फेल निवासी आकाश पिता रमेश बौरासी को छह-छह महीने के लिए जिला बदर किया गया है।

इसके अलावा गाडरा खेड़ी निवासी जीवन पिता ठाकुर सिंह कौशल, देवधरम टेकरी निवासी विनोद पिता विक्रम जाधव तथा राज मोहल्ला निवासी जीवांशु उर्फ ध्रुव पिता पंकज करोसिया को तीन-तीन महीने के लिए जिला बदर करने के आदेश जारी किए गए हैं। इन सभी बदमाशों को इंदौर जिले के साथ उससे लगे सीमावर्ती जिलों की सीमाओं से भी दूर रहने के निर्देश दिए गए हैं।

संबंधित थाने में उपस्थित

वहीं दूसरी ओर पांच बदमाशों के खिलाफ निर्बंधन आदेश जारी किए गए हैं। इनमें मल्हार पल्टन निवासी गोलू उर्फ शाहरुख पिता अब्दुल शहजाद, सिल्वर कॉलोनी निवासी साजिद उर्फ चेतन लाला पिता अब्दुल गफूर और नई बस्ती निरंजनपुर निवासी अरुण पिता संतोष बोवनिया को एक-एक वर्ष तक निर्धारित शर्तों का पालन करना होगा। जबकि नार्थ तोड़ा निवासी राजा पिता बहादुर वर्मा को छह महीने और सुतार गली निवासी कमल उर्फ कम्मू पिता मदनलाल यादव को तीन महीने तक थाने में हाजिरी देने के आदेश दिए गए हैं। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, इन बदमाशों को तय समय पर संबंधित थाने में उपस्थित होना होगा। साथ ही उन्हें किसी भी अवैधानिक गतिविधि में शामिल नहीं होने और शहर की शांति व्यवस्था भंग करने वाले कार्यों से दूर रहने की चेतावनी दी गई है। आदेश का उल्लंघन करने पर उनके खिलाफ वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

महिला से दुष्कर्म की कोशिश

इंदौर। जूनी इंदौर थाना क्षेत्र में एक महिला से दुष्कर्म के प्रयास का मामला सामने आया है। मोहल्ले में रहने वाले एक युवक ने घर में घुसकर महिला के साथ अश्लील हरकतें कीं और बलात्कार की कोशिश की। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है।

पुलिस के मुताबिक 30 वर्षीय पीड़िता अपने बेटे के साथ कॉलोनी में किराए से रहती है। घटना 1 अप्रैल की दोपहर करीब 2 बजे की बताई जा रही है। उस समय महिला घर में अकेली थी। इसी दौरान पड़ोस में रहने वाला आरोपी रितेश शर्मा जबरन घर में घुस आया। आरोपी ने महिला को पकड़कर अश्लील हरकतें शुरू कर दीं। उसने महिला से कहा 'मेरे साथ रहो, बेटे के साथ क्यों रहती हो?' इसके बाद आरोपी ने दुष्कर्म का प्रयास किया। महिला ने हिम्मत दिखाते हुए शोर मचाया तो आरोपी जान से मारने की धमकी देता हुआ मौके से फरार हो गया। जूनी इंदौर पुलिस आरोपी की गिरफ्तारी के लिए दबिश दे रही है।

थाने से निकलते हुए बनाई 'जेल से फरार' रील, पुलिस ने माफी मंगाई

सोशल मीडिया पर वीडियो डाला, फिर कहा 'ऐसी गलती नहीं'

इंदौर। शहर के परदेशीपुरा थाना क्षेत्र में एक युवक को थाने से बाहर निकलते हुए रील बनाना महंगा पड़ गया। युवक ने पुलिस कार्रवाई के बाद थाने से बाहर आते समय एक वीडियो बनाया और उसे सोशल मीडिया पर साझा कर दिया। वीडियो पुलिस तक पहुंचा तो उसे दोबारा पकड़ लिया गया। बाद में युवक ने कान पकड़कर माफी मांगी और भविष्य में ऐसी हरकत नहीं करने की बात कही।

जानकारी के अनुसार, कुछ दिन पहले परदेशीपुरा थाना पुलिस ने वाहन जांच के दौरान एक युवक को रोका था। युवक अपने वाहन के जरूरी दस्तावेज नहीं दिखा पाया। इस पर पुलिस ने उसके खिलाफ कार्रवाई की और बाद में उसे छोड़ दिया। थाने से बाहर निकलते समय युवक ने एक रील बनाई। वीडियो में वह बाइक लेकर थाने से बाहर आता दिखाई दे रहा था। पीछे चल रहे संगीत और आवाज में कहा जा रहा था 'मुश्किल से मुश्किल छह महीने, 10 अक्टूबर रात के 10 बजे बल्लू तुम्हारी जेल से फरार।' युवक ने यह वीडियो अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट कर दिया। मामला पुलिस की सोशल मीडिया निगरानी शाखा तक पहुंचा तो पुलिस ने युवक के घर पहुंचकर उसे दोबारा पकड़ लिया।

फिर आया माफ़ी मांगते वीडियो

इसके बाद युवक का माफी मांगते हुए एक और वीडियो सामने आया। वीडियो में वह कान पकड़कर कह रहा है कि उसने सोशल मीडिया पर एक 'टुच्ची' वीडियो डाली थी। वह भविष्य में ऐसी गलती नहीं करेगा और अच्छा इंसान बनने की कोशिश करेगा। युवक ने अन्य लोगों से भी ऐसी हरकत नहीं करने की अपील की। पुलिस के मुताबिक युवक की पहचान वैष्णव पिता राजेश कुशवाह निवासी स्कीम नंबर-78 के रूप में हुई है। मामले में अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त प्रियंका डूडवे ने बताया कि युवक के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की गई है।

ई-रिक्शा में मिला पशु मांस, बजरंग दल वालों ने 2 को पुलिस को सौंपा

इंदौर। शहर के तुकोगंज थाना क्षेत्र में शनिवार को पशु मांस ले जाने के संदेह में दो युवकों को पकड़कर पुलिस के हवाले किया गया। बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने ई-रिक्शा रोककर उसकी तलाशी ली थी। कार्यकर्ताओं का दावा है कि वाहन में पशु मांस रखा हुआ था। इसके बाद दोनों युवकों को थाने ले जाकर उनके खिलाफ प्रकरण दर्ज कराया गया।

तुकोगंज थाने में मामला दर्ज, जब्त सामग्री की जांच में लगी पुलिस

तुकोगंज पुलिस के अनुसार, पीयूष कौशल की शिकायत पर रईस पिता शौकत अली और मुकिम पिता हबीब कुरैशी के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि शनिवार को वह अपने साथियों के साथ राजकुमार ब्रिज क्षेत्र से गुजर रहे थे। इसी दौरान एक ई-रिक्शा संदिग्ध दिखाई देने पर उसे रोककर उसमें बैठे दो युवकों से पूछताछ की गई।

बताया गया है कि पूछताछ के दौरान दोनों युवक घबरा गए और वाहन छोड़कर भागने का प्रयास करने लगे। इस पर मौजूद कार्यकर्ताओं ने दोनों को पकड़ लिया। बाद में ई-रिक्शा की तलाशी ली गई, जिसमें पशु मांस मिलने की बात कही गई।

इसके बाद दोनों युवकों को तुकोगंज थाने ले जाकर पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया। पुलिस ने वाहन और जब्त सामग्री को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। मामले में आगे की कार्रवाई जांच रिपोर्ट के आधार पर की जाएगी।

दिग्विजय, उषा ठाकुर में मीठी नोकझोंक

इंदौर। शुक्रवार को राजनीति के बीच संवाद और सौहार्द की एक अलग तस्वीर देखने को मिली। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और भाजपा विधायक उषा ठाकुर की मुलाकात ने सियासी गलियारों में चर्चा छेड़ दी। रेसीडेंसी कोठी में दोनों नेताओं के बीच भोजशाला मामले को लेकर हल्की-फुल्की नोकझोंक हुई। पूरे घटनाक्रम में आत्मीयता और लोकतांत्रिक संवाद साफ नजर आया। उषा ठाकुर ने दिग्विजय सिंह से कहा कि यदि वे पक्के सनातनी हैं तो उन्हें भोजशाला फैसले का सार्वजनिक समर्थन करना चाहिए।

इस पर दिग्विजय सिंह ने मुस्कुराते हुए उनका हाथ पकड़कर कहा कि वे घोर सनातन धर्म को मानने वाले व्यक्ति हैं,नर्मदा परिक्रमा कर चुके हैं और एकादशी का व्रत भी रखते हैं। दिग्विजय सिंह ने यह भी कहा कि यह मान लेना गलत है कि उन्होंने हाईकोर्ट के फैसले का विरोध किया है। वहीं उषा ठाकुर ने उन्हें अपना बड़ा भाई बताते हुए कहा कि विचार अलग हो सकते हैं, लेकिन रिश्तों में मिठास बनी रहनी चाहिए। दोनों नेताओं की यह बातचीत अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है।

गैस सिलेंडर चोरी कर कार से इंदौर आए, नाबालिग सहित दो गिरफ्तार

चोरी 5 हजार की, 8 लाख की कार जब्त, सीसीटीवी से खुला राज

इंदौर। खरगोन जिले के सुखपुरी क्षेत्र में रसोई गैस सिलेंडर चोरी का अनोखा मामला सामने आया है। पुलिस ने सिलेंडर चोरी के आरोप में इंदौर निवासी एक युवक और एक विधि विरुद्ध बालक को गिरफ्तार किया है। खास बात यह रही कि करीब पांच हजार रुपए कीमत के सिलेंडर की चोरी में पुलिस ने लगभग आठ लाख रुपए कीमत की कार भी जब्त कर ली।

पुलिस के अनुसार, 7 मई को सुखपुरी क्षेत्र के एक घर से रसोई गैस सिलेंडर चोरी हुआ था। हालांकि घटना की शिकायत 14 मई को मेनगांव थाने में दर्ज कराई गई। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू की और आसपास लगे निगरानी कैमरों की फुटेज खंगाली। इसी दौरान मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर आरोपियों तक पहुंच बनाई गई। जांच में सामने आया कि आरोपी सिलेंडर चोरी करने के बाद उसे कार में रखकर इंदौर ले गए थे। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए इंदौर से चोरी किया गया गैस सिलेंडर बरामद कर लिया। साथ ही वारदात में इस्तेमाल की गई हुंडई ऑरा कार भी जब्त कर ली गई।

चोरी की घटना स्वीकारी

मेनगांव थाना प्रभारी एमआर रोमडे ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों में इंदौर के लोकनायक नगर, छत्रीपुरा निवासी यश पिता राजेश कमले और एक विधि विरुद्ध बालक शामिल हैं। पूछताछ के दौरान दोनों ने चोरी की घटना स्वीकार कर ली। पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही पर गैस सिलेंडर और कार को कब्जे में लेकर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। शनिवार शाम करीब पांच बजे दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया।

संपादकीय

भोजशाला : अब विवाद खत्म हो

धार की भोजशाला, जिसे हिंदू सरस्वती मंदिर और मुसलमान कमाल मौला मस्जिद बताते रहे हैं, के बारे में मप्र उच्च न्यायालय की इंदौर खंडपीठ ने मंदिर घोषित किया है। हाईकोर्ट ने यह फैसला इस विवादित परिसर की विस्तृत एएसआई सर्वे रिपोर्ट के आधार पर दिया है, जिसमें कहा गया है कि भोजशाला में डेढ़ सौ से अधिक ऐसे प्रमाण, हिंदू प्रतीक चिन्ह मिले हैं, जिसके आधार पर यह माना जा सकता है कि यहां मस्जिद बनने से पहले कोई मंदिर रहा होगा। सर्वे में कुछ इस्लामिक प्रतीक चिन्ह भी मिले हैं, लेकिन उनकी संख्या तुलनात्मक रूप से काफी कम है। वैसे भी लोकमान्यता रही है और कुछ ऐतिहासिक उल्लेख भी हैं कि 11वीं सदी में राजा भोज ने यहां भोजशाला का निर्माण कराया था, जो विद्याध्ययन और हिंदू आराधना स्थल का केन्द्र रही थी। जाहिर है कि मुस्लिम पक्ष इससे सहमत नहीं है और उसने एएसआई रिपोर्ट को 'झूठ का पुलिंदा' करार देते हुए हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाने का ऐलान किया है। हालांकि इस बीच इंदौर हाईकोर्ट बेंच के आदेश के मुताबिक भोजशाला में हिंदू समाज ने पूजा अर्चना शुरू कर दी है। कोर्ट ने मुस्लिम समाज द्वारा यहां शुक्रवार को अदा की जाने वाली नमाज को पूरी तरह रोक दिया है। हालांकि हाई कोर्ट ने अपने फैसले में यह भी कहा है कि मुस्लिम अगर चाहें तो भोजशाला के बदले कोई दूसरी मस्जिद बनाने के लिए राज्य सरकार से जमीन मांग सकते हैं। फैसले के मुताबिक अब इस जगह पर एएसआई का पूरा नियंत्रण रहेगा। एएसआई ही इमारत की देखभाल, संरक्षण और रखरखाव करेगा। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने कोर्ट के फैसले पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि अदालत के आदेशों का पूरी तरह पालन किया जाएगा। चूंकि इस पूरे मामले पुरातात्विक प्रमाण और आस्था का मसला कम सियासी गुणाभाग ज्यादा है। यही कारण है कि फैसला आते ही असदुद्दीन ओवैसी जैसे कई मुस्लिम नेता इस विवाद में कूद पड़े हैं। ओवैसी ने तो यहां तक कह दिया कि धार के धर्मस्थल विवाद पर कोर्ट का फैसला भी बाबरी मस्जिद जैसा ही है। लेकिन दोनों में फर्क यह है कि भोजशाला में बाबरी ढांचे की तरह हिंदुओं ने कोई इमारत गिराई नहीं है। वो केवल ऐतिहासिक और पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर भोजशाला पर अपना अधिकार जता रहे थे। अयोध्या मामले में कोर्ट ने आस्था और पुरातात्विक प्रमाणों को फैसले का आधार माना था। जबकि यहां तो पुरातात्विक प्रमाण साफतौर पर कह रहे हैं कि भोजशाला 11 सौ साल तक एक मंदिर ही था, 14वीं में उसे आंशिक रूप से ध्वस्त कर वहां मस्जिद बनाई गई। मुस्लिम पक्ष का यह भी तर्क है कि यह फैसला 1991 में बने कानून कि देश के सभी धर्मस्थलों को 15 अगस्त 1947 की स्थिति में यथावत रखने की भावना का उल्लंघन है। लेकिन यह कानून में किसी भी धर्मस्थल के धार्मिक उपयोग और प्राचीनता पर संशय होने पर उसका पुरातात्विक सर्वे करने से रोक नहीं लगाता। मुस्लिम पक्ष जो भी कहे, लेकिन एएसआई ने सर्वे का काम पूरी निष्पक्षता और कोर्ट की गाइड लाइन के मुताबिक ही सम्पन्न किया है। हर चीज का रिकॉर्ड मौजूद है। ऐसे में मुस्लिम पक्ष का यह तर्क कि वहां पहले कोई मंदिर था ही नहीं और मस्जिद ही बनाई गई थी, सबूतों की स्पष्टता के आगे नहीं टिकना मुश्किल है। हिंदू पक्ष इंदौर बेंच के फैसले को हजार साल की लड़ाई के बाद मिली जीत बता रहा है, लेकिन इससे देश में धर्म स्थल विवादों का नया पिटारा खुल जाएगा। क्योंकि देश में ऐसे अनेक धर्मस्थल हैं, जिन्हें मुस्लिम शासनकाल में ध्वस्त कर मस्जिदें बना दी गईं।

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

मजहब तार्किक तो बचेंगे लोकतंत्र और मनुष्यता

रूस-यूक्रेन युद्ध में यूक्रेन का साथ देने के नाम पर अमेरिका ने यूक्रेन से युद्ध में सहयोग के खर्च की वसूली में लगभग बत्तीस लाख करोड़ के दुर्लभ खनिज पदार्थों को वसूलने का फैसला कर लिया है। अमेरिका का यूक्रेन को समर्थन कोई नैतिक या लोकतांत्रिक आधार पर नहीं है। लोकतांत्रिक दुनिया के लिए भी नहीं, बल्कि अपनी लूट के लिए इस्तेमाल करने के लिये है। जिस प्रकार जंगल में शेर अपनी-अपनी सीमाओं को बांध लेते है। उसके अंदर वही शिकार कर सकते हैं। एक जमाने के दस्युदल अपने-अपने इलाके बांटे हुए थे। उनके बीच वहीं लूटपाट कर सकते थे। राजे रजवाड़े अपने-अपने राजपाट की सीमा बांटे हुए थे। उसी हिसाब से वहां के लोगों की राजस्व वसूली कर सकते थे।

सारी दुनिया हिंसा की चपेट में हैं और हिंसा की आग बढ़ती जा रही है। इसका अंत कहां होगा, क्या दुनिया में कोई समझ विकसित होगी, या दुनिया का एक तानाशाह होगा, या दुनिया नष्ट होगी, ये विकल्प हैं जो अनुत्तरित हैं। इसका उत्तर भी किसी व्यक्ति को देना या विचार या दर्शन को देना आज सम्भव नहीं है। फिलहाल तो विश्व ताकत का विश्व बन रहा है। भारत की पुरानी कहावत जिसकी लाठी उसकी भैंस सारी दुनिया पर चरितार्थ हो रहा है।

युद्ध की आग फैलती जा रही है। पिछले तीन वर्ष रूस और यूक्रेन युद्ध के थे। रूस-यूक्रेन के दुर्लभ खनिज तत्वों पर कब्जा करने के लिए और अपने पुराने सोवियत रूस यानी यूएसएसआर जो 1986-87 में बिखर चुका है, उसे वापस लाने की योजना में है। यूक्रेन युद्ध उसी का एक हिस्सा है। अमेरिका ने भी लगभग उसी तर्ज पर यानि ताकत के दम पर लैटिन अमेरिकी देशों को अपने कब्जे में लेने का उपक्रम शुरू कर दिया है। उसकी भी दृष्टि उसी प्रकार की लगती है कि अमेरिका गोलार्ध के सभी देश अमेरिकी हिस्से हैं और लाजिमी तौर पर उन्हें अमेरिका के पीछे चलना चाहिए। इन दो महाशक्तियों का यह ताकत का खेल दुनिया को तीसरे विश्वयुद्ध की ओर ले जा रहा है। वेनेजुएला पर कब्जे के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति का अगला निशाना क्यूबा, ग्रीनलैंड पर है। इसके पीछे दृष्टि वहीं भूसम्पदा जो अमेरिकी विलासिता, सम्पन्नता, सामरिक शक्ति के लिए जरूरी है, उस पर कब्जा करने की है।

रूस-यूक्रेन युद्ध में यूक्रेन का साथ देने के नाम पर अमेरिका ने यूक्रेन से युद्ध में सहयोग के खर्च की वसूली में लगभग बत्तीस लाख करोड़ के दुर्लभ खनिज पदार्थों को वसूलने का फैसला कर लिया है। अमेरिका का यूक्रेन को समर्थन कोई नैतिक या लोकतांत्रिक आधार पर नहीं है। लोकतांत्रिक दुनिया के लिए भी नहीं, बल्कि अपनी लूट के लिए इस्तेमाल करने के लिये है। जिस प्रकार जंगल में शेर अपनी अपनी सीमाओं को बांध लेते है। उसके अंदर वही शिकार कर सकते हैं। एक जमाने के दस्युदल अपने-अपने इलाके बांटे हुए थे। उनके बीच वहीं लूटपाट कर सकते थे। राजे रजवाड़े अपने अपने राजपाट की सीमा बांटे हुए थे। उसी हिसाब से वहां के लोगों की राजस्व वसूली कर सकते थे। इसी प्रकार अब दुनिया का निर्माण हो रहा है जो सामरिक शक्ति, आर्थिक शक्ति के आधार पर वैश्विक सीमाओं की नयी सीमा रेखाएं खींच रहे हैं। सम्भावित तीसरा युद्ध किसी तानाशाह के खिलाफ नहीं, बल्कि नया तानाशाह बनने के लिए है। दिमागी तौर पर भी दुनिया अपने अपने मजहबी कट्टरपंथों में बंटी है। एक-दूसरे से भयभीत हैं। एक-दूसरे को साम्प्रदायिक घोषित करती हैं। जबकि सच्चाई यह है कि हर मजहब में कुछ अच्छाइयां हैं, परंतु परम्परा के तौर पर कुछ कट्टरता और अंधविश्वास भी है।

ताकत के दम पर सामरिक शक्तियां दूसरे देशों को गुलाम बनाने के प्रयास करती हैं। मजहब भी अपनी परंपराओं की कट्टरता तथा धर्मगुरुओं की अलोकतांत्रिक शिष्टता को स्थापित करता है। आजकल यह जुमला अमूमन सुनने को मिलता है कि हिन्दू पंथ उदार है जिसने अन्य पंथों को स्वीकार किया है। मुस्लिम भाई कहते हैं कि वे जन्मना सेक्युलर हैं क्योंकि भाजपा के खिलाफ मतदान करते हैं। ईसाई मुल्क ईसा को मानते हैं और प्रेम तथा सेवा को अपने मजहब का लक्ष्य बताते हैं। परंतु जमीनी तौर पर दुनिया में कहीं भी प्रेम और सेवा करते नजर नहीं आते। पता नहीं क्यों और कैसे मजहब का मानसिक फैलाव उस समाज के हिस्से में परंपरा के तौर पर होता रहता है। कई बार ऐसा लगता है कि इन मजहबों के के पीछे अध्ययन-अध्यापन, चिंतन-मनन- दर्शन कम है, बल्कि जन्मना पैतृक परंपरायें मुख्य कारण हैं।

मेरा तो दशकों से यह मत रहा है कि यदि दुनिया को लोकतांत्रिक बनाना है तो धर्मों का भी लोकतंत्रीकरण होना चाहिए। एक बालिग व्यक्ति को अपना धर्म चुनने का अधिकार होना चाहिए। जन्म से धर्म न थोपा जाये। परिपक्व आयु तक, जिसे 18 वर्ष माना गया है, उसे हिन्दू-मुसलमान-सिख-इसाई के रूप में न देखा जाये। अठारह वर्ष के बाद उसे अधिकार हो कि वह चाहे तो किसी धर्म को चुने या न चुने, यह उसका अपना अधिकार हो। धर्म भी दुनिया में या भारत में अलोकतांत्रिक मानस बनाने का माध्यम है जिसमें निष्पक्षता से ज्यादा पक्षपात ज्यादा है। किसी भी एक धर्म को मानने वाला व्यक्ति धार्मिक प्रतीकों को सम्पूर्ण रूप से स्वीकार करता है। उसके अच्छे-बुरे दोनों पक्षों को स्वीकार करता है। उनकी त्रुटियों के ऊपर न उंगली उठाता है, न बोल पाता है, बल्कि उनकी सफाई देता है।

धर्म के दार्शनिक पक्ष गौण हो गये हैं, प्रतीक महत्वपूर्ण। एक हिन्दू के लिए चोटी-जनेऊ धर्म होना है पर दूसरे का भला करना परहित सरिस धरम नहिं भाई केवल शब्द भर रह गये हैं और प्रतीक महत्वपूर्ण हो गये हैं। लगभग यही स्थिति मुसलमान भाइयों की भी है। दाढ़ी-कपड़े, पहनावा में मुस्लिम दिखना उनके लिए ज्यादा जरूरी लगता है, भले इस्लाम की किसी अच्छी बात को न स्वीकार करें। कितने मुसलमान भाई सोने से पहले पड़ोसियों की पीड़ा या भूख का पता करते हैं? केवल परम्पराएं ही मजहब बन गई हैं, दार्शनिक पक्ष शून्य हो गया है। यही स्थिति ईसाई, सिक्ख या अन्य धर्म पंथों की भी बन रही है।

पिछले दिनों मैं इस्लाम को मानने वाले एक मित्र के घर ईद पर मिलने गया था। वहां काफी मच्छर थे। परंतु वे मच्छरों को मारने के लिए बिजली के करंट वाला जाला इस्तेमाल नहीं करते। उनका कहना है कि इस्लाम में जलाकर मारने पर रोक है। मैंने उनसे कहा कि मच्छरों को मारना दवा, धुंए या जाल से हो क्या फर्क पड़ता है? उन्होंने कहा कि जला कर मारने वाले के लिए दोजख की सजा है। फिर बोले-मजहब तो मजहब है। मैंने उनसे कहा इन अंधविश्वास आधारित मजहबी परंपराओं को बदलना चाहिए। वे चुप हो गए परंतु उन्हें मन से मेरी बात स्वीकार नहीं थी। अभी कुछ दिन पहले एक और मुस्लिम भाई मिले थे। उनके बेटे-बहू के बीच 12 साल पहले तलाक हो गया है, पर दोनों ने दोबारा शादी नहीं की। हमारे मित्र अपने नाती को लेकर चिंतित थे, उससे मिलना चाहते थे जो अपनी मां के पास है। अपने नाती से मिलने के लिए वे कोर्ट में मुकदमा करने की तैयारी में हैं। मैंने उनसे कहा कि जब दोनों ने पुनर्विवाह नहीं किया और किसी छोटी-मोटी बात पर अलगाव था तो उनका दोबारा पुनर्विवाह कर देना चाहिए, ताकि नाती के प्रति आपकी और आपके बेटे की चिताओं का हल हो सके। वह बड़े दुरूख के साथ बोले-क्या करें....हमारे मजहब में जो इद्दत की व्यवस्था बना दी गई है उसे कैसे तोड़ें...यह साहस मुझ में नहीं कि मैं सारे समाज का मुकाबला कर सकूं। मैंने उनसे कहा इद्दत एक परंपरा है। हो सकता है उसका आधार कभी रहा हो। बार-बार होने वाले तलाक या झगड़ों को समाप्त करने के लिए यह कठोर और अमानवीय बंधन लगाया गया हो, पर अब इसका क्या औचित्य। हमारे मुस्लिम मित्रों में भी अपनी समाज के सामने खड़े होने का सामर्थ्य नहीं।

धर्मसत्ता के लिए संकीर्णता और कुछ कट्टरता जरूरी है। संकीर्णता और कट्टरता मूलतरू अलोकतांत्रिक है। मैं अमेरिका और इजरायल के द्वारा ईरान पर किए गए हमले का विरोध करता हूं। परंतु मैं हिजाब का विरोध करने वाली बेटियों को इस्लामी गार्ड के माध्यम से पीड़ित करके जेलों में डालने के भी खिलाफ हूं। हमारे मुस्लिम भाई अमेरिकी हमले का विरोध तो करते हैं, जो किया जाना चाहिए परंतु हिजाब का विरोध कर रहीं पांच हजार बच्चियों को जेल में डाले जाने का समर्थन करते हैं। वे भारत में धर्म के नाम पर मॉबलिंचिंग का विरोध करते हैं, जो किया जाना चाहिए ,परंतु बांग्लादेश और पाकिस्तान में वहां के अल्पसंख्यकों की मॉबलिंचिंग या ईश-निंदा कानून के नाम पर हो रही कट्टरपंथी ज्यादती को उचित मानते हैं। अपने कट्टरपंथ को तार्किक बताना और दूसरे के कट्टरपंथ को गलत बताना, यह सिलसिला चल रहा है।

मैं समझता हूं कि अब हर व्यक्ति को अपने मजहब की कट्टरपंथी परंपरा के खिलाफखड़े होना चाहिए। हिंदू-मुसलमान अपनी-अपनी कट्टरता के खिलाफखड़े हों। जब ऐसा होगा तभी दुनिया बेहतर हो सकती है, तभी लोकतंत्र बच सकता है। परंतु इक्कीसवीं सदी के समाज ने पीड़ाओं को भी मजहबी आधार पर महसूस करना सीख लिया है। निस्संदेह अमेरिका और इजरायल का ईरान पर हमला घोर निंदनीय है, परंतु ईरान के द्वारा खाड़ी के इस्लामी देश सऊदी अरब-बहरीन-कुवैत आदि पर हमला कैसे जायज ठहराया जा सकता है। ईरान ने इन देशों के अमेरिकी सामरिक अड्डों पर हमला किया था। परंतु इन सामरिक अड्डों का इस्तेमाल अमेरिका ने ईरान के खिलाफ नहीं किया था। ईरान के हमले से सुन्नी पंथ के निर्दोष लोग मौत के शिकार हुए। लोकतांत्रिक ढंग से निर्वाचित राष्ट्रपति पेजेस्ट्रियन ने सार्वजनिक बयान देकर माफी मांगी और अपनी इस गलती को स्वीकार किया। परंतु मजहबी नेता खामेनेई ने निर्वाचित राष्ट्रपति को पीछे कर सार्वजनिक रूप से ईरान द्वारा किए गए हमले का बचाव किया। मतलब साफहै कि ईरान में लोकतंत्र नाममात्र का है और सारी शक्ति धार्मिक मुखिया के पास है। अन्य स्थानों पर लोकतंत्र का समर्थन करने वाले और धर्मसत्ता का विरोध करने वाले मुस्लिम भाई ईरान की धर्मसत्ता का विरोध नहीं करते। हम हिंदू राष्ट्र और हिंदू धर्मसत्ता के खिलाफ हैं। इसके लिए दंड सहना पड़े या जान देनी पड़े, हम तैयार हैं। परंतु हम इस्लामिक या ईसाई धर्म सत्ता के भी खिलाफहैं। और उसे भी स्वीकार नहीं करेंगे।

मेरी राय में धर्मगुरुओं और समूहों का काम इंसान को नैतिक, मानवीय, आध्यात्मिक बनाना होना चाहिए। राजनीतिक ताकत पूर्णतः निर्वाचित सत्ता के पास होनी चाहिए। दरअसल जरूरी यह है कि दुनिया को तार्किक लोकतांत्रिक मानवीय और मूल्य आधारित बनाया जाना चाहिए। परंतु कुछ यक्ष प्रश्न और यक्ष उत्तर हैं। यक्ष प्रश्न तो इतिहास में मिलते हैं, यक्ष उत्तरों की चर्चा नहीं होती।

एक प्रश्न यह है कि यह दुनिया या समाज कैसे बदले? दुनिया, समाज, परिवार और अंत में व्यक्ति को अपने आप को बदलना होगा। अगर हम खुद को नहीं बदलेंगे और दुनिया को बदलना चाहेंगे तो यह असंभव कल्पना होगी।

ईरान को चाबहार बंदरगाह विकसित करने की उम्मीद

विदेश नीति

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अमेरिका-ईरान-इजरायल युद्ध के दौरान भारतीय विपक्ष, मोदी विरोधी मीडिया और कुछ चरमपंथियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पश्चिम एशिया की इस विषम स्थिति में दोषी ठहराने के आरोप लगाए थे। कूटनीतिक रणनीति में पाकिस्तान को केवल इसलिए सफल ठहराने के कसीदे काढ़े गए, क्योंकि अमेरिका और ईरान के बीच असफल रहीं समझौते की बैठकें इस्लामाबाद में हुई थीं। यह भी आशंकाएं जताई जा रही थीं कि स्पष्ट नीति नहीं होने के कारण भारत और ईरान के संबंधों में खटास उत्पन्न हो रही है। किंतु अब इन सब कुशंकाओं के विपरीत भारत दौरे पर आए ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने ईरान में भारत के सहयोग से निर्माणाधीन चाबहार बंदरगाह को एक सुनहरे दरवाजे और सहयोग का प्रतीक बताते हुए उम्मीद जताई कि भारत इस रणनीतिक बंदरगाह को विकसित करना जारी रहेगा। भारत ही इस क्षेत्र में प्रभावशाली रचनात्मक भूमिका निभा सकता है। अराघची ब्रिक्स विदेश मंत्रियों की बैठक में शामिल होने के बाद नई दिल्ली में ईरानी दूतावास में ठहरे थे। यहीं उनकी विदेश मंत्री एस. जयशंकर से हुई द्विपक्षीय हुई वार्ता में यह बात निकलकर आई है।

अराघची ने इस बंदरगाह के विकास में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए कहा कि अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण इस परियोजना में सुस्ती आ गई है, लेकिन मुझे विश्वास है कि यह बंदरगाह भारत के लिए मध्य एशिया और फिर इस आवागमन मार्ग के रूप में यूरोप तक पहुंचने का सुनहरा दरवाजा साबित होगा। साथ ही यूरोपीय लोगों, मध्य-एशियाई लोगों और अन्य लोगों के लिए हिंद महासागर तक पहुंचने का भी माध्यम बनेगा। यह रणनीतिक दृष्टि से एक अत्यंत महत्वपूर्ण बंदरगाह है। ईरान और भारत के अलावा अन्य देशों के लोगों के लिए भी यह बंदरगाह उपयोगी साबित होगा। अतएव मुझे उम्मीद है कि भारत चाबहार बंदरगाह परियोजना को पूरा करेगा ताकि अन्य देश भी इसका लाभ उठा सकें। अराघची ने यहां तक कहा कि भारत ही वह देश है, जो पश्चिम एशिया में शांति के लिए अहम भूमिका निभा सकता है।

दिल्ली में संपन्न हुए ब्रिक्स देशों के विदेश मंत्रियों के सम्मेलन के बाद आया अराघची का बयान इस बात का संकेत है कि भारत ही वह देश है, जिससे शांति और समावेशन की उम्मीद की जा सकती है, क्योंकि इस भू-राजनीतिक क्षेत्र के ईरान समेत लगभग सभी देशों से भारत के मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच युद्ध के चलते अराघची के बयान को बढ़ते ऊर्जा और आर्थिक संकट के परिप्रेक्ष्य में वैश्विक चिंता के रूप में भी देखने की जरूरत है। दरअसल भारत ने ईरान के साथ चाबहार स्थित शाहिद बेहेस्ती बंदरगाह के संचालन के लिए एक समझौता किया हुआ है। 10 वर्षों के लिए हुए इस समझौते पर दोनों देशों के संधि पत्र पर हस्ताक्षर भी हो चुके थे। परंतु हस्ताक्षर के चंद घंटों बाद भी ईरान पर लगाए गए अमेरिकी प्रतिबंधों के चलते यह समझौता खटाई में पड़ा हुआ है।

इंडियन पोर्टस ग्लोबल लिमिटेड और ईरान के बंदरगाह एवं समुद्री संगठन के बीच 13 मई 2016 को समझौता हुआ था। भारत के तबके जहाजरानी मंत्री सर्बानंद सोनोबाल ने ईरान पहुंचकर अपने समकक्ष के साथ इस समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

इंडिया पोर्ट ग्लोबल लिमिटेड को करीब 120 मिलियन डॉलर का निवेश करना था। भारत सरकार की यह संस्था सागरमाला विकास कंपनी की सहायक कंपनी है। कंपनी की वेबसाइट के मुताबिक चाबहार स्थित शाहिद बेहिश्ती बंदरगाह को विकसित करने के लिए ही इस कंपनी को अस्तित्व में लाया गया था। इसका लक्ष्य भूमि से घिरे अफगानिस्तान और मध्य-एशियाई देशों के लिए मार्ग तैयार करना था। यह कंपनी कंटेनरों के संचालन से लेकर वेयरहाउसिंग तक का काम करती है। इंडिया पोर्ट ने इस बंदरगाह का संचालन सबसे पहले साल 2018 के अंत में शुरू किया था। तब ईरान के परमाणु कार्यक्रम, मानवाधिकार उल्लंघन और चरमपंथी संगठनों को मदद करने के आरोप में अमेरिका ने ईरान पर अनेक व्यापक असर डालने वाले प्रतिबंध लगा दिए थे। 1998 में जब पोखरण में भारत ने परमाणु परीक्षण किया था तब भी अमेरिका ने भारत पर प्रतिबंध लगाए थे। भारत सरकार को अपने पूंजी निवेश से इस बंदरगाह पर पांच गोदियों का निर्माण करना है। इनमें से दो बनकर तैयार हो गई हैं। इनमें से एक पर जब भारत का गेहूं से भरा पहला जहाज इस बंदरगाह पर पहुंचा था, तब उसकी अगवानी ईरान के तब के राष्ट्रपति हसन रूहानी ने की थी। इसी के साथ इस बंदरगाह का औपचारिक उद्घाटन भी संपन्न हो गया था। भारत के लिए यह बंदरगाह आर्थिक, सामरिक एवं रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण है। इस परियोजना के पहले चरण को 'शाहिद बेहिश्ती पोर्ट' के नाम से जाना जाता है। वैसे चाबहार का अर्थ चारों ओर बहार अर्थात् खुशहाली से है।

ईरान के सिस्तान-बलूचिस्तान प्रांत में स्थित इस बंदरगाह की भौगोलिक स्थिति बेहद अहम् है। चाबहार ओमान की खाड़ी में स्थित है। अतएव यह बंदरगाह भारत के लिए मध्य एशिया, यूरोप, रूस और अफगानिस्तान में प्रवेश के लिए एक द्वार माना जाता है। चाबहार के सबसे निकट गुजरात का कंडला बंदरगाह 1016 किमी और मुंबई बंदरगाह की दूरी 1455 किमी है। यहां से महज 140 किमी दूर पाकिस्तान का ग्वादर बंदरगाह है। इसे चीन ने विकसित किया है। यह बहुत पहले से संचालित है। दरअसल पाकिस्तान ने कूटनीतिक चाल चलते हुए अपने क्षेत्र से भारतीय जहाजों को अफगानिस्तान ले जाने से मना कर दिया था। नतीजतन भारत ने वैकल्पिक मार्ग की तलाश किया और चाबहार बंदरगाह ईरान के साथ हुए द्विपक्षीय समझौते के बाद अस्तित्व में आया। भारत के लिए यह रास्ता इसलिए बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि पाक और चीन की मिली-जुली रणनीति के तहत भारत को दक्षिण एषिया में हाशिए पर डालने की कुटिल चाल अपनाई हुई है। चीन ने दक्षिण एशिया में बड़ा पूंजी निवेश करते हुए पाक, श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल आदि देशों से मजबूत आर्थिक व सामरिक संबंध बना लिए हैं। इनके जरिए चीन एवं पाक ने भारत और अफगानिस्तान के बीच व्यापार को प्रतिबंधित करने की कोशिश की थी, जो अब तक नाकाम रही है। भारत से बंदरगाह बनवाए जाने की बुनियाद 2002 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी और ईरानी राष्ट्रपति सैयद मोहम्मद खातमी ने डाली थी, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सकारात्मक पहल के बाद परवान चढ़ना शुरू हुई, लेकिन प्रतिबंधों के चलते अधूरी है।

अटल बिहारी वाजपेयी जब प्रधानमंत्री थे, तब 2003 में ईरान के तत्कालीन खातमी दिल्ली आए थे। तभी भारत और ईरान के बीच चाबहार बंदरगाह को विकसित करने व रेल लाइन बिछाने और कुछ सड़कें डालने के समझौते हो गए थे, लेकिन विवादित परमाणु कार्यक्रम और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियां अनुकूल नहीं होने के कारण भारत इन कार्यक्रमों में रुचि होने के बावजूद कुछ नहीं कर पाया था। इस समय भारत को परमाणु शक्ति के रूप में उभरने व स्थापित होने के लिए अमेरिकी सहयोग व समर्थन की जरूरत थी। भारत राजस्थान के रेगिस्तान में परमाणु परीक्षण के लिए तैयार था। परमाणु परीक्षण अप्रत्यक्ष तौर से परमाणु बम बना लेने की पुष्टि होती है। इसके तत्काल बाद पाकिस्तान और उत्तर कोरिया ने भी परमाणु बम बना लेने की तस्दीक कर दी थी। इसी समय भारत परमाणु निरस्त्रीकरण की कोशिश में लगा था। इस नाते भारत यह कतई नहीं चाहता था कि ईरान परमाणु शक्ति संपन्न देश बन जाए? गोया, भारत को परमाणु अप्रसार संधि के मुद्दे पर अमेरिकी दबाव में ईरान के खिलाफ दो मर्तबा वोट देने पड़े थे। इन मतदानों के समय केंद्र में मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री थे। हालांकि 2012 में तेरहान में आयोजित गुट निरपेक्ष देशों के सम्मेलन में मनमोहन सिंह ईरान गए थे। उन्होंने सम्मेलन के एजेंडे से इतर ईरानी नेताओं से बातचीत भी की थी, लेकिन संवाद की करिश्माई शैली नहीं होने के कारण जड़ता टूट नहीं पाई थी। लिहाजा गतिरोध कायम रहा।

दरअसल चीन अपनी पूंजी से ग्वादर बंदरगाह का विकास अपने दूरगामी हितों को ध्यान में रखते हुए किया है। इसके मार्फत एक तो चीन हिंद महासागर तक सीधी पहुंच बनाने को आतुर है, दूसरे खाड़ी के देशों में पकड़ मजबूत करना चाहता है। चीन इसी क्रम में काशगर से लेकर ग्वादर तक 3000 किलोमीटर लंबा आर्थिक गलियारा बनाने में भी लगा है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए चीन पाकिस्तान में 46 लाख अरब डॉलर खर्च कर रहा है। इससे यह आशंका उत्पन्न हुई है कि चीन इस बंदरगाह से भारत की सामरिक गतिविधियों पर खुफिया नजर रखेगा। अलबत्ता भारत को ग्वादर के इर्द-गिर्द चीन व पाकिस्तानी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए चाबहार के रूप में एक मकान मिल रहा था, जो बन नहीं पाया।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी

कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल

संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी

स्थानीय संपादक
हेमंत पाल

प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

सही कौन, कौन गलत!

प्रेम के गहरे अर्थ को समझो। प्रेम से कह रहे हैं कि सोना नहीं खरीदना है तो मत खरीदो। साल भर नहीं खरीदोगे तो घरवाली भाग नहीं जाएगी। वरना हमें और ज्यादा प्रेम करना पड़ेगा, सोच लो। जनता हमेशा प्रेम की भूखी होती है। यह बात अंग्रेज जानते थे या हम जानते हैं। जनता टीवी देख कर मान जाए, रेडियो सुनकर मान जाए, अखबार पढ़ कर मान जाए, इतने सारे विज्ञापन छपवाते हैं उन्हें देखकर मान जाए तो अच्छी बात है।

चाय से ज्यादा केतली गरम। ऊपर से खड़क हुई तो नीचे तक उसकी धमक बननी चाहिए। लोकल सेनापति अपने सिपाहियों के साथ निकले, जिम्मेदारियां को जमीनी स्तर तक पहुंचने के लिए। बड़े तो बड़ों की सुनते हैं। इधर तो वे हैं जिनसे 'क्यों बे' के साथ बात की शुरुवात की जा सकती है। पहली पकड़ में एक 'क्यों बे' केटेगरी का नागरिक और वेरीफाइड वोटर बुधवारिया सामने आया तो बोले - 'देखो बे, प्रेम बड़ी चीज होती है। प्रेम के गहरे अर्थ को समझो। प्रेम से कह रहे हैं कि सोना नहीं खरीदना है तो मत खरीदो। साल भर नहीं खरीदोगे तो घरवाली भाग नहीं जाएगी। वरना हमें और ज्यादा प्रेम करना पड़ेगा, सोच लो। जनता हमेशा प्रेम की भूखी होती है। यह बात अंग्रेज जानते थे या हम जानते हैं। जनता टीवी देख कर मान जाए, रेडियो सुनकर मान जाए, अखबार पढ़ कर मान जाए, इतने सारे विज्ञापन छपवाते हैं उन्हें देखकर मान जाए तो अच्छी बात है। वरना प्रेम से समझाएँगे तो तुम लोगों के पास कोई और चारा नहीं रहेगा।'

'अरे नहीं मालिक!! सब करियेगा बस प्रेम मत करियेगा हुजूर । प्रेम से धाप गए हम तो। हम गरीब, जो भी आता है प्रेम कर जाता है। पुलिस तो हैं ही प्रेमी, अब दबंग देशभक्त भी आए दिन प्रेम कर जाते हैं। अब आप कह रहे हैं कि समझाने के लिये प्रेम पर उतर आएंगे! तो जान लेओ महाराज हम तो समझे समझाये बैठे हैं। सोना चांदी से हमारा दूर का नाता नहीं है। एक बार घरवाली ने बड़े शौक से कान के टाप्स क्या पहन लिये चोरों को न्योता मिल गया। हुजूर चोर बड़े प्रेम से घर में झाड़ू मार गए, तब से हमने मान लिया है कि सोना रखना पाप है, सोने कि तरफ देखना भी पाप है । जाने कब सोने पर किस माई बाप की नजर पड़ जाए या फिर चोर उचक्कों की, हम तो गए बारा के भाव में। सोना कोई खाने के काम तो आता नहीं है कि नहीं होगा तो भूखे मर जाएंगे।... सही कह रहे हैं ना हुजूर?' बुधवारिया ने हाथ जोड़ दिये।

'चलो ठीक है। समझदार हो यह पक्का हो गया। एक बात और, छुट्टी मनाने के लिये विदेश यात्रा नहीं करना है। बिलकुल नहीं। शादी ब्याह, हनीमून, जो भी करना है यहीं करो। समझ गए, कोई यात्रा नहीं।' सेनापति दूसरे पॉइंट पर आए।

'महाराज हम तो कहीं जाते ही नहीं यात्रा पर। गांव से आए थे खटारा बस में बैठकर और मौका पड़ गया तो जान बचा कर यहां से पैदल निकल गए। हमें तो यह भी पता नहीं की विदेस कहां है। हमारा गांव हमारी माटी, हमारा देस है हुजूर। यात्रा हमारे नसीब में नहीं है।'

'गाँव में रहते हो! तो यहाँ क्यों आ गए! वर्क फ्रॉम होम करना चाहिए था।'

'ये क्या होता है हुजूर!!'

'गाँव में तुम्हारा घर है ना। वहीं से काम करो। सबको वर्क फ्रॉम होम करना है। अच्छे अच्छे पढ़े लिखों को करना है तो तुम कैसे बच सकते हो! नहीं नहीं,.... मना नहीं करना, ठीक है। ... और तेल कितना खाते हो?'

'खाते नहीं हैं हजूर। छौंक लगाते हैं बस।'

'बिना छोंक के खाया करो, देशभक्त बनो। इससे अच्छा मौका फिर नहीं मिलेगा। अभी ऑफ़ सीजन में बन लो। अंग्रेजों के जमाने में तो जान तक देना पड़ती थी। पता है!'

'ठीक है हजूर, छौंक भी नहीं लगाएंगे।' बुधवारिया मुंडी हिलाई।

सेनापति ने फुसफुसा कर सिपाही से पूछा -'क्यों रे ऐसा क्यों लग रहा है कि हम गलत आदमी से बात कर रहे हैं।'

'हमारी हर बात मान रहा है, आदमी तो सही है।' सिपाही बोला।

कानून और न्याय

विनय झैलावत
(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

न्यायपालिका और अभिभाषकों के संबंधों का चक्रव्यूह

न्यायपालिका के सभी स्तरों पर न्यायाधीशों को सभी के प्रति, विशेष रूप से बार के युवा सदस्यों के प्रति, धैर्य, करुणा और प्रोत्साहन की भावना प्रदर्शित करनी चाहिए। यह दायित्व इतना विशाल है कि एक निष्पक्ष और उत्तरदायी न्यायपालिका सत्यनिष्ठा, स्वतंत्रता और पेशेवर नैतिकता के अत्यंत उच्च मानकों के अंतर्गत कार्य करती है।

न्यायपालिका संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करती है, व्यक्तिगत अधिकारों को सुरक्षित रखती है और लोकतंत्र तथा कानून के शासन को एक प्रभावी स्तर पर संरक्षित करती है। न्यायाधीशों के पास कानून से संबंधित निर्णय लेने और आदेश जारी करने, विवादों का निपटारा करने और उन्हें सुलझाने तथा न्याय का निष्पक्ष और तटस्थ अनुप्रयोग सुनिश्चित करने की अपार शक्ति होती है। यह दायित्व इतना विशाल है कि एक निष्पक्ष और उत्तरदायी न्यायपालिका सत्यनिष्ठा, स्वतंत्रता और पेशेवर नैतिकता के अत्यंत उच्च मानकों के अंतर्गत कार्य करती है। आचरण नैतिकता और व्यवहार के सामान्य मानकों के विपरीत होता है, तो इन कार्यों का प्रभाव पूरे तंत्र पर पड़ता है। यहां तक कि वास्तविक क्षति या ''उचित प्रक्रिया'' के उल्लंघन के रूप में भी विषेषकर तब, जब उनके किसी कार्य के परिणामस्वरूप कोई अन्यायपूर्ण परिणाम सामने आता है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता, दंड और मौलिक अधिकारों के संरक्षण में ''न्यायिक विवेक'' की भूमिका को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय की एकल न्यायाधीश पीठ इस हफ्ते न्यायिक जगत की सुर्खियों में आ गई, जब न्यायाधीश ने अपना आपा खो दिया और केवल दो साल के अनुभव वाले एक युवा अधिवक्ता को जेल भेजने का आदेश दिया। 4 मई की घटना के एक वीडियो में न्यायाधीश को एक युवा अधिवक्ता को हिरासत में लेने के लिए पुलिस को बुलाते हुए दिखाया गया, जिसने लापरवाही भरा बर्ताव किया था। सर्वोच्च न्यायालय बार एसोसिएशन और बार काउंसिल ऑफ इंडिया ने अभ्यावेदनों और प्रस्तावों के माध्यम से भारत के मुख्य न्यायाधीश का ध्यान इस मामले की ओर आकर्षित किया। सर्वोच्च न्यायालय ने इस मामले का स्वतः संज्ञान लिया और टिप्पणी की कि ''न्यायपालिका के सभी स्तरों पर न्यायाधीशों को सभी के प्रति, विशेष रूप से बार के युवा सदस्यों के प्रति, धैर्य, करुणा और प्रोत्साहन की भावना प्रदर्शित करनी चाहिए। यद्यपि बार के वरिष्ठ सदस्यों का यह निश्चित रूप से एक गंभीर कर्तव्य है कि वे अनुशासन, पेशेवर नैतिकता और निरंतर सीखने की भावना विकसित करें। लेकिन कर्तव्य और ईमानदारी की भावना को पोषित करने की जिम्मेदारी केवल बार (अभिभाषकों का समूह) की ही नहीं, बल्कि बेंच (न्यायपालिका) की भी है, ताकि हर अधिवक्ता खुद को सबसे पहले अदालत के एक अधिकारी के रूप में देखे।

इस मामले के मुख्य न्यायाधिपति की रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि वह वीडियो क्लिप, जो काफी वायरल हुई थी, उसमें उन घटनाओं के पीछे का संदर्भ मौजूद नहीं था। इस बात का संज्ञान लेते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने कहा, ''हम साफ तौर पर यह बात कहते हैं कि इस मामले में मीडिया की एक अहम भूमिका है। संदर्भ से हटकर दिखाए गए वीडियो फैलाने से बेवजह का पक्षपात हो सकता है। इसलिए, हम उम्मीद करते हैं कि मीडिया जिम्मेदारी की गहरी भावना के साथ एक सक्रिय भूमिका निभाएगा। यह एक सच्चाई है कि जहां कुछ मामलों को जरूरत से ज्यादा बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है। लेकिन, यह भी सही है कि पूरे देश में न्यायाधीशों द्वारा दुर्व्यवहार की घटनाऐं भी होती हैं। हालांकि इसमें न्यायिक समुदाय का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही शामिल होता है।

अनुभव अधिवक्ता किसी न्यायाधीश को केवल उनके द्वारा दिए गए कानूनी आदेश के आधार पर ही पसंद या उनका सम्मान नहीं करते। उनमें से कई इतने अनुभवी होते हैं कि वे पहले से ही यह अंदाजा लगा लेते हैं कि किसी मामले का नतीजा उसकी खूबियों के आधार पर क्या होगा। लेकिन वे न्यायाधीश से यह उम्मीद जरूर करते हैं कि वे उनके साथ गरिमापूर्ण व्यवहार करेंगे।

एक प्रैक्टिस करने वाले अधिवक्ता के लिए, किसी अपमानजनक न्यायाधीश को जवाब देना हमेशा मुश्किल होता है। अगर कोई ऐसा करने की हिम्मत करता है, तो उस अदालत में उसका भविष्य हमेशा के लिए खत्म हो सकता है। वरिष्ठ अभिभाषक, जिनसे उम्मीद की जाती है कि वे न्यायाधीश को सही करेंगे वे सामान्यतः सबसे कम प्रतिक्रिया देते हैं, क्योंकि उनके पेशेवर हित बहुत ऊंचे होते हैं। सफलता काफी हद तक अदालत में अधिवक्ता और न्यायाधीश के बीच होने वाली बातचीत और हाव-भाव पर निर्भर करती है। इससे एक खास तरह की सौहार्द्रपूर्णता झलकती है, जिसे देखने वाले अधिवक्ता भी देख पाते हैं। वे अधिवक्ता जो यह आंक रहे होते हैं कि उस अदालत से किसे अपने पक्ष में आदेश मिलते हैं। उन्हें भी लगता है कि किसी एक मामले के लिए अपने संबंध क्यों खराब किए जाएं? बेहतर है कि हम चुपचाप सह लें, आगे बढ़ जाएं और सफलता के इस मंत्र को हमेषा याद रखें, कभी भी किसी न्यायाधीश को नाराज न करें।

यह कहा जा सकता है कि न्यायिक नैतिकता, न्यायाधीशों के सही आचरण के मूल सिद्धांत हैं। इसमें न्यायाधीशों के नैतिक कार्यों, व्यवहार, उद्देश्यों या चरित्र को शामिल किया जाता है या यह उनसे संबंधित होती है, यानी उनके लिए क्या सही या उचित है। एक न्यायाधीश को संयमित और अनुशासित, स्वभाव से निष्पक्ष, अडिग, ईश्वर-भीरू अपने कर्तव्यों के प्रति कर्मठ, क्रोध-मुक्त, सदाचारी जीवन जीने वाला और अच्छे कुल का होना चाहिए। न्यायाधीशों का आचरण, उनकी तटस्थता, निष्पक्षता, स्वतंत्रता और न्यायिक अनुषासन। ये सभी एक न्यायाधीश के अच्छे न्यायिक व्यवहार के अनिवार्य अंग है। जहां एक ओर न्यायिक स्वभाव की जांच-परख हो रही है, वहीं अधिवक्ताओं का व्यवहार भी कम चिंताजनक नहीं है। थोड़ा-सा धैर्य और अपने गुस्से पर काबू रखने से कई टकरावों को सुलझाया जा सकता है या उनसे बचा जा सकता है। अदालत की मर्यादा बनाए रखना दोनों पक्षों की जिम्मेदारी है। एक अधिवक्ता को हमेशा अदालत में उचित व्यवहार करना चाहिए। हर समय अदालत की गरिमा बनाए रखने के लिए अपना पूरा प्रयास करना चाहिए। लेकिन अदालत का भी एक पारस्परिक कर्तव्य होता है। उसे न केवल अधिवक्ता के प्रति सहृदय होना चाहिए, बल्कि उसे अपने मुवक्किलों और आम जनता की नजरों में अधिवक्ता का सम्मान बनाए रखने का भी प्रयास करना चाहिए, जिनके साथ उसे अपनी पेशेवर क्षमता में काम करना होता है।

यदि स्वतंत्र न्यायपालिका लोकतंत्र का स्तंभ है, तो 'बार' (अभिभाषकों का समूह) इस स्वतंत्र न्यायपालिका की नींव है। 'बार' ही 'बेंच' (न्यायाधीशों) की जननी है और न्यायिक अधिकारियों के लिए एक ऐसा उज्जवल दर्पण है, जिसमें उनका स्वरूप, चरित्र और आचरण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है और यह बेंच का ही दायित्व है कि वह बार के गुणों का संवर्धन और पोषण करें। ईमानदारी और सत्यनिष्ठा न्यायिक शुचिता की पहचान है। भारत का सर्वोच्च न्यायालय लगातार इस बातर पर जोर देता रहा है कि वरिष्ठ अधिवक्ताओं पर कनिष्ठ अधिवक्ताओं को मार्गदर्शन देने और उन्हें पेशेवर अवसर प्रदान करने की एक गहरी जिम्मेदारी होती है। इस नैतिक कर्तव्य में अदालत में काम करने का अनुभव दिलाना और युवा अधिवक्ताओं को अदालती कार्यवाही में आगे बढ़कर नेतृत्व करने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि भले ही किसी न्यायाधीश के धैर्य की कड़ी परीक्षा क्यों न हो, न्यायालय उनसे शांत, निष्पक्ष और धैर्यवान बने रहने की अपेक्षा करता है। न्यायालय अक्सर न्यायिक अधिकारियों को यह याद दिलाता रहता है कि न्यायपालिका में जनता का विश्वास बनाए रखने के लिए अदालत के भीतर संयम बरतना अनिवार्य है।

शिक्षा

तेजेंद्र शर्मा
(कुरुक्षेत्र विवि में वाणिज्य के प्रोफेसर)

शैक्षणिक परिसरों में मानसिक संकट के हालात

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की घटना एक चेतावनी है, जो हमें झकझोर रहा है। शोर-शराबे और गलाकाट प्रतिस्पर्धा के इस युग में हमें उन 'मौन संकेतों' को पहचानने की दृष्टि विकसित करनी होगी, जो हमारे शिक्षा परिसरों की गहमागहमी में कहीं खो गए हैं। एक संवेदनशील और सहायक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करने के लिए हमें किसी बहुत बड़े वित्तीय बजट की नहीं, बल्कि एक साझा मानवीय दृष्टिकोण, करुणा और निरंतर संवाद की आवश्यकता है।

शैक्षणिक परिसर आज 'बौद्धिक अभयारण्य' के बजाय 'अवसाद के कारखाने' बन रहे हैं। कुरुक्षेत्र एनआईटी में छात्रों और मेस कर्मचारी की आत्महत्याएं इस 'सांस्थानिक विफलता' का प्रमाण है कि हमारा पारिस्थितिकी तंत्र भीतर से लहूलुहान है। यह संकट केवल पढ़ाई के दबाव का नहीं, बल्कि उस संवेदना शून्य व्यवस्था का है जहाँ इंसान को केवल 'संसाधन' समझा जाता है। आज परिसरों में संवाद की जगह सन्नाटे ने ले ली है, जहाँ व्यक्ति की पहचान उसके ग्रेड कार्ड तक सिमट गई है। यह संवेदनहीनता न केवल विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को निगल रही है, बल्कि शिक्षण और गैर-शिक्षण स्टाफ को भी अस्तित्वगत संकट में धकेल रही है। अब समय आ गया है कि हम डिग्रियों और अंकों की अंधी दौड़ से ऊपर 'मानवीय संवेदना' और 'गुरु-शिष्य परंपरा' के आत्मीय बोध को पुनर्स्थापित करें। हमें एक ऐसे समावेशी वातावरण का निर्माण करना होगा जहाँ व्यावसायिक उपलब्धियों से अधिक जीवन के मूल्यों और मानसिक कल्याण को प्रधानता मिले, ताकि कोई भी स्वयं को अकेला और लाचार न पाए।

आज का विद्यार्थी एक ऐसे बहुस्तरीय और जटिल दबाव का सामना कर रहा है, जिसकी कल्पना पिछली पीढ़ियों के लिए लगभग असंभव थी। इस संकट को समझने के लिए हमें 'चुनौतियों के त्रिकोण' का विश्लेषण करना होगा। इस त्रिकोण का पहला कोना डिजिटल 'आदर्शवाद' का भ्रम है। सोशल मीडिया के इस दौर में सफलता का एक कृत्रिम और आदर्शीकृत चित्र चौबीसों घंटे परोसा जा रहा है। इंस्टाग्राम और लिंक्डइन जैसी साइटों पर फिल्टर की गई तस्वीरों और चुनिंदा सफल पलों के बीच विद्यार्थी अपने वास्तविक जीवन के संघर्षों, छोटी-बड़ी असफलताओं और सामान्य क्षणों को हीन भावना से देखने लगता है। यह निरंतर तुलना-बोध आत्म-संदेह को जन्म देता है, जो धीरे-धीरे आत्म-सम्मान को निगल जाता है।

त्रिकोण का दूसरा कोना 'त्वरित संतुष्टि' का संकट है। डिजिटल अर्थव्यवस्था ने हमारी मानसिकता को 'एक क्लिक' पर समाधान पाने का अभ्यस्त बना दिया है। इसके कारण विद्यार्थियों में उस धैर्य और विवेक की कमी हो रही है जो लंबी शैक्षणिक यात्राओं और जीवन की कठिन चुनौतियों के लिए अनिवार्य है। जब परिणाम तुरंत नहीं मिलते, तो हताशा का स्तर अप्रत्याशित रूप से बढ़ जाता है। त्रिकोण का तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण पक्ष भावनात्मक आधार का अभाव है। संयुक्त परिवारों के विखंडन और शहरी जीवन की आपाधापी में संवाद की वह सुरक्षा दीवार ढह गई है, जो पहले संकट के समय कवच का काम करती थी। अब विद्यार्थी भीड़ भरे परिसर में भी स्वयं को नितांत अकेला और असहाय पाता है।

मानसिक स्वास्थ्य का यह मुद्दा अब केवल सहानुभूति या नैतिकता का विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह एक गंभीर कानूनी और संवैधानिक अनिवार्यता बन चुका है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 ए (शिक्षा का अधिकार) और अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) के व्यापक फलक में 'मानसिक स्वास्थ्य का अधिकार' स्वतः ही अंतर्निहित है। भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने समय-समय पर गरिमापूर्ण जीवन की व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया है कि 'जीवन के अधिकार' का अर्थ केवल सांस लेना या पशुवत अस्तित्व नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा और मानसिक कल्याण के साथ जीने का अधिकार है। यदि एक शैक्षणिक संस्थान अपने परिसर में ऐसा वातावरण प्रदान करने में विफल रहता है जहाँ विद्यार्थी का मानसिक स्वास्थ्य सुरक्षित रहे, तो यह सीधे तौर पर उसके संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन माना जाना चाहिए।

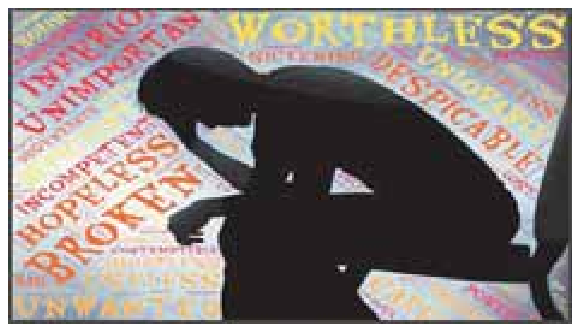

यहाँ 'इन लोको पेरेंटिस' का सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है, जिसका अर्थ है 'माता-पिता के स्थान पर।' जब एक अभिभावक अपने बच्चे को किसी विश्वविद्यालय या संस्थान में भेजता है, तो वह संस्थान कानूनी और नैतिक रूप से उस बच्चे की सुरक्षा, मानसिक स्थिरता और समग्र कल्याण के लिए पूर्णतः उत्तरदायी हो जाता है। कुरुक्षेत्र एनआईटी की हालिया घटना इस विधिक दायित्व की विफलता का एक दुखद उदाहरण है, जो हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हमारे 'डन एंड डस्टेड' नियम विद्यार्थियों की जान से बढ़कर हैं? विधिक दृष्टिकोण से, मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम, 2017 एक युगांतकारी कानून है जो गरिमापूर्ण उपचार के अधिकार को वैधानिक मान्यता देता है। यह कानून शैक्षणिक संस्थानों के लिए अपनी नीतियों को संवेदनशील बनाने और मानसिक तनाव से जूझ रहे छात्रों को सामाजिक कलंक से बचाने की कानूनी बाध्यता उत्पन्न करता है। इसी क्रम में, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के 'विद्यार्थी कल्याण' दिशानिर्देशों का पालन करना प्रशासन के लिए स्वैच्छिक विकल्प नहीं, बल्कि एक अनिवार्य उत्तरदायित्व होना चाहिए। अंततः, परिसरों में वास्तविक बदलाव केवल प्रशासनिक आदेशों से नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर की सर्वश्रेष्ठ प्रणालियों को अपनाने से ही संभव है।

यूरोपीय मॉडल, विशेषकर फिनलैंड में, शिक्षा में 'लेस इज मोर' का सिद्धांत चलता है। वे 'हाइपर-कॉम्पिटिटिव' माहौल के बजाय सहयोगात्मक शिक्षा पर जोर देते हैं, जिससे छात्र अवसाद की दर न्यूनतम रहती है। वहीं, ब्रिटिश और अमेरिकी विश्वविद्यालयों जैसे हार्वर्ड और कैम्ब्रिज में 'हार्ट एंड माइंड' पॉलिसी के तहत छात्रों के लिए 24/7 मानसिक स्वास्थ्य हेल्पलाइन और 'पीयर-सपोर्ट' ग्रुप अनिवार्य हैं। जापान की 'इकीगाई' पद्धति भी एक बेहतरीन उदाहरण है, जहाँ परिसरों में छात्रों को उनके जीवन का उद्देश्य खोजने में मदद की जाती है, ताकि वे केवल डिग्री और पैकेज के लिए नहीं, बल्कि आत्म-संतोष के लिए पढ़ें। भारत को भी अपने 'हॉलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड' में शैक्षणिक अंकों के साथ-साथ 'इमोशनल इंटेलिजेंस' को प्राथमिकता देनी होगी।

कैंपस में गहराते मानसिक संकट के समाधान हेतु एक बहुआयामी सुधारवादी रोडमैप अनिवार्य है। इसके तहत सबसे पहले 'मेंटरशिप प्रणाली' को पुनर्जीवित कर शिक्षकों को 'प्रथम प्रक्रिया कर्ता' के रूप में प्रशिक्षित करना होगा, ताकि वे छात्रों के व्यवहार में आने वाले सूक्ष्म बदलावों, जैसे एकांतवास या चिड़चिड़ाहट को समय रहते पहचान सकें। साथ ही, तकनीक का लाभ उठाते हुए एक 'प्रारंभिक चेतावनी तंत्र' विकसित किया जाना चाहिए, जो छात्रों की उपस्थिति और शैक्षणिक प्रदर्शन के डेटा का विश्लेषण कर संकट की स्थिति में त्वरित हस्तक्षेप कर सके। अंततः, परामर्श सेवाओं को संस्थान की मुख्यधारा से जोड़ना होगा; काउंसलिंग सेल को 'स्टिग्मा-मुक्त' और सुलभ बनाकर इसे परिसर की 'धड़कन' के रूप में स्थापित करना आवश्यक है, जिससे विद्यार्थी बिना किसी सामाजिक भय के मदद मांगने को साहस का परिचायक मान सकें।

हमें अपनी संपूर्ण शिक्षा पद्धति में भारतीय ज्ञान परंपरा के उन तत्वों को समाहित करना होगा जो व्यक्ति को आंतरिक रूप से सुदृढ़ बनाते हैं। पाठ्यक्रम में योग, ध्यान और आत्मचिंतन जैसे विषयों को केवल भाषणों तक सीमित न रखकर क्रेडिट-आधारित अनिवार्य गतिविधियों के रूप में शामिल करना होगा। यह विद्यार्थियों को आंतरिक शांति और बाह्य दबावों के बीच संतुलन बनाने की कला सिखाएगा। शिक्षा का चरम लक्ष्य केवल 'कुशल कर्मचारी' या 'कॉर्पोरेट पुर्जे' पैदा करना नहीं, बल्कि 'पूर्ण मनुष्य' का निर्माण करना है। यदि हमारे विश्वविद्यालय केवल डिग्रियां बांटने वाली मशीनों में बदल जाएंगे और अपने भीतर घुट रहे विद्यार्थियों की मौन चीखों के प्रति बहरे बने रहेंगे, तो यह हमारी सामूहिक सभ्यता की सबसे बड़ी पराजय होगी। न्याय केवल न्यायालयों की चारदीवारी के भीतर ही सुनिश्चित नहीं होता, बल्कि न्याय उस दिन भी सुनिश्चित होता है जब किसी शैक्षणिक परिसर में एक टूटते हुए युवा मन को समय पर सहारा मिल जाता है और उसे मृत्यु के गर्त से जीवन की मुख्यधारा में वापस लाया जाता है। अब समय आ गया है कि हम अपने परिसरों को केवल 'ज्ञान के केंद्र' से ऊपर उठाकर 'जीवन के केंद्र' के रूप में पुनः स्थापित करें, जहां डिग्री से अधिक जीवन की कीमत हो।

ज्ञान (वाग्देवी) की संस्कृति

डॉ. मयंक चतुर्वेदी
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ज्ञान की देवी का वैश्विक स्वीकार्य

मध्यप्रदेश के धार स्थित भोजशाला को लेकर न्यायालय का जो निर्णय सामने आया है, वह उस सनातन सांस्कृतिक चेतना की पुनर्पुष्टि है, जिसने हजारों वर्षों से मानव सभ्यता को ज्ञान, शिक्षा, कला और संस्कृति का मार्ग दिखाया है। एक ओर भारत में भोजशाला को लेकर मां वाग्देवी (सरस्वती) की प्राचीन उपासना के प्रमाण पुनः चर्चा में हैं, वहीं दूसरी ओर दुनिया का सबसे बड़ा मुस्लिम बहुल देश इंडोनेशिया, अमेरिका की राजधानी वॉशिंगटन डीसी में मां सरस्वती की 16 फीट ऊंची भव्य प्रतिमा स्थापित कर पूरी दुनिया को यह संदेश दे चुका है कि ज्ञान की कोई सीमाएं नहीं होतीं।

व्हाइट हाउस से कुछ दूरी पर कमल पर विराजित वीणावादिनी मां सरस्वती की प्रतिमा सही मायनों में देखा जाए तो भारतीय ज्ञान परंपरा की वैश्विक प्रतिष्ठा का उद्घोष है। यह दृश्य उस भारत के लिए भी एक गहरा संदेश है, जो कभी नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला और भोजशाला जैसी ज्ञान परंपराओं का केंद्र रहा है।

भोजशाला: सांस्कृतिक स्मृति का प्रश्न– धार की भोजशाला को लेकर इतिहासकारों, पुरातत्वविदों और स्थानीय परंपराओं का बड़ा वर्ग इसे परमार वंश के महान राजा भोज द्वारा स्थापित मां वाग्देवी के मंदिर और संस्कृत शिक्षा केंद्र के रूप में स्वीकार करता आया है। राजा भोज पराक्रमी शासक होने के साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा के बड़े संरक्षक माने जाते हैं।

उनकी राजधानी धार उस समय विद्वानों, कवियों और दार्शनिकों का केंद्र थी। भोजशाला में विद्या की देवी मां सरस्वती की आराधना होती थी और यहां शास्त्रार्थ तथा विद्वत सभाएं आयोजित होती थीं। यही कारण है कि इसे 'विद्या की तपोभूमि' कहा गया। यहां प्राप्त संस्कृत शिलालेख, स्थापत्य शैली, कमल आकृतियां और मंदिर वास्तु के अवशेष इस ऐतिहासिक तथ्य को मजबूत करते हैं कि भोजशाला मूलतः एक ज्ञान मंदिर थी।

न्यायालयीन निर्णय और उभरते पुरातात्विक तथ्य– हाल के न्यायालयीन निर्णय और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की रिपोर्टों ने भोजशाला से जुड़े कई महत्वपूर्ण तथ्यों को फिर सामने ला दिया है। सर्वेक्षण में मंदिर स्थापत्य शैली, देवी-देवताओं के प्रतीक, संस्कृत अभिलेख और हिंदू धार्मिक चिह्नों के प्रमाण मिले हैं। यह भी स्पष्ट हुआ कि संरचना के अनेक हिस्से मूल हिंदू मंदिर शैली पर आधारित हैं।

वर्षों तक भोजशाला को केवल विवादित स्थल के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश हुई, किंतु अब पुरातात्विक और ऐतिहासिक प्रमाण यह संकेत दे रहे हैं कि यह स्थान भारत की प्राचीन शिक्षा और सांस्कृतिक चेतना का केंद्र रहा है, इसलिए भोजशाला का प्रश्न भारत की सांस्कृतिक अस्मिता और ज्ञान परंपरा के पुनर्स्मरण का विषय बन चुका है।

मां सरस्वती : केवल देवी नहीं, ज्ञान की चेतना– सनातन परंपरा में मां सरस्वती केवल पूजा की देवी नहीं हैं, वे ज्ञान, विवेक, कला और संस्कार की चेतना हैं। उनके हाथों में वीणा कला और संगीत का प्रतीक है, पुस्तक ज्ञान का, अक्षमाला साधना और निरंतर सीखने की प्रक्रिया का संकेत देती है, जबकि श्वेत कमल पवित्रता और निर्मलता का प्रतीक माना गया है। भारतीय संस्कृति ने हजारों वर्ष पहले यह स्वीकार कर लिया था कि शिक्षा रोजगार का साधन नहीं, बल्कि मनुष्य को संस्कारित करने की प्रक्रिया है। यही कारण है कि भारत में बच्चे की पहली शिक्षा 'ॐ' लिखवाकर शुरू होती है और विद्या प्राप्ति से पहले मां सरस्वती का स्मरण किया जाता है। आज जब दुनिया तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आर्थिक प्रतिस्पर्धा की बात कर रही है, तब भारतीय दर्शन यह बताता है कि ज्ञान तभी सार्थक है जब उसमें नैतिकता, संवेदना और संस्कृति भी शामिल हो।

मुस्लिम बहुल इंडोनेशिया ने दिया बड़ा संदेश– इंडोनेशिया की लगभग 88 प्रतिशत आबादी मुस्लिम है, जबकि हिंदुओं की संख्या मात्र तीन प्रतिशत के आसपास है। इसके बावजूद वहां की सरकार द्वारा अमेरिका को मां सरस्वती की प्रतिमा भेंट करना यह सिद्ध करता है कि सभ्य समाज ज्ञान को किसी मजहबी सीमा में नहीं बांधता। इंडोनेशियाई दूतावास ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह प्रतिमा शिक्षा, सांस्कृतिक संवाद और जन-संपर्क को मजबूत करने का माध्यम है। यह वही दृष्टि है जिसने बाली में हिंदू सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखा है।

प्रतिमा का निर्माण बाली के पांच मूर्तिकारों ने किया, जिनका नेतृत्व आई न्योमन सुदरवा ने किया था। प्रतिमा में देवी सरस्वती के चार हाथ दर्शाए गए हैं। एक हाथ में अक्षमाला है, जोकि निरंतर सीखने की प्रक्रिया का प्रतीक है। वीणा कला और संस्कृति का प्रतीक है, जबकि पांडुलिपि ज्ञान के स्रोत को दर्शाती है। यह संपूर्ण संरचना भारतीय दर्शन और बाली कला का अद्भुत संगम है।

वॉशिंगटन में खड़ी सरस्वती का सांस्कृतिक संदेश– वॉशिंगटन डीसी में भारतीय दूतावास और महात्मा गांधी की प्रतिमा के सामने स्थापित मां सरस्वती की प्रतिमा आज कहना चाहिए कि यह विश्व राजनीति और वैश्विक संस्कृति के केंद्र में भारतीय ज्ञान परंपरा की उपस्थिति का प्रतीक है। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति ने प्रतिमा के अनावरण के समय कहा था कि यह लोगों के दिल और दिमाग खोलने का काम करेगी तथा नफरत और गलतफहमियों को दूर करेगी। निश्चित ही यह कथन आज के समय में अत्यंत महत्वपूर्ण है, जब दुनिया धार्मिक कट्टरता, वैचारिक संघर्ष और सांस्कृतिक टकराव से जूझ रही है। वहीं, मां सरस्वती का संदेश संवाद, सह-अस्तित्व और ज्ञान का संदेश है। यही कारण है कि यह प्रतिमा अमेरिका जैसे आधुनिक राष्ट्र में भी आकर्षण का केंद्र बन रही है।

भारत से विश्व तक फैली सरस्वती परंपरा– यहां यह भी बताना उचित होगा कि मां सरस्वती की उपासना सिर्फ भारत तक सीमित नहीं रही है। नेपाल, म्यांमार, कंबोडिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया, जापान, चीन श्रीलंका, मारीशस, सूरीनाम, गुयाना, फिजी, त्रिनिदाद और टोबैगो, डोमिनिका, जमैका जैसे कुछ अन्य कैरेबियन देश और तिब्बत तक विभिन्न रूपों में विद्या देवी की परंपरा दिखाई देती है।कुछ विद्वान रोमन देवी 'मिनर्वा' या यूनानी देवी 'एथेन' को ज्ञान, कला व युक्ति की देवी के रूप में भारतीय सरस्वती से समीकृत करते हैं।

जापान में मां सरस्वती 'बेंजाइतेन' के रूप में पूजी जाती हैं और उन्हें ज्ञान, कला तथा समृद्धि की देवी माना जाता है। थाईलैंड में कलाकार और संगीतज्ञ 'सुरसवदी' के रूप में उनकी वंदना करते हैं। म्यांमार में 'थुरथदी' के रूप में विद्या देवी का उल्लेख मिलता है। कंबोडिया के अंकोरवाट मंदिरों में भी सरस्वती से संबंधित प्रतिमाएं और रूपांकन मौजूद हैं। वस्तुतः यह तथ्य बताता है कि भारतीय संस्कृति की सीमाएं बहुत विस्तारित हैं, उसने विश्व सभ्यता को गहराई से प्रभावित किया है।

शिक्षा ही राष्ट्र की वास्तविक शक्ति– इतिहास साक्षी है कि जिन सभ्यताओं ने शिक्षा और संस्कृति को महत्व दिया, वही लंबे समय तक टिक सकीं। भारत ने दुनिया को नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय दिए। भोजशाला उसी गौरवशाली परंपरा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को संकोच से नहीं, बल्कि आत्मविश्वास के साथ दुनिया के सामने रखे। भोजशाला का प्रश्न इसी आत्मविश्वास से जुड़ा है। यदि इंडोनेशिया जैसा मुस्लिम बहुल देश मां सरस्वती को वैश्विक ज्ञान की प्रतीक मान सकता है, तो भारत को भी अपनी जड़ों से जुड़ने में संकोच नहीं होना चाहिए।

सभ्यता का भविष्य ज्ञान से तय होगा– धार की भोजशाला और वॉशिंगटन में खड़ी मां सरस्वती की प्रतिमा मानो एक ही संदेश दे रही हैं और वह यह है कि सभ्यताओं का भविष्य हथियारों से नहीं, ज्ञान से तय होता है। आज दुनिया जिस सांस्कृतिक अस्थिरता और वैचारिक संघर्ष से गुजर रही है, उसमें भारतीय ज्ञान परंपरा का यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है कि शिक्षा मनुष्य को बुद्धिमान बनाने के साथ ही विनम्र और संवेदनशील भी बनाती है।

वस्तुतः भारत की सनातन परंपरा ने सदियों पहले यह स्थापित कर दिया था कि 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् वही विद्या है, जो मनुष्य को मुक्त करे। भोजशाला का ऐतिहासिक सत्य और वॉशिंगटन में स्थापित मां सरस्वती की प्रतिमा इसी सनातन ज्ञानधारा की कहना चाहिए कि आज वैश्विक गूंज हैं।

मुद्दा

एकता शर्मा

(स्वतंत्र लेखक)

जींस, जिद और जिंदगी की जकड़न

इंदौर की घटना केवल एक आत्महत्या नहीं, बदलते समाज और टूटते पारिवारिक संवाद की भी कहानी है। इंदौर में हुई गौरी की आत्महत्या की घटना केवल एक परिवार की निजी त्रासदी नहीं, बल्कि भारतीय समाज के भीतर लगातार गहराते उस तनाव की तस्वीर भी है, जो आज अनेक घरों में सास-बहू के रिश्तों के बीच दिखाई देता है। एक युवा महिला का केवल जींस पहनने को लेकर विवाद के बाद फांसी लगा लेना यह संकेत देता है कि मामला केवल कपड़ों का नहीं था। इसके पीछे भावनात्मक दबाव, घरेलू तनाव, अपेक्षाओं का बोझ, पीढ़ियों का टकराव और संवादहीनता जैसी कई परतें मौजूद थीं।

भारतीय परिवार व्यवस्था में विवाह केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं माना जाता, बल्कि दो परिवारों का मेल समझा जाता है। लेकिन, इसी व्यवस्था में अक्सर नई बहू से यह उम्मीद भी की जाती है कि वह नए घर की परंपराओं में बिना सवाल किए खुद को पूरी तरह ढाल ले। कई बार यह अपेक्षा इतनी कठोर हो जाती है कि लड़की अपनी पसंद, आदतों और व्यक्तित्व को दबाने लगती है। कपड़ों को लेकर विवाद इसी मानसिकता का एक हिस्सा है। जींस पहनना आज शहरों में सामान्य बात है, लेकिन कई परिवारों में इसे अभी भी संस्कार और मर्यादा से जोड़कर देखा जाता है।

दूसरी ओर नई पीढ़ी की लड़कियां शिक्षा, स्वतंत्र सोच और आत्मसम्मान के साथ बड़ी हो रही हैं। वे अपने जीवन के छोटे-छोटे निर्णयों में भी अपनी पसंद को महत्व देना चाहती हैं। जब ऐसी सोच का सामना पुराने सामाजिक ढांचे से होता है, तब घर के भीतर टकराव पैदा होता है। समस्या तब गंभीर हो जाती है, जब बातचीत की जगह ताने, अपमान और मानसिक दबाव ले लेते हैं। इंदौर की घटना में मायके पक्ष ने दहेज को लेकर ताने और प्रताड़ना के आरोप लगाए हैं। यदि परिवार में पहले से तनाव मौजूद था, तो जींस पहनने को लेकर हुआ विवाद संभवतः केवल अंतिम चिंगारी साबित हुआ।

घरेलू रिश्तों में लगातार होने वाले छोटे-छोटे अपमान कई बार व्यक्ति को भीतर से तोड़ देते हैं। खासकर विवाह के बाद लड़की अक्सर ऐसे माहौल में होती है, जहां वह अपने माता-पिता से दूर, नए लोगों के बीच खुद को साबित करने की कोशिश कर रही होती है। ऐसे समय उसे सहयोग, अपनापन और भावनात्मक सुरक्षा की जरूरत होती है। लेकिन इस पूरे घटनाक्रम में केवल सास को दोषी ठहराना भी पर्याप्त नहीं होगा।

भारतीय परिवारों में सास की भूमिका भी कई बार दबावों से भरी होती है। एक महिला जिसने स्वयं वर्षों तक पारिवारिक नियमों, जिम्मेदारियों और समझौतों के बीच जीवन बिताया हो, वह अक्सर वही अपेक्षाएं अगली पीढ़ी से भी करने लगती है। कई सासों को यह लगता है कि यदि उन्होंने अपने समय में सीमाओं का पालन किया, तो नई बहू को भी वैसा ही करना चाहिए। यहां समस्या व्यक्ति से ज्यादा सोच की विरासत की होती है। सास-बहू के रिश्ते में सबसे बड़ी कमजोरी अक्सर 'अधिकार' और 'स्वीकार' के बीच संतुलन न बना पाना होती है। सास को

लगता है कि घर की व्यवस्था और परंपरा बनाए रखना उसकी जिम्मेदारी है, जबकि बहू अपने अस्तित्व और सम्मान को बचाए रखना चाहती है। यदि दोनों पक्ष संवाद की जगह अहंकार या आरोपों का रास्ता चुनते हैं, तो रिश्ते धीरे-धीरे तनावपूर्ण हो जाते हैं। इस पूरे मामले में पति की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। भारतीय परिवारों में अक्सर पति दो रिश्तों के बीच संतुलन बनाने में असफल रहता है। कई पुरुष घरेलू विवादों को 'महिलाओं का मामला' मानकर किनारा कर लेते हैं। जबकि, वास्तव में वही व्यक्ति दोनों पक्षों के बीच सबसे मजबूत संवाद का माध्यम बन सकता है। यदि घर में लगातार तनाव हो और पति संवेदनशील भूमिका न निभाए, तो स्थिति और बिगड़ सकती है।

आज सामाजिक बदलाव बहुत तेजी से हो रहे हैं, लेकिन पारिवारिक मानसिकता उसी गति से नहीं बदल पा रही। लड़कियां आधुनिक जीवनशैली के साथ आगे बढ़ रही हैं, जबकि कई परिवार अब भी पारंपरिक नियंत्रण वाली सोच में जी रहे हैं। यही असंतुलन घरों में टकराव पैदा कर रहा है। समस्या केवल जींस पहनने या पहनाने की नहीं है, बल्कि यह तय करने की है कि क्या विवाह के बाद किसी महिला की व्यक्तिगत पसंद का अधिकार समाप्त हो जाता है? इसके साथ ही यह भी सच है कि आज की युवा पीढ़ी में भावनात्मक सहनशीलता पहले जैसी नहीं रह गई है। छोटी उम्र में विवाह, मानसिक दबाव, अकेलापन और सोशल मीडिया से बनी आदर्श जीवन की कल्पनाएं कई बार युवाओं को वास्तविक परिस्थितियों से जूझने में कमजोर बना देती हैं। हर विवाद का अंत आत्महत्या नहीं होना चाहिए। परिवारों के साथ-साथ युवाओं को भी मानसिक मजबूती, संवाद और धैर्य सीखने की जरूरत है।

इस घटना ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा किया है कि क्या हमारे घर वास्तव में भावनात्मक रूप से सुरक्षित स्थान बन पाए हैं? यदि एक बहू अपने कपड़ों को लेकर हुई डांट के बाद खुद को इतना अकेला महसूस करने लगे कि जीवन खत्म कर ले, तो यह केवल एक व्यक्ति की नहीं, पूरे सामाजिक ढांचे की विफलता मानी जाएगी। सास-बहू का रिश्ता संघर्ष का नहीं, सहयोग का रिश्ता हो सकता है, यदि दोनों पक्ष एक-दूसरे को बदलने के बजाय समझने की कोशिश करें। परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन केवल नियमों से नहीं, बल्कि संवेदनशील व्यवहार और खुले संवाद से बनता है। परिवार तभी मजबूत बनते हैं, जब वहां डर नहीं, बल्कि सम्मान और अपनापन मौजूद हो।

दिगंबर जैन समाज धार में मुलनायक 1008 श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म तप एवं निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया

धार। दिगंबर जैन समाज धार में परम पूज्य क्षुल्लिका 105 चंद्रमति माताजी के पावन सानिध्य में भगवान शांतिनाथ जी का जन्म तप व निर्वाण कल्याणक महोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आराधना दीदी का भी सानिध्य प्राप्त हुआ इस शुभ अवसर पर श्रीजी विराजमान करने व प्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य राजेंद्र बांझल परिवार को मिला। मूल नायक शांतिनाथ भगवान के अभिषेक व शांति धारा करने का सौभाग्य सतीश युगांक लुहाड़िया को मिला। साथ ही पाण्डुक शीला पर भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा को विराजमान करने व शांति धारा करने का सौभाग्य उत्तम जी काला परिवार एवं अजय लुहाड़िया परिवार को प्राप्त हुआ। निर्वाण लाडू चढ़ाने का सौभाग्य मंडल विधान पूजन के पुण्यार्जक परिवार नरेश कुमार, श्रेणिक कुमार गंगवाल को मिला। निर्वाण लाडू बनाने वाले पुण्यार्जक परिवार विमल ,प्रवीण, नवीन गोधा परिवार रहे। विधान पूजन विधानाचार्य पंडित भरत शास्त्री इंदौर व विद्वान पंडित विमलचंद जैन के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। सायंकाल में विधान पुण्यार्जक गंगवाल परिवार के निवास स्थान से श्री जी की आरती शोभायात्रा के माध्यम मंदिर जी में ला कर आरती संपन्न की गई तत्पश्चात भगवान शांतिनाथ के जीवन चरित्र पर एक लघु नाट्य नाटिका भी प्रस्तुत की गई। जानकारी मीडिया प्रभारी संजय गंगवाल ने दी।

मुलताई में फिर महसूस हुए भूकंप के झटके, 3.9 तीव्रता का भूकंप आधिकारिक रूप से दर्ज

रात 9.30 और 9.45 बजे तेज धमाकों के साथ हिली धरती, लोग घरों से बाहर निकले, राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र ने की पुष्टि

बैतूल/मुलताई। पवित्र नगरी मुलताई सहित आसपास के क्षेत्र में शुक्रवार रात एक बार फिर धरती में तेज कंपन और धमाकों जैसी घटनाओं ने लोगों को दहशत में डाल दिया। रात लगभग 9.30 बजे पहला जोरदार धमाका सुनाई दिया, जिसके साथ ही लोगों ने जमीन में कंपन महसूस किया। इसके बाद 9.45 बजे पुनः तेज झटका महसूस हुआ, जबकि लगभग 9.50 बजे हल्के धमाके और कंपन की भी जानकारी सामने आई। अचानक हुए इन घटनाक्रमों के बाद नगर के कई क्षेत्रों में लोग घबराकर अपने घरों से बाहर निकल आए। अब इन घटनाओं को लेकर आधिकारिक पुष्टि भी सामने आ गई है। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (एनसीएस) के अनुसार 16 मई 2026 की रात 9 बजकर 31 मिनट 02 सेकंड पर बैतूल जिले के मुलताई क्षेत्र में 3.9 तीव्रता का भूकंप दर्ज किया गया। जिला जनसंपर्क कार्यालय द्वारा जारी की गई जानकारी में बताया गया कि भूकंप का केंद्र बैतूल जिले के आसपास था तथा इसकी गहराई जमीन से लगभग 10 किलोमीटर नीचे दर्ज की गई।

तीन माह से लगातार महसूस हो रहे कंपन और धमाके- नगरवासियों के अनुसार बीते लगभग तीन माह से मुलताई क्षेत्र में लगातार धमाकों और कंपन जैसी घटनाएं महसूस की जा रही हैं। इन घटनाओं के चलते क्षेत्र में भय और असमंजस का वातावरण बना हुआ है। ताप्ती वार्ड निवासी विजय उबनारे ने बताया कि शुक्रवार रात 9.30 बजे हुए तेज धमाके के बाद पूरा क्षेत्र हिलता हुआ महसूस हुआ और लोग डरकर घरों से बाहर निकल आए। इसके बाद भी देर रात तक

हल्के कंपन और आवाजें महसूस होती रहीं। स्थानीय लोगों का कहना है कि लगातार हो रही इन घटनाओं को लेकर प्रशासन की ओर से अब तक स्पष्ट जानकारी सामने नहीं आई थी। कई लोग इन कंपन और धमाकों को नरखेड़, घाट बिरोली एवं आसपास के क्षेत्रों में संचालित ब्लास्टिंग गतिविधियों से जोडक़र देख रहे थे, जबकि कुछ नागरिक भूकंप की आशंका व्यक्त कर रहे थे। अब राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र की पुष्टि के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि शुक्रवार रात महसूस किए गए झटके भूकंप के थे।

प्रशासन ने कहा, किसी नुकसान की सूचना नहीं- स्थानीय प्रशासन के अनुसार फिलहाल किसी प्रकार के जानमाल के नुकसान की सूचना प्राप्त नहीं हुई है। प्रशासन ने बताया कि जिले के किसी भी क्षेत्र से घायल होने या संपत्ति को क्षति पहुंचने की जानकारी सामने नहीं आई है।हालांकि लगातार महसूस हो रहे झटकों के कारण लोगों में चिंता बनी हुई है। नागरिकों का कहना है कि प्रशासन और भूवैज्ञानिक विशेषज्ञों को समय-समय पर आमजन को सही जानकारी उपलब्ध करानी चाहिए, ताकि अफवाहों पर रोक लग सके और लोग किसी भी आपात स्थिति में सतर्क रह सकें।

लोगों ने मांगी स्पष्ट जानकारी और वैज्ञानिक जांच- क्षेत्रवासियों का कहना है कि यदि क्षेत्र में लगातार भूकंपीय गतिविधियां हो रही हैं, तो प्रशासन को इसे गंभीरता से लेते हुए विशेषज्ञों की टीम से विस्तृत जांच करानी चाहिए। लोगों ने मांग की है कि प्रशासन यह स्पष्ट करें, कि इन भूकंपों और कंपन के पीछे वास्तविक कारण क्या हैं, क्या भविष्य में किसी बड़े खतरे की संभावना है तथा नागरिकों को किन सावधानियों का पालन करना चाहिए। लगातार महसूस हो रहे कंपन और धमाकों ने मुलताई क्षेत्र में चिंता और चर्चा दोनों को बढ़ा दिया है। ऐसे में अब लोगों की निगाहें प्रशासन और विशेषज्ञों की आगामी कार्रवाई पर टिकी हुई हैं।

जगन्नाथ संस्कृति उड़ीसा के अनुयायियों द्वारा प्रभात फेरी

भोपाल। श्री श्री श्री सत्य अनंत माधवाय नमः विश्व सनातन धर्म - श्री महाकालेश्वर मंडल द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत कथा ,जगन्नाथ संस्कृति, भविष्य मलिका पुराण, श्री विष्णु महायज्ञ,मानव कल्याण के लिए के लिए आयोजित कथा में कथा वाचक व्यासःजगन्नाथ संस्कृति के विशारद विद्वान परम पूज्य पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र जी के मुखारविंद से होगा। जिसमें साक्षात् महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी के सानिध्य में 21, मई तक कथामृत का रसास्वादन करने के लिए आप सह-परिवार सादर आमंत्रित है। इस जगन्नाथ संस्कृति की कथा में विशेष कर भविष्य मालिका पुराण में वर्णित आगामी प्रकृति से मानव जीवन को खतरों बचाने के आगाह करने का लक्ष्य मानव कल्याण के लिए किया जा रहा है।इस आयोजन में श्रद्धालुओं को अधिकांश नवीन प्रवचन सुनने को मिलेंगे। जिससे अभी तक सुना ही नहीं गया है। इसी संदर्भ में जगन्नाथ संस्कृति की मातृशक्ति, युवक, बच्चे एवं नागरिकगण करीबन 40 सदस्यों की टोली प्रतिदिन उत्साह के साथ

इन्द्रविहार पंचवटी कालोनी में धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत नागरिकों को अनेक गीत गाते कथा में आने के लिए प्रभात फेरी निकाल कर कथा का बुलावा दे रहे हैं। उल्लेखनीय है कि आयोजन श्रीमती नीरजा गोलानी खूबचदानी एवं पंकज खूबचदानी के तत्वावधान में किया जा रहा है। त्रिकाल संध्या प्रचार प्रसार संगठन एवं खूबचदानी परिवार ने नागरिकों से कार्यक्रम में शामिल होने का आग्रह किया है। ज्ञातव्य है कि उक्त आयोजन 21 मई तक सायं 5 से रात्रि 8 बजे तक कथा स्थल भोपाल गर्ल्स स्कूल, पंचवटी कॉलोनी एयरपोर्ट रोड, लालघाटी, भोपाल में संपन्न होगा।

राजा भरत को मोह से हिरन की योनि मिली अतः श्रद्धालु भक्त जनों सदा माधव माधव भजो, लक्ष्य है भक्तों का प्रमोशन हो : डॉ. काशीनाथ मिश्र उड़ीसा

(हीरालाल गोलानी)

भोपाल। राजा भरत ने अपना राजपाठ छोड़कर वन में तपस्या करने चले गए। वहां उन्हें एक नवजात हिरन मृगशावक से अत्यधिक मोह और आसक्ति हो गई। उनका संम्पूर्ण ध्यान भगवान् की भक्ति से मृगशावक की देखभाल, चिंतन व्याकुलता के कारण अंतिम समय में भगवान् का स्मरण न होकर मृगशावक का स्मरण करते देह त्यागी। इसी कारण राजा भरत को हिरन की योनि मिली। शास्त्रों में वर्णित है कि 'अंत मति हो गति' यानी अंत समय जैसी सोच होगी वैसी गति मिलेगी। श्रद्धालु भक्तजनों हमारा लक्ष्य है कि भक्तों को कथा का फल मिले। उनका प्रमोशन हो। इसलिए श्रद्धालु भक्त जनों माधव माधव भजो। ताकि मनुष्य को उत्तम गति मिल सके। उक्त उद्गार जगन्नाथ संस्कृति के विशारद विद्वान पंडित डॉ काशीनाथ जी मिश्र ने आयोजक खूबचदानी परिवार द्वारा आयोजित भोपाल स्कूल पंचवटी परिसर में आयोजित श्रीमद्भागवत पुराण कथा के अवसर पर कहें। इस अवसर पर भारी संख्या में मातृशक्ति एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। आपने उपस्थित जनों से कहा कि यदि कोई बात समझ नहीं पाते तो आप प्रश्न कर सकते हैं। क्योंकि हमारा लक्ष्य है कि भक्तों को कथा का लाभ मिले ।उनका प्रमोशन हो। कथा को विस्तार देते हुए जगन्नाथ संस्कृति के विशारद विद्वान श्री मिश्र जगन्नाथ पुरी उड़ीसा के समस्त देवी-देवताओं जय जयकार करते हुए कहा कि पूर्व जन्म के कर्म का फल इस जन्म में मिलता है। मानव मात्र को सुख दुःख में एक समान रहना चाहिए।एक बंधन में बंधे,वो बंधन है श्रीकृष्ण का, ठाकुर जी का, हमारा सबसे बड़े मित्र है प्रभु। प्रभु में लगन लगाएं।कई ऐसे लोग हैं जो भगवान् को बन्धु ,

सखा बना लेते हैं। उनका सीधा संबंध उनसे हो जाता है। कई ऐसे भी भक्त हैं जो भगवान् ठाकुर जी साथ लेकर सोते हैं।मोह माया छोड़कर ठाकुर जी में मन लगाओ।जो एक भगवान् कृष्ण के बंधन में बंधे हुए हैं उनको कोई दुःख नहीं होता। प्रत्येक मानव को ईश्वर के प्रति निष्ठा समर्पण का भाव जाग्रत करना पड़ेगा तभी मानव का प्रमोशन होगा ।मानव को ईश्वर के समीपस्थ रहनते पुनः जन्म नहीं लेना पड़ता। ईश्वर की समीपस्था से मनुष्य के विचार सुन्दर बनते हैं। तथा उनको मोक्ष की भी प्राप्ति होती है। आपने भक्त श्रद्धालुओं को बताया कि श्रीमद्भागवत कथा मनुष्य ही नहीं जीव जन्तु भी सुनते हैं।सभी प्राणी मात्र ईश्वर स्वरूप है। आत्मा सभी प्राणियों में विद्यमान है। इसलिए मैं की भावना को त्यागना पड़ेगा।मन की शुद्धि समर्पण की भावना भगवान् कृष्ण के प्रति रखें। सच्चिदानंद स्वरुप आत्मा में कोई भेद नहीं है।सब में समान हैं। मनुष्य को पांचों इंद्रियों पर नियंत्रण रखना होगा।तभी मानव जीवन का कल्याण होगा। श्री मिश्र जी ने दासी पुत्र महर्षि नारद के संबंध में विस्तार से सारगर्भित उद्बोधन दिया। वहीं आपने जन-मानस को कहा कि आज सभी जगह ग्रह दोष सब पितर दोष से कोई बच नहीं रहा है। आपने इनके उपाय उपायों को बताते हुए कहा कि पूर्व की तरफ सात बार सूर्य का जल का आर्ध दें। इससे ग्रह दोष शांत होंगे। वहीं पितर दोष के लिए दक्षिण दिशा में तीन बार जल से आर्ध दें। इससे पितर देव शांत होंगे। आपने कथा को विस्तार देते हुए कहा कि जगन्नाथ संस्कृति सबसे प्राचीन संस्कृति है। सनातन का मूल अर्थ माधव में समाया हुआ है।

कलयुग में सबसे प्रभावशाली नाम माधव है। कृष्ण है।राम है।इसका मनन करना सबसे श्रेष्ठ माना गया है। आपने भगवान् भोलेनाथ के अंशावतार आदि शंकराचार्य का उल्लेख करते कहा कि उन्होंने चारों धिम की प्रतिष्ठा करने के उपरांत जगन्नाथ जी गए। तो उन्होंने कहा कि जगन्नाथ जी आप मेरे प्रभु है। माधव नाम ही कलियुग में नागरिकों का उद्धार करेगा। सत्संग से भगवान् प्राप्ति होगी। सनातन का मूल केवल माधव रहेगा। राजा उत्तापनाद की पत्नी सुरूचि धुर्वे की सोतेली के व्यंग वाक्य से छुब्द होकर धुर्वे ने माधव भक्ति से परमपद प्राप्त कर लिया था।ऐसी शक्ति है माधव नाम में।सदा जपिए माधव,माधव। धर्म

डॉ काशीनाथ मिश्र जी कहा कि जो धर्म बेचते हैं। उन्हें नर्क मिलना निश्चित है।

आज बहुत चुनौतियां एवं भविष्य मालिका पुराण

भविष्य मालिका में लिखा है कि पति पत्नी में अविश्वास, पिता, पुत्र में स्वार्थ संबंध,पाप की कामना, समय भी परिर्वतनशील हो गया है। कलयुग का अंत निकट है। ,64 बीमारियां विश्व में फैलेगी।चारों तरफ लाशें ही लाशें होगी। बहुत लोगों की मौत होगी। गांव के गांव साफ हो जाएंगे। दवाईयां का अभाव हो जाएगा। इस स्वरूप युक्रेन रूस युद्ध, अमेरिका, इजरायल, ईरान युद्ध ,मैं आपको डरा या भयभीत नहीं कर रहा हूं।मैं आपको सचेत कर रहा हूं।दो अलग-अलग विचार धारा वाले देश अमेरिका एवं चीन क्या यह नहीं सोच रहे हैं कि भारत पर हमला करें?। वहीं पाकिस्तान भारत पर हमला करेगा। जिसमें तुर्की भी साथ होगा।यह परिवर्तन का समय है। इसलिए मानव मात्र को धर्म की नौका पर सवार होना ही पड़ेगा।भविष्य मालिका में ही कल्कि अवतार का उल्लेख किया गया है। वहीं कोई भी आपदा आए तो भगवान का स्मरण करें।माधव ही माधव। इसके साथ ही त्रिकाल संध्या को जीवन शैली में अपनाएं। कथा के प्रारंभ, मध्यांतर एवं अंत में गीत जगन्नाथ तू न संभाले तो कौन सभाले।

35 फीट गहरे कुएं में गिरी कार, तीन घायल, दो के हाथ-पैर टूटे

मोड़ पर अनियंत्रित होने से हुआ हादसा, जिला अस्पताल में उपचार जारी

बैतूल। भैंसदेही थाना क्षेत्र में शनिवार देर रात भैंसदेही-आठनेर रोड पर गुदगांव के पास एक तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर 35 फीट गहरे कुएं में जा गिरी। इस हादसे में कार सवार तीन युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल बैतूल रेफर किया गया है। बताया जा रहा है कि दो युवकों को हाथ-पैर टूट गए। यह हादसा रात करीब 1 बजे हुआ। बताया गया है कि कार में सवार युवक एक कार्यक्रम में शामिल होने के बाद अमरावती लौट रहे थे। गुदगांव के पास मोड़ पर कार अनियंत्रित हो गई। इसके बाद वह लगभग 10 फीट ढलान पार करते हुए सडक़ से करीब 20 फीट दूर स्थित कुएं में जा गिरी। हादसे के बाद कार सवार एक युवक ने कड़ी मशक्कत के बाद रात करीब 3 बजे कुएं से बाहर निकलने में सफलता पाई। उसने खेतों में सो रहे स्थानीय ग्रामीणों को आवाज लगाकर मदद मांगी। ग्रामीणों ने तत्काल डायल 112 और पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही भैंसदेही पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की सहायता से बचाव अभियान शुरू किया गया।

करीब पांच घंटे के बचाव अभियान के बाद कार में फंसे दो अन्य युवकों को भी बाहर निकाला जा सका। कुएं में लगभग तीन फीट पानी था, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया। इस हादसे में एक युवक का हाथ टूट गया, जबकि दूसरे के पैर में गंभीर चोट आई है। एक युवक कार के गेट में फंसा हुआ था, जिसे काफी प्रयासों के बाद बाहर निकाला गया। घायलों की पहचान राहुल पिता गजानंद (36) निवासी अडवी, जिला अमरावती; कृष्णा बोकदे पिता प्यारेलाल (36) निवासी कन्नौद और सत्यम तोमर निवासी मुरैना के रूप में की गई है। बचाव कार्य में एसआई आशीष कुमरे, आरक्षक परसराम लोखंडे, आरक्षक नरेंद्र, अमर सिंह चौहान, शैलेंद्र मोरे, अशोक अडलक सहित गुदगांव और धामनगांव के ग्रामीणों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खेत मालिक श्री मस्की ने भी राहत कार्य में सहयोग किया।

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा की अध्यक्षता में स्वास्थ्य एवं महिला बाल विकास विभाग की संयुक्त समीक्षा बैठक सम्पन्न

रायसेन (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा की अध्यक्षता में स्वास्थ्य विभाग और महिला बाल विकास की योजनाओं, अभियानों तथा गतिविधियों की संयुक्त समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। उन्होंने यूविन पोर्टल पर इन्ट्री, हाई रिस्क प्रेगनेंट वुमन का चिन्हांकन और पंजीयन, सीडीआर, पीएमपेएसवाय भुगतान, आयुष्मान भारत, टीबी मुक्त भारत अभियान सहित अन्य स्वास्थ्य अभियानों तथा टीकाकरण की प्रगति की विस्तृत समीक्षा करते हुए अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा बीएमओ को निर्देश दिए गए कि हाई रिस्क प्रेगनेंट वुमन का चिन्हांकन कर सभी का पोर्टल पर शत-प्रतिशत पंजीयन किया जाए और

नियमित स्वास्थ्य जांच भी की जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि महिला के पंजीयन से प्रसव होने तक नियमित मॉनीटरिंग की जाए, जिससे गर्भवती माताओं के प्रसव हेतु कोई परेशानी न हो। उन्होंने सभी बीएमओ को अपने-अपने विकासखण्ड में नियमित समीक्षा और प्रभावी मॉनीटरिंग के निर्देश दिए और सभी एएनसी जांच की समीक्षा के लिए भी कहा। इसी प्रकार सीडीआर रिपोर्टिंग की भी समीक्षा की। बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने पीएसवाय भुगतान की समीक्षा के दौरान विकासखण्डवार लंबित प्रकरणों की जानकारी लेते हुए दो से तीन महीने की अवधि में भी भुगतान नहीं होने पर नाराजगी व्यक्त कर सभी बीएमओ को निर्देशित किया भुगतान की कार्यवाही प्राथमिकता से की जाए।

इसी प्रकार आयुष्मान भारत योजना की विगत दो सप्ताह की प्रगति की जानकारी लेते हुए निर्देश दिए कि सभी पात्र व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड बनाया जाना सुनिश्चित करें। इसी प्रकार टीबी मुक्त भारत अभियान की भी समीक्षा करते हुए प्रतिदिन स्क्रीनिंग, जांच, नियमित उपचार और जागरूकता गतिविधियों की जानकारी ली गई। बैठक में मलेरिया के प्रति जनजागरूकता फैलाने के संबंध में भी सभी बीएमओ को निर्देश दिए गए। सीएम हेल्पलाईन शिकायतों की भी समीक्षा करते हुए सीएमएचओ, सिविल सर्जन और बीएमओ को सीएम हेल्पलाईन शिकायतों का संतुष्टिपूर्ण निराकरण कराने के निर्देश दिए गए। बैठक में सीएमएचओ डॉ दिनेश खत्री द्वारा स्वास्थ्य अभियानों तथा योजनाओं की प्रगति से अवगत कराया गया।

इसी प्रकार महिला बाल विकास विभाग की गतिविधियों और योजनाओं की समीक्षा करते हुए कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने महिला बाल विकास विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि नया सत्र वर्ष 2026-27 प्रारंभ हो चुका है। जिसमें प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना, लाड़ली लक्ष्मी हितग्राही योजना का लक्ष्य के अनुसार शत-प्रतिशत पंजीयन कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने आंगनबाड़ी में बच्चों शत-प्रतिशत उपस्थिति, टीएचआर वितरण समय पर करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि एनआरसी पूरी क्षमता के साथ संचालित रहें, इसके लिए सीडीपीओ, सुपरवाइजर और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सुनिश्चित करें।

उन्होंने कहा कि जिले में विगत महीनों में अति कुपोषित बच्चों के स्वास्थ्य सुधार में बेहतर कार्य हुआ है, लेकिन कुछ दिनों से संयुक्त भ्रमण नहीं होने से कार्यगति धीमी हुई है। उन्होंने कहा कि जो बच्चे कुपोषण की श्रेणी से बाहर आए हैं, उन सभी का सत्यापन कराएं। इसी प्रकार मातृ वंदना योजना में भी नवीन लक्ष्य के अनुरूप कार्य करने के निर्देश दिए गए।

संक्षिप्त समाचार

जिले में मतदाता सूची के वार्षिक पुनरीक्षण के प्रेक्षण हेतु सेवानिवृत्त आईएएस श्री शशिभूषण सिंह प्रेक्षक नियुक्त

रायसेन (निप्र)। मप्र राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा नगरीय निकायों एवं पंचायतों की फोटोयुक्त मतदाता सूची के वार्षिक पुनरीक्षण 2026 की कार्यवाही के प्रेक्षण हेतु जिला रायसेन के लिए श्री शशि भूषण सिंह सेवानिवृत्त आईएएस को प्रेक्षक नियुक्त किया गया है। मप्र राज्य निर्वाचन आयोग के कार्यक्रमानुसार नगरीय निकायों एवं पंचायतों की फोटोयुक्त मतदाता सूची का पुनरीक्षण के पर्यवेक्षण हेतु प्रेक्षक श्री शशि भूषण सिंह दिनांक 22 मई से 26 मई 2026 के मध्य जिले में भ्रमण पर रहेंगे।

फोटोयुक्त मतदाता सूची का प्रारूप प्रकाशन के संबंध में स्टैंडिंग कमेटी की बैठक सम्पन्न

रायसेन (निप्र)। नगरीय निकायों एवं पंचायतों की फोटोयुक्त मतदाता सूची का पुनरीक्षण-2026 के संबंध में जिला स्तरीय स्टैंडिंग कमेटी की बैठक उप जिला निर्वाचन अधिकारी एवं अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट में सम्पन्न हुई। बैठक में उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री मनोज उपाध्याय ने राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों को अवगत कराया कि शुक्रवार को नगरीय निकायों एवं पंचायत की फोटोयुक्त प्रारूप मतदाता सूची का प्रकाशन संबंधित विहित स्थलों पर किया गया है। उन्होंने कहा कि राजनैतिक दल बीएलए नियुक्त कर मतदाता सूची पुनरीक्षण में सहयोग करें। मतदाता सूची पुनरीक्षण हेतु दावे-आपत्तियां प्राप्त करना प्रारंभ हो गया है। राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों को प्रारूप मतदाता सूची की प्रतियां निःशुल्क प्रदाय की गई।

मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक पाथाखेड़ा में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में 690 मरीजों का किया उपचार

बैतूल (निप्र)। जनजातीय कार्य मंत्रालय भारत सरकार के माध्यम से जिले में 20 स्वास्थ्य शिविर लगाने की प्राप्त स्वीकृति के परिपालन में 15 मई को मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक वार्ड-14 पाथाखेड़ा में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ नगरपालिका परिषद सारणी के अध्यक्ष श्री किशोर बरदे एवं डब्यूकान सीएल पाथाखेडा के मुख्य प्रबंधक श्री संजय मिश्रा द्वारा किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.मनोज हुरमाडे ने बताया कि शिविर में कुल 690 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उपचार किया गया। शिविर में जिला चिकित्सालय के विशेषज्ञ चिकित्सकों स्त्री रोग, नाक कान गला रोग, मानसिक रोग, दंत रोग के द्वारा चिकित्सा सेवा दी गई। शिविर में नगर पालिका उपाध्यक्ष श्री जगदीश पंवार, श्री रंजीत सिंह, खंड चिकित्सान अधिकारी डॉ संजीव शर्मा, संस्था ग्राम भारती मंडल अध्यक्ष श्रीमती भारती अग्रवाल एवं अन्य जनप्रनिधिगण एवं गणमान्य नागरिक , स्वास्थ्य स्टॉफ उपस्थित रहे। उन्होंने बताया कि 18 मई को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मुलताई में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाएगा। सीएमएचओ डॉ.हुरमाड़े ने आमजन से स्वास्थ्य शिविर का लाभ लेने की अपील की है।

ग्राम पंचायतों की मतदाता सूची पुनरीक्षण हेतु प्राधिकृत कर्मचारियों का प्रशिक्षण संपन्न

नर्मदापुरम (निप्र)। नपद पंचायत नर्मदापुरम के सभागार में अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) जय सोलंकी के मार्गदर्शन में ग्राम पंचायतों की मतदाता सूची वर्ष 2026 के पुनरीक्षण कार्य हेतु प्राधिकृत कर्मचारियों का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मतदाता सूची पुनरीक्षण की प्रक्रिया एवं संबंधित प्रावधानों की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि ग्राम पंचायतों की मतदाता सूची का पुनरीक्षण कार्य प्रारंभ किया जा रहा है। इसके अंतर्गत प्राधिकृत कर्मचारी 15 मई 2026 से 25 मई 2026 तक संबंधित ग्राम पंचायतों में उपस्थित रहकर मतदाताओं से दावे एवं आपत्तियां प्राप्त करेंगे। प्राप्त दावे एवं आपत्तियों के निराकरण उपरांत 25 मई 2026 तक संकलित जानकारी के आधार पर संशोधित मतदाता सूची का प्रकाशन किया जाएगा। वहीं दावे एवं आपत्तियों का अंतिम निराकरण 30 मई 2026 तक किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत रंजीत ताराम, तहसीलदार रूचि गोयल तथा बी.पी.ओ. रेवा शंकर लोवंशी उपस्थित रहे। प्रशिक्षण प्रशिक्षक संजय पवार एवं एस एन चौरे द्वारा प्रदान किया गया, जिसमें सभी प्राधिकृत कर्मचारियों को मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य के संबंध में विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया।

कोई भी पात्र महिला राशन से वंचित न रहे, अभियान चलाकर ई-केवाईसी पूर्ण कराएं : कलेक्टर

आठनेर ब्लॉक में योजनाओं के क्रियान्वयन की कलेक्टर डॉ सोनवणे ने की समीक्षा

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर बैतूल डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने निर्देश दिए हैं कि शादी के बाद अन्य स्थान से आई ऐसी महिलाओं, जिनका ई-केवाईसी एवं समग्र आईडी अपडेट नहीं होने के कारण राशन, एएनसी पंजीयन एवं अन्य शासकीय योजनाओं का लाभ प्रभावित हो रहा है, उनका प्राथमिकता से ई-केवाईसी कराया जाए। उन्होंने सभी जनपद सीईओ को सख्त निर्देशित किया कि विशेष कैंप लगाकर पात्र महिलाओं की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करें, ताकि कोई भी महिला राशन एवं अन्य योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे। कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने शुक्रवार को जनपद आठनेर के शासकीय महाविद्यालय बरखेड़ में आयोजित ब्लॉक स्तरीय बैठक में आठनेर ब्लॉक के विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं विकास कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने कहा कि आठनेर ब्लॉक में स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास, शिक्षा एवं पंचायत विभाग की योजनाओं में उत्कृष्ट कार्य दिखाई देना चाहिए। बैठक में उन्होंने ग्राम जावरा एवं दनोरा में पेयजल समस्या के त्वरित निराकरण के लिए लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग एवं जनपद पंचायत

को निर्देशित किया। उन्होंने पीएम आवास योजना के अंतर्गत स्वीकृत आवासों की सूची पंचायतों में प्रदर्शित कराने के निर्देश भी दिए।

कलेक्टर ने जल संसाधन विभाग को निर्देशित किया कि सिंचाई परियोजनाओं से कोई भी गांव वंचित न रहे। उन्होंने पचधार नहर जलाशय से वंचित ग्रामों की समस्या का समाधान कराने, ग्राम मोरुधना एवं ठेसका में नवीन ट्यूबवेल एवं पाइपलाइन कार्य पांचवें वित्त मद से कराने तथा ग्राम मोरुढाना आश्रम शाला की जर्जर छत के पुनर्निर्माण के निर्देश दिए। इसी प्रकार ग्राम रीमाखुर्द एवं पलासपानी के जर्जर स्कूल भवनों की समस्या का प्राथमिकता से निराकरण करने को कहा। ग्राम बाकुड में मोक्षधाम एवं आंगनवाड़ी भवन निर्माण की समस्या के समाधान के निर्देश भी दिए गए। उन्होंने ग्राम ढाणी निवासी प्रकाश सहारे की डैम में डूबने से मृत्यु के प्रकरण में तहसीलदार को त्वरित अनुग्रह सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। वहीं ग्राम धनौरी की पेयजल समस्या के समाधान के लिए जल संसाधन विभाग को आवश्यक कार्यवाही करने को कहा। स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत नियमित साफ-सफाई अभियान चलाने के निर्देश भी दिए गए। बैठक में कलेक्टर ने जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि सभी बोरवेल, ट्यूबवेल एवं अन्य जल स्त्रोतों की सूची तैयार कर 15 जून तक रिचार्ज वाटर स्ट्रक्चर बनाए जाएं। उन्होंने कहा कि सूख चुके जल स्त्रोतों को अपस्ट्रीम जल संरक्षण कार्यों के माध्यम से पुनर्जीवित किया जाए तथा जल संरक्षण कार्यों का प्रभाव धरातल पर दिखाई देना चाहिए। उन्होंने सांसद निधि, विधायक निधि एवं अन्य मदों से संचालित कार्यों की समीक्षा कर अप्रारंभ कार्यों को शीघ्र प्रारंभ कराने के निर्देश दिए। उद्यानिकी फसलों की संभावनाओं को देखते हुए इच्छुक महिला समूहों को इससे जोड़ने के निर्देश भी दिए। श्रम योगी मानधन योजना में अपेक्षित प्रगति नहीं पाए जाने पर उन्होंने ब्लॉक पंचायत अधिकारी का वेतन आहरण रोकने के निर्देश दिए। वहीं 95 प्रतिशत तक ई-केवाईसी पूर्ण नहीं होने तक जनपद सीईओ के वेतन आहरण पर भी रोक लगाने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने फॉर्मर रजिस्ट्री, पीएम आवास योजना एवं अन्य विकास कार्यों की समीक्षा कर बारिश पूर्व अधिकतम कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। महिला एवं बाल विकास विभाग की होम विजिट एवं टेक होम राशन वितरण की समीक्षा करते हुए सीडीपीओ को प्रगति लाने के सख्त निर्देश दिए।

जिला स्तरीय रोजगार एवं स्वरोजगार मेला सम्पन्न

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर सोमेश मिश्रा के निर्देशानुसार जवाहर लाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय में जिला स्तरीय रोजगार एवं स्वरोजगार मेले का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। मेले में 20 से अधिक प्रतिष्ठित कंपनियों एवं विभिन्न शासकीय विभागों ने भागीदारी करते हुए युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराए। कार्यक्रम के दौरान अपर कलेक्टर बृजेन्द्र रावत एवं एसडीएम प्रियंका भलावी ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश शासन एवं जिला प्रशासन द्वारा रोजगार और स्वरोजगार के क्षेत्र में युवाओं को बेहतर अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। उन्होंने युवाओं से शासन की विभिन्न योजनाओं एवं रोजगार मेलों का अधिकाधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। मेले में तहसीलदार रामकिशोर झरबड़े, जिला रोजगार अधिकारी एस.के. धुर्वे, प्राचार्य डॉ. एन.के. नीखरा, नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल एवं उपाध्यक्ष आकाश रघुवंशी द्वारा विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को ऋण प्रमाण पत्र वितरित किए गए। साथ ही प्रधानमंत्री स्वनिधी योजना के अंतर्गत चयनित हितग्राहियों को फल व्यवसाय एवं फुल्की-चाट दुकान संचालन हेतु बैंकों के माध्यम से ऋण स्वीकृत किए गए। इसके अतिरिक्त मछुआ कल्याण विभाग द्वारा तीन हितग्राहियों को लगभग 30 लाख रुपये के ऋण स्वीकृति पत्र भी प्रदान किए गए।

आरोह 2026: खेल के मैदान से दिया साइबर सुरक्षा और नशामुक्ति का संदेश

खिलाड़ियों को मिले सुरक्षा के टिप्स

बैतूल (निप्र)। स्थानीय मेज़र ध्यानचंद हॉकी स्टेडियम में चल रहे 'आरोह 2026 ' ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर के साप्ताहिक गतिविधियों के अंतर्गत एक 'साइबर जागरूकता एवं नशामुक्ति कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवा खिलाड़ियों, खेल प्रशिक्षकों और उनके अभिभावकों को डिजिटल दुनिया के खतरों से आगाह करना और उन्हें सामाजिक बुराइयों से दूर रखना था। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में पुलिस विभाग की साइबर सेल के प्रभारी एवं उपनिरीक्षक श्री नवीन सोनकर उपस्थित रहे। उन्होंने वहां मौजूद सभी खिलाड़ियों, कोच, अभिभावकों और खेल स्टाफ को साइबर सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से विशेष जानकारी दी।

साइबर फ्रॉड से बचने के सिखाए गुर

उपनिरीक्षक श्री नवीन सोनकर ने अपने संबोधन में वर्तमान समय में बढ़ रहे ऑनलाइन फ्रॉड, सोशल मीडिया हैकिंग, और वित्तीय धोखाधड़ी के तरीकों को रेखांकित किया। उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय को साइबर अपराधियों के जाल में फंसने से बचने के लिए कई व्यावहारिक उपाय बताए। उन्होंने कहा कि किसी भी अनजान व्यक्ति के साथ अपना ओटीपी, पिन या बैंक डिटेल साझा न करें। सोशल मीडिया पर अनजान लोगों की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार करने से बचें।लॉटरी, मुफ्त उपहार या संदिग्ध लिंक्स पर क्लिक करने से बचें। साइबर धोखाधड़ी होने पर तुरंत राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर शिकायत दर्ज कराएं।

नशामुक्ति का लिया संकल्प

साइबर जागरूकता के साथ-साथ कार्यक्रम में युवाओं को नशामुक्ति के प्रति भी जागरूक किया गया। उपस्थित खिलाड़ियों को समझाया गया कि एक मजबूत और स्वस्थ खिलाड़ी बनने के लिए मानसिक और शारीरिक रूप से फिट रहना जरूरी है, जिसके लिए नशे जैसी सामाजिक बुराई से दूरी बनाए रखना अनिवार्य है। कार्यक्रम के अंत में जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी श्रीमती पूजा कुरील द्वारा नशामुक्ति की शपथ दिलाई गयी। इस अवसर पर बड़ी संख्या में युवा खिलाड़ी, उनके माता-पिता और खेल जगत से जुड़े गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री रामनारायण शुक्ला एवं आभार श्री तपेश साहू द्वारा व्यक्त किया गया।

बिजली कंपनी द्वारा शिविर लगाकर किया गया बिजली संबंधी समस्याओं का निराकरण

सीहोर (निप्र)। विद्युत वितरण कंपनी द्वारा उपभोक्ताओं की बिजली संबंधी शिकायतों के समाधान के लिए संपर्क अभियान चलाया जा रहा है। महाप्रबंधक श्रीमती पूनम तुमराम ने बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं के साथ सीधा संवाद कर उन्हें त्वरित सेवाएं उपलब्ध कराना और उनकी शिकायतों का त्वरित निराकरण करना है। विद्युत वितरण केन्द्रवार बनाए गये कलस्टरों पर शिविर लगाए जा रहे हैं। शिविरों में बिजली उपभोक्ताओं की बिल, मीटर, सर्विस केबल, कनेक्शन एवं तकनीकी सेवाओं संबंधी शिकायतों का निराकरण किया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत 15 मई को वितरण केन्द्र खाचरोद अंतर्गत ग्राम हर्राजखेड़ी में शिविर लगाया गया और नागरिकों की बिजली संबंधी समस्याओं का निराकरण किया गया। अभियान के अंतर्गत 16 मई को वितरण केन्द्र बागेर अंतर्गत ग्राम समरदा, वितरण केन्द्र कोठरी अंतर्गत ग्राम निपानिया में शिविर लगाया जाएगा। 18 मई को वितरण केन्द्र अमलाहा अंतर्गत ग्राम कालियाखेड़ी, वितरण केन्द्र बिजोरी अंतर्गत ग्राम जानपुरबावड़िया, वितरण केन्द्र बिलकिसगंज अंतर्गत ग्राम वीरपुर, वितरण केन्द्र इछावर अंतर्गत ग्राम सेवनिया, वितरण केन्द्र खजूरीकला अंतर्गत ग्राम सिराड़ी, वितरण केन्द्र अहमदपुर अंतर्गत ग्राम अहमदपुर, वितरण केन्द्र दिवड़िया अंतर्गत ग्राम मूण्डला, वितरण केन्द्र दोराहा अंतर्गत ग्राम तकिया, वितरण केन्द्र नापलाखेड़ी अंतर्गत ग्राम हसनाबाद, वितरण केन्द्र श्यामपुर अंतर्गत ग्राम बर्री, वितरण केन्द्र थूना अंतर्गत ग्राम दुपाड़ियाभील, वितरण केन्द्र भाउखेड़ी अंतर्गत ग्राम प्रतापुरा, वितरण केन्द्र ब्रिजिशनगर अंतर्गत ग्राम ब्रिजिशनगर, वितरण केन्द्र सीहोर शहर जोन-1 अंतर्गत वार्ड नं. 1, वार्ड नं. 2, वार्ड नं. 29, वितरण केन्द्र सीहोर शहर जोन-2 अंतर्गत वार्ड नं. 08, वितरण केन्द्र हकीमाबाद अंतर्गत ग्राम खेमपुर, वितरण केन्द्र जावर अंतर्गत ग्राम बमूलिया, वितरण केन्द्र आष्टा शहर अंतर्गत वार्ड नं. 03. वितरण केन्द्र मैना अंतर्गत ग्राम पटारियागोयल, वितरण केन्द्र मेहतवाड़ा अंतर्गत ग्राम गुराड़ियावर्मा, वितरण केन्द्र सिद्दीकगंज अंतर्गत ग्राम सिद्दीकगंज में शिविर लगाए जायेंगे।

कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों का किया सम्मान

बैतूल (निप्र)।कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे शुक्रवार को आठनेर भ्रमण के दौरान शासकीय महाविद्यालय बरखेड़ पहुंचे। इस दौरान उन्होंने बोर्ड परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आठनेर की कक्षा 10वीं और 12वीं के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने विद्यार्थियों से आत्मीय संवाद करते हुए उनकी रुचियों एवं भविष्य की योजनाओं की जानकारी ली। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहकर निरंतर मेहनत करने और अनुशासन के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आठनेर की कक्षा 10वीं की प्रतिभाशाली छात्रा कु. कृतिका कनाठे 93 प्रतिशत, कु.मेघा मालवीय 89.2 प्रतिशत, दीपचंद धुर्वे 88.2 प्रतिशत तथा कक्षा 12वीं के छात्र इंद्रदेव खाकरे 87.8 प्रतिशत, कु. पूर्विका सोनी 86.2 प्रतिशत, अनीश ठाकरे 85.4 प्रतिशत को सम्मानित किया। इसी प्रकार कलेक्टर ने शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आठनेर की कक्षा 10वीं की छात्रा कु. इशिता साहू 88.4 प्रतिशत तथा कक्षा 12वीं की छात्रा कु. दीपिका उइके 93.8 प्रतिशत, कु. दिशा धोटे 90.2 प्रतिशत, कु दिव्या घोरसे 85.0 प्रतिशत, कु. दिशा लहरपुरे 82.8 प्रतिशत को सम्मानित कर उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

शासकीय एकलव्य महिला आईटीआई में चित्रकला एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

बैतूल (निप्र)। शासकीय एकलव्य महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बैतूल में 15 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओ में विज्ञान, नवाचार एवं तकनीकी शिक्षा के प्रति जागरूकता विकसित करना रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला युवा अधिकारी श्रीमती सुषमा गवली उपस्थित रहीं। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. महेश गुंजेले , श्री चाणक्य राखड़े एवं श्री रामनारायण शुक्ला उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के प्राचार्य श्री अजीश पंद्रे द्वारा की गई। वहीं वरिष्ठ प्रशिक्षण अधिकारी श्री रेवाशंकर पंडाग्रे एवं श्री धनंजय सिंह ठाकुर की विशेष

उपस्थिति रही। इस अवसर पर छात्राओ के लिए चित्रकला एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। चित्रकला प्रतियोगिता में छात्राओ ने 'प्रौद्योगिकी और आधुनिक भारत' विषय पर आकर्षक एवं रचनात्मक चित्र प्रस्तुत किए, वहीं क्विज प्रतियोगिता में छात्राओ ने विज्ञान, तकनीक, डिजिटल इंडिया एवं भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों से जुड़े प्रश्नों के उत्तर देकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि श्रीमती सुषमा गवली ने अपने उद्बोधन में कहा कि तकनीक आज केवल सुविधा का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का सशक्त आधार बन चुकी है। उन्होंने छात्राओ को तकनीकी शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने तथा नवाचार की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि युवाओ की ऊर्जा और तकनीकी कौशल भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। विशिष्ट अतिथि डॉ. महेश गुंजेले ने कहा कि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस भारत की वैज्ञानिक क्षमता, अनुसंधान एवं आत्मविश्वास का प्रतीक है। उन्होंने छात्राओ को विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में निरंतर सीखने, जिज्ञासा बनाए रखने तथा आधुनिक तकनीकों को सकारात्मक दिशा में उपयोग करने का संदेश दिया। प्राचार्य श्री अजीश पंद्रे ने अपने संबोधन में कहा कि तकनीकी शिक्षा वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि कौशल आधारित शिक्षा छात्राओ को रोजगार एवं स्वरोजगार के बेहतर अवसर प्रदान करती है तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा में मजबूत बनाती है। श्री चाणक्य राखड़े ने छात्राओ को तकनीकी नवाचार, डिजिटल कौशल एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा और तकनीक का युग है। उन्होंने छात्राओ को निरंतर अभ्यास, नवीन तकनीकों के अध्ययन एवं सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

डीएवीवी के हॉस्टल में छात्रों का भारी हंगामा, अर्धनग्न होकर नाचे

अंतिम वर्ष के छात्रों की हरकत, संपत्ति को नुकसान पहुंचाया

इंदौर। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के अभियांत्रिकी विभाग स्थित रामानुजन बी छात्रावास में रविवार अलसुबह अंतिम वर्ष के छात्रों ने जमकर हंगामा किया। छात्रों ने अर्धनग्न होकर तेज गीतों पर नृत्य किया और छात्रावास में तोड़फोड़ मचाते हुए अर्धनग्न अवस्था में दिखाई दिए। हंगामे के दौरान छात्रों ने छात्रावास की कुर्सियां, टेबल, खिड़कियों के कांच और प्लास्टिक की पानी की टंकी तोड़ दी। परिसर में रखे सामान को इधर-उधर फेंक कर नुकसान पहुंचाया गया। घटना से छात्रावास में अफरा-तफरी का

टेबल, कुर्सियां तथा पानी की टंकी तक तोड़ डाली। घटना का वीडियो प्रसारित होने के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन हरकत में आ गया है। बताया जा रहा है कि घटना सुबह करीब चार बजे के बाद की है। वीडियो में कुछ छात्र छात्रावास की पहली मंजिल से नीचे खड़े छात्रों पर पानी फेंकते दिखाई दे रहे हैं, जबकि नीचे मौजूद छात्र शोर-शराबे के बीच नृत्य कर रहे हैं। कई छात्र माहौल बन गया। वीडियो सामने आने के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन ने मामले को गंभीरता से लिया है। कुलगुरु प्रो राकेश सिंघई ने कहा कि छात्रों की पहचान की जा रही है। दोषी छात्रों पर आर्थिक दंड लगाने के साथ नियमानुसार कड़ी कार्रवाई की जाएगी। वहीं विभागाध्यक्ष डॉ. प्रतोष बंसल ने भी घटना की जानकारी प्रशासन को सौंप दी है।

प्रदेश के 15 शहरों में पारा 43 डिग्री पार

खंडवा सबसे गर्म, रतलाम में तेज धूप से मोबाइल बंद हो गया; भोपाल में बाजार सूने

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में भीषण गर्मी पड़ रही है। इंदौर और उज्जैन संभाग में सबसे ज्यादा गर्मी है। शनिवार को नौगांव और खंडवा में पारा 44 डिग्री के पार रहा। वहीं, 15 शहरों में तापमान 43 डिग्री या इससे अधिक दर्ज किया गया।

रतलाम में इतनी तेज धूप थी कि मोबाइल ही बंद हो गया। वहीं, भोपाल के बाजार सूने रहे। मौसम केंद्र भोपाल के अनुसार, रविवार को रतलाम, खरगोन और खंडवा में तीव्र लू का अलर्ट है। यहां पारा 44 डिग्री के पार पहुंच सकता है।

वहीं, इंदौर, उज्जैन, झाबुआ, आलीराजपुर, बड़वानी, धार, बुरहानपुर, आगर-मालवा, राजगढ़, गुना, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, सागर, दमोह, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, मैहर, मऊगंज, सीधी और मऊगंज में लू चलेगी।

भोपाल-जबलपुर में तेज गर्मी पड़ेगी- रविवार को भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर, भिंड, मुरैना, दतिया, शिवपुरी, श्योपुर, नीमच, मंदसौर, शाजापुर, देवास, सीहोर, नर्मदापुरम, बैतूल, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा,

सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी, अनूपपुर, शहडोल, उमरिया और कटनी में भी तेज गर्मी का असर बना रहेगा।

चेतावनी- दोपहर 12 से 3 बजे तक घरों से बाहर न निकलें- मौसम वैज्ञानिक एचएस पांडे ने कहा कि दोपहर 12 से 3 बजे तक ज्यादा असर रहेगा। ऐसे में लोग जरूरी होने पर ही घरों से बाहर निकले। अगले 3 दिन यानी, 17, 18 और 19 मई को प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में भीषण गर्मी पड़ेगी।

मई के 16 में से 13 दिन गिरा पानी- मध्य प्रदेश में 30 अप्रैल से आंधी-बारिश का दौर शुरू हो गया था। लगातार 11 दिन यानी 10 मई तक प्रदेश में बारिश हुई। कभी वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) का असर देखने को मिला तो कभी चक्रवात और टर्फ का। इस वजह से मई के पहले सप्ताह में बारिश हुई।

11 मई को आंधी-बारिश का दौर थमा। लेकिन 12, 13, 14 और 15 मई को फिर मौसम का मिजाज बदल गया। इस तरह मई के 16 में से 13 दिन आंधी, बारिश या ओलावृष्टि का असर रहा। मौसम विभाग ने रविवार को कहीं भी बारिश का अलर्ट जारी नहीं किया है।

पेट्रोल-डीजल, एलपीजी और दूध के बाद अब सीएनजी भी महंगी

थिंक एजेंसी ने 3 किलो तक बढ़ाए दाम ; भोपाल में 93.75 पहुंची कीमत, ग्वालियर में भी रेट बढ़े

भोपाल (नप्र)। पेट्रोल-डीजल के बाद अब सीएनजी (कंप्रेस्ड नेचुरल गैस) भी महंगी हो गई है। शनिवार रात 3 रुपए प्रतिकिलो तक रेट बढ़े हैं। भोपाल में 1 किलो गैस के रेट अब 93.75 रुपए हो गए हैं। नई कीमतें आज से लागू होंगी। मध्य प्रदेश में 3 गैस एजेंसियां- थिंक, गेल और अवंतिका सीएनजी की सप्लाई करती हैं। भोपाल, सीहोर, राजगढ़, विदिशा समेत आसपास के जिलों में थिंक कंपनी सप्लाई करती है, जबकि इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर संभाग में अवंतिका की सप्लाई है। गेल कंपनी की भी कई जिलों में सप्लाई है। भोपाल समेत आसपास के जिलों में दो महीने में दूसरी बार कीमतें बढ़ी हैं। इससे पहले करीब 2 रुपए बढ़े थे। इस तरह दो महीने में सीएनजी 5 रुपए प्रति किलो तक महंगी हो गई है।

ग्वालियर में भी एक रुपए किलो बढ़े रेट- वहीं ग्वालियर में अवंतिका एजेंसी ने सीएनजी की कीमत में रू. 1 की बढ़ोतरी कर दी है। एक दिन पहले 95 पर किलो थी, जो अब बढकर 96 रुपए किलो हो गई है।

भोपाल के 25 पंपों पर सीएनजी- राजधानी में कुल 152 पेट्रोल पंप है। इनमें से 12 पंप ऐसे हैं। जहां सीएनजी गैस भी मिलती है। वहीं थिंक गैस के मैनिट, नीलबड़, होशंगाबाद रोड, बैरागढ़ रोड समेत कई जगहों पर भी कुल 25 स्टेशन है। यहां पर रेट बढ़े हैं।

देवास पटाखा ब्लास्ट कांड में सबसे बड़ी कार्रवाई

दिल्ली का कथित असली मालिक मुकेश विज नामजद

देवास (नप्र)। मध्य प्रदेश के देवास में हुए टोंककला पटाखा फैक्ट्री विस्फोट मामले में पुलिस प्रशासन ने आखिरकार उस मुख्य चेहरे पर शिकंजा कस दिया है, जो इस पूरे अवैध कारोबार को पर्दे के पीछे से संचालित कर रहा था। पुलिस ने मामले की गहराई से जांच करने के बाद फैक्ट्री के कथित असल मालिक और वेयरहाउस किराए पर लेकर भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री का भंडारण करने वाले दिल्ली निवासी मुकेश विज के खिलाफ गंभीर धाराओं में प्रकरण दर्ज कर लिया है। पुलिस ने मुकेश विज को इस हाईप्रोफाइल मामले में पांचवां आरोपी बनाया है। आरोपी की लोकेशन ट्रेस करने और उसे सलाखों के पीछे भेजने के लिए पुलिस की विशेष टीमें दिल्ली और अन्य संभावित ठिकानों के लिए रवाना कर दी गई हैं।

रासुका के आरोपियों को देवास लाने की तैयारी- इस भीषण पटाखा विस्फोट कांड में पहले ही नामजद किए गए चार आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा चुकी है। रासुका के तहत जिला जेल से सीधे उज्जैन की केंद्रीय जेल भेरूगढ़ भेजे गए मुख्य

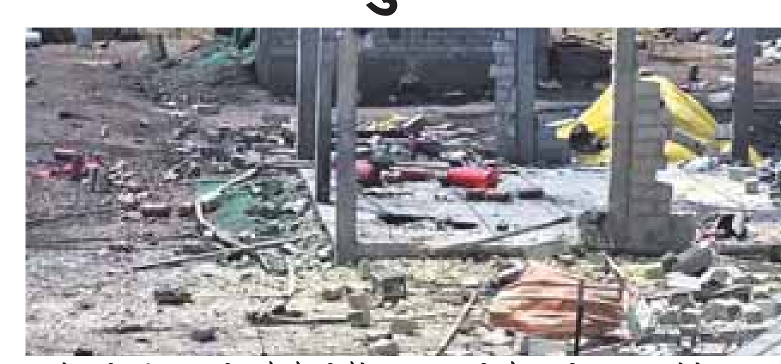

लाइसेंसधारी अनिल मालवीय और फैक्ट्री मैनेजर आज़ास खान की मुश्किलें अब और बढ़ने वाली हैं। पुलिस ने इन दोनों आरोपियों से बारीकी से पूछताछ करने और मुकेश विज के साथ उनके वित्तीय और व्यावसायिक संबंधों को उजागर करने के लिए न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट जारी करवा लिया है।

रिमांड में खुलेंगे अवैध बारूद के कई बड़े राज- पुलिस जल्द ही दोनों मुख्य आरोपियों को उज्जैन की भेरूगढ़ जेल से देवास लेकर आएगी और स्थानीय न्यायालय में पेश कर उनकी पुलिस रिमांड की मांग करेगी। अधिकारियों का मानना है कि रिमांड के दौरान होने वाली पूछताछ में इस बात का खुलासा होगा कि रिहायशी या प्रतिबंधित क्षेत्र में इतना भारी बारूद किसकी शह पर डंप किया गया था। इस मामले में पहले दिन से ही स्थानीय स्तर पर कई रसूखदारों के शामिल होने की आशंका जताई जा रही थी, जिस पर से अब पर्दा उठना लगभग तय माना जा रहा है।

महिला डॉक्टर के खाते से 3.59 लाख उड़ाए

इंदौर। सांवेर थाना क्षेत्र में साइबर ठगी का बड़ा मामला सामने आया है। अज्ञात आरोपी ने एक महिला डॉक्टर के बैंक खातों से 3 लाख 59 हजार रुपए ट्रांसफर कर लिए। पुलिस ने धोखाधड़ी और आईटी एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक फरियादी डॉ. प्रीति जैन निवासी किशनबाग परिसर, सांवेर ने शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने बताया कि 22 अप्रैल से 29 अप्रैल के बीच अज्ञात साइबर ठग ने उनके इंटरनेट बैंकिंग क्रेडेंशियल्स का अवैध उपयोग किया। आरोपी ने स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाते से 2 लाख 25 हजार रुपए और आईसीआईसीआई बैंक खाते से 1 लाख 34 हजार रुपए अन्य खातों में ट्रांसफर कर दिए। डॉ जैन अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त थीं, इसलिए उन्हें इस दौरान किसी तरह की आशंका नहीं हुई। खाते से पैसे कटने के मैसेज आने के बाद उन्हें ठगी का पता चला। पुलिस अब बैंक ट्रांजेक्शन डिटेल और साइबर ट्रेल के आधार पर आरोपी की तलाश में जुटी है।

मेंटेनेंस के नाम पर शहर को झुलसाती गर्मी में बिजली की कटौती

43 डिग्री तापमान में दिन-रात गुल हो रही बत्ती

इंदौर। एक ओर शहर में 43 डिग्री की भीषण गर्मी लोगों को झुलसा रही है, वहीं दूसरी ओर बिजली कंपनी की प्री-मानसून मेंटेनेंस के नाम पर की जा रही लगातार बिजली कटौती ने आमजन की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। हालात यह है कि दिन हो या रात, कभी भी अचानक बत्ती गुल हो रही है। कई क्षेत्रों में रोजाना 3 से 4 घंटे तक बिजली बंद रहने से लोग परेशान और आक्रोशित नजर आ रहे हैं।

शहरवासियों का कहना है कि हर साल करोड़ों रुपए मेंटेनेंस के नाम पर खर्च किए जाते हैं, लेकिन इसके बावजूद बिजली व्यवस्था में सुधार दिखाई नहीं देता। बार-बार पेड़ों की छंटाई के नाम पर बिजली बंद की जाती है, जबकि लोगों का कहना है कि जो पेड़ लगातार तारों में बाधा बनते हैं, उन्हें स्थायी रूप से हटाया जाना चाहिए। आरोप है कि समस्या का स्थायी समाधान करने के बजाय हर बार अस्थायी काम कर खानापूर्ति की जा रही है। भीषण गर्मी में बिजली कटौती के कारण घरों में पंखे, कूलर और पानी की मोटर बंद हो रही हैं। छोटे बच्चे, बुजुर्ग और मरीज सबसे ज्यादा परेशान हो रहे हैं। लोगों का कहना है कि मेंटेनेंस कार्यों के लिए ऐसा समय तय किया जाना चाहिए, जिससे आमजन को कम से कम परेशानी हो। बिजली कंपनी अधिकारियों का कहना है कि बारिश के मौसम में बाधारहित बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए प्री-मानसून सुधार कार्य जरूरी हैं। हालांकि लगातार हो रही कटौती से लोगों का सब्र अब टूटने लगा है। शहरवासियों ने मांग की है कि भीषण गर्मी के दौरान फिलहाल मेंटनेंस के नाम पर होने वाली लंबी बिजली कटौती पर रोक लगाई जाए।

शहर में अवैध शराब कारोबार पर शिकंजा

इंदौर। जिले में अवैध शराब कारोबार के खिलाफ आबकारी विभाग ने शुक्रवार और शनिवार को ताबड़तोड़ कार्रवाई करते हुए शहर के कई इलाकों में दबिश दी। अलग-अलग टीमों द्वारा की गई कार्रवाई में हाथ भट्टी शराब, विदेशी शराब और बीयर जब्त कर कई आरोपियों के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किए गए। विभाग की इस कार्रवाई से अवैध शराब कारोबारियों में हड़कंप मच गया है।

आबकारी विभाग की टीमों ने लोहमंडी, राऊ, पलासिया, देपालपुर और रिंग रोड क्षेत्र में लगातार छापेमार कार्रवाई की। वृत्त बंबई बाजार और आंतरिक-2 की टीम ने लोहमंडी, राधा गोविंद का बगीचा और सिंधी कॉलोनी क्षेत्र में दबिश देकर 3 प्रकरण दर्ज किए। वहीं राऊ के नेहरू नगर क्षेत्र में चेकिंग के दौरान 5 अलग-अलग मामलों में कार्रवाई की गई। टीम ने यहां से 7.2 लीटर देसी मदिरा मसाला और 60 लीटर हाथ भट्टी शराब जब्त की। जब्त सामग्री की अनुमानित कीमत करीब 14 हजार 500 रुपए बताई गई है।

क्रिकेट के ऑनलाइन सट्टे का भंडाफोड़

इंदौर। आईपीएल क्रिकेट मैच पर ऑनलाइन सट्टा चलाने वाले गिरोह का क्राइम ब्रांच ने पर्दाफाश किया है। पुलिस ने राऊ क्षेत्र के रंगवासा स्थित लाभम पार्क के एक मकान पर दबिश देकर दो आरोपियों को रंगे हाथ गिरफ्तार किया। क्राइम ब्रांच को सूचना मिली थी कि इलाके में हाईटेक तरीके से ऑनलाइन सट्टा संचालित किया जा रहा है। मौके पर आरोपी मोबाइल, टैबलेट और लैपटॉप के जरिए सट्टे का कारोबार करते मिले।

पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपी 'जगदंबा बुक समूह' से जुड़े हुए थे। वे 'स्वास्तिक सॉफ्टवेयर' के जरिए लाइव भाव देखकर लोगों से दांव लगाते थे। गिरफ्तार आरोपियों में लोकनायक नगर निवासी 39 वर्षीय रोहित भंडारी और विदुर नगर निवासी 33 वर्षीय अर्जुन गुप्ता शामिल हैं। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से तीन मोबाइल फोन, एक एसर लैपटॉप, सैमसंग टैबलेट, पेनड्राइव, एयरटेल वाई-फाई राउटर और हिसाब-किताब की डायरी जब्त की है।

पैसे का विवाद, युवक पर जानलेवा हमला, 30 हजार देकर वारदात

बिना नंबर की बाइक, नकाब लगाकर हमला, चार गिरफ्तार

इंदौर। शहर के एमजी रोड थाना क्षेत्र में पैसों के लेनदेन के विवाद में एक युवक पर जानलेवा हमला कराने का मामला सामने आया है। पुलिस ने मामले में चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों ने फरियादी को सबक सिखाने के लिए 30 हजार रुपए देकर हमला करवाया था।

अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त रामस्नेही मिश्रा ने बताया कि 13 मई को फरियादी ने थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत में बताया गया कि बाइक सवार दो बदमाशों ने उन पर लोहे की रॉड और चाकू से हमला किया। हमले में उनके सिर पर गंभीर चोट आई थी। घटना के बाद पुलिस ने हत्या के प्रयास का मामला दर्ज कर जांच शुरू की। जांच के दौरान पुलिस को गौरव चक्रवर्ती के बारे में जानकारी मिली। पुलिस ने उसे हिरासत में लेकर पूछताछ की तो पूरे मामले का खुलासा हुआ। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि उसका फरियादी के साथ जीएसटी के निपटारे को लेकर पैसों का लेनदेन हुआ था। फरियादी लगातार रुपए वापस मांग रहा था। इसी कारण आरोपी गौरव ने अपने दोस्त रितेश के जरिए पुष्प वैष्णव और उमेश वैष्णव को फरियादी को डराने और सबक सिखाने के लिए 30 हजार रुपए देने की बात तय की। इसके बाद दोनों आरोपी बिना नंबर की बाइक पर पहुंचे और चेहरे पर नकाब लगाकर वारदात को अंजाम दिया। पुलिस ने मामले में गौरव चक्रवर्ती, रितेश, पुष्प वैष्णव और उमेश वैष्णव को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर आगे की कार्रवाई कर रही है।

कर्मयोग सर्व समस्याओं का हल, कर्मयोग से होगा नए भारत का उदय

भोपाल। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय मुख्यालय राजयोग भवन में 'कर्मयोग' विषय पर विशेष प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशेष रूप से वरिष्ठ राजयोगिनी बीके नीता दीदी जी, शहर के प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ डॉ. बिंद्रा जी, एग्जीक्यूटिव इंजीनियर किशन वर्मा, उद्योगपति स्वर्ण खन्ना जी सहित विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत गणमान्य अतिथि एवं बड़ी संख्या में भाई-बहनों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन एवं भूमिका बीके सरिता बहन द्वारा प्रस्तुत की गई। उन्होंने गीता में वर्णित कर्मयोग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कर्मयोग केवल एक सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन जीने की श्रेष्ठ कला है। उन्होंने स्पष्ट किया कि किस प्रकार व्यवहारिक जीवन में प्रत्येक कार्य को सकारात्मकता, शांति और आत्मिक जागरूकता के साथ करते हुए कर्मयोगी जीवन जिया जा सकता है।

वरिष्ठ राजयोगिनी बीके नीता दीदी जी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि कर्मयोग का वास्तविक अर्थ है – हर कर्म करते हुए परमपिता परमात्मा की स्नेहभरी याद में स्थित रहना। जब मनुष्य अपने प्रत्येक कर्म को ईश्वर स्मृति में रहकर करता है, तब जीवन में सहज सफलता, संतुष्टि एवं आंतरिक शांति का अनुभव होता है।

उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था की सफलता का आधार भी कर्मयोग ही है, क्योंकि यहाँ प्रत्येक कार्य सेवा भाव, समर्पण भाव,

निमित्त भावना एवं निस्वार्थ भावना से किया जाता है। यही आध्यात्मिक शक्ति जीवन को संतुलित, सफल और शक्तिशाली बनाती है।

कार्यक्रम में बीके ममता बहन एवं बीके आरती बहन द्वारा विभिन्न रोल प्ले एवं गतिविधियों के माध्यम से यह समझाया गया कि सुबह उठने से लेकर रात्रि में सोने तक प्रत्येक कार्य करते समय मन को शांत रखते हुए परमात्मा को अपने साथ कैसे अनुभव किया जाए। उपस्थित सभी भाई-बहनों ने इन गतिविधियों के माध्यम से कर्मयोग की सहज एवं व्यवहारिक अनुभूति प्राप्त की।

बीके अर्जुन भाई जी ने अभिनय एवं प्रेरणादायी प्रस्तुति के माध्यम से सभी को कर्मयोग को अपने जीवन में धारण करने के लिए प्रेरित किया।

डॉ. बिंद्रा जी ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान समय में बढ़ते तनाव, चिंता एवं मानसिक अशांति का समाधान कर्मयोग ही है। यदि व्यक्ति कार्य करते हुए परमात्मा को याद करता है तो उसका मन शांत, स्थिर एवं सकारात्मक बना रहता है। उन्होंने इस प्रकार के कार्यक्रमों को अस्पतालों, कार्यालयों एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ाने की शुभकामनाएँ भी दीं।

कार्यक्रम का वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा, उत्साह एवं सकारात्मकता से ओत-प्रोत रहा। अंत में सभी ने कर्मयोग को अपने जीवन में अपनाकर नए भारत के निर्माण में सहयोग देने का संकल्प लिया।

पिपलानी में हथौड़े से फोड़ा लिव-इन पार्टनर महिला का सिर

मरा हुआ समझकर प्रेमी ने गला रेतकर कर ली आत्महत्या, पेट में भी चाकू मारे

भोपाल (नप्र)। पिपलानी थाना क्षेत्र में एक व्यक्ति ने अपनी लिव-इन पार्टनर पर हथौड़े से हमला कर उसका सिर फोड़ दिया। घटना सोनागिरि सी-सेक्टर में रविवार सुबह 11 बजे की है।

इसके बाद महिला को मरा हुआ समझकर अपने गले और पेट पर चाकू से वार कर आत्महत्या कर ली। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों को अस्पताल पहुंचाया। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शुरुआती जांच में घरेलू विवाद की बात सामने आई है।

5 साल पहले हो चुकी है लक्ष्मण की पत्नी की मौत- एडिशनल डीसीपी गौतम सोलंकी के मुताबिक, लक्ष्मण प्रसाद रिछारिया (50) सोनागिरि के सी-सेक्टर में रहता था और निजी वाहन चालक था। उसकी पत्नी की करीब पांच साल पहले मौत हो चुकी है। इसके बाद से उसके साथ मोहल्ले की ही कल्पना भारती लिव-इन में रह

लक्ष्मण प्रसाद रिछारिया, मृतक

रही थी। कल्पना लंबे समय से पति से अलग रह रही है। घरों में साफ-सफाई और खाना बनाने का काम करती है।

पुलिस बोली- कल्पना के चरित्र पर शक करता था- सूचना मिलने के बाद एफएसएल टीम ने मौके पर पहुंचकर साक्ष्य जुटाए और घटना स्थल का निरीक्षण किया। जिस चाकू से लक्ष्मण ने खुद पर हमला किया था, उसे पुलिस ने जब्त कर लिया है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए जीएमसी भिजवाया गया है।

पुलिस का कहना है कि घटना का सटीक कारण फिलहाल स्पष्ट नहीं हो सका है। पूछताछ में सामने आया है कि लक्ष्मण, कल्पना के चरित्र पर शक करता था। इसी बात को लेकर दोनों के बीच अकसर विवाद होता था।

महिला को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया- सिर पर हथौड़ी से वार के बावजूद कल्पना भारती की जान बच गई है। गंभीर हालत में उसे भोपाल के एक निजी अस्पताल ले जाया गया। बाद में हमीदिया अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसका इलाज जारी है।